KIRAN INSTITUTE OF CAREER EXCELLENCE

One Liner Approach

# सामान्य ज्ञान

A Dictionary of Facts

## NCERT के नवीनतम पैटर्न पर आधारित

- इतिहास (भारत एवं विश्व)
- आजादी के बाद का भारत,
- भूगोल, भारत के राज्य
- संविधान एवं राजव्यवस्था,
- अर्थव्यवस्था, सामान्य विज्ञान
- पर्यावरण, कृषि एवं पशुपालन
- प्राथमिक स्वास्थ्य एवं शरीर क्रिया
- कम्प्यूटर ज्ञान,
- कला, संस्कृति
- नैनो टेक्नोलॉजी इत्यादि।

**आजादी से अब तक के राज्यपाल एवं मुख्यमंत्री**

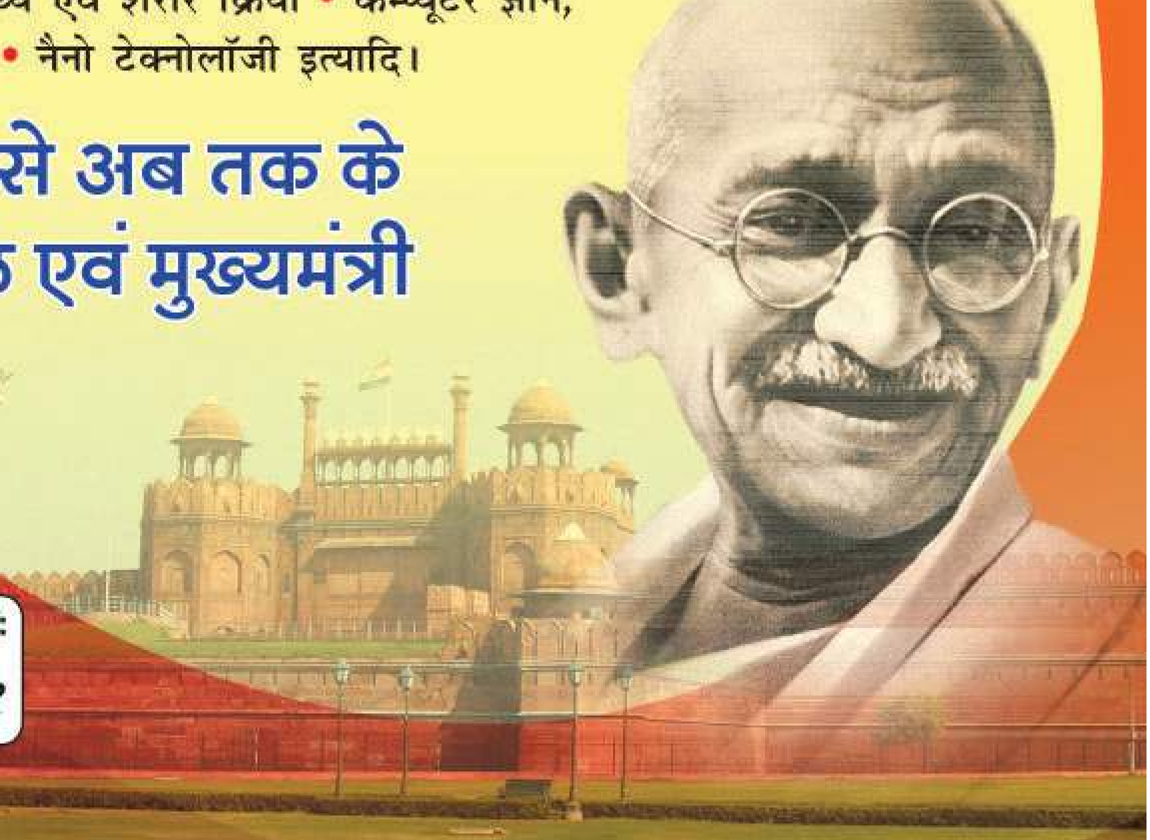

FULFILLMENT BY:
REPRO

KIRAN INSTITUTE OF CAREER EXCELLENCE

One Liner Approach

# सामान्य ज्ञान

A Dictionary of Facts

## BASED ON NCERT LATEST SYLLABUS

**सभी प्रतियोगिता परीक्षाओं के लिए उपयोगी**

SSC CGL (Tier-I), CHSL (10 + 2) एवं मैट्रिक स्तरीय परीक्षाएँ • रेलवे टेक्निकल एवं नन-टेक्निकल परीक्षाएँ • UPSC प्रारंभिक एवं अन्य परीक्षाएँ • राज्य सिविल सेवा एवं अन्य राज्य स्तरीय परीक्षाएँ तथा अन्य प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए अति उपयोगी।

KIRAN INSTITUTE OF CAREER EXCELLENCE PVT. LTD. (KICX), DELHI PRESENTS
RU-67, Pitampura, Delhi-110034, Ph.: 9821874015, 9821643815
www.kicx.in

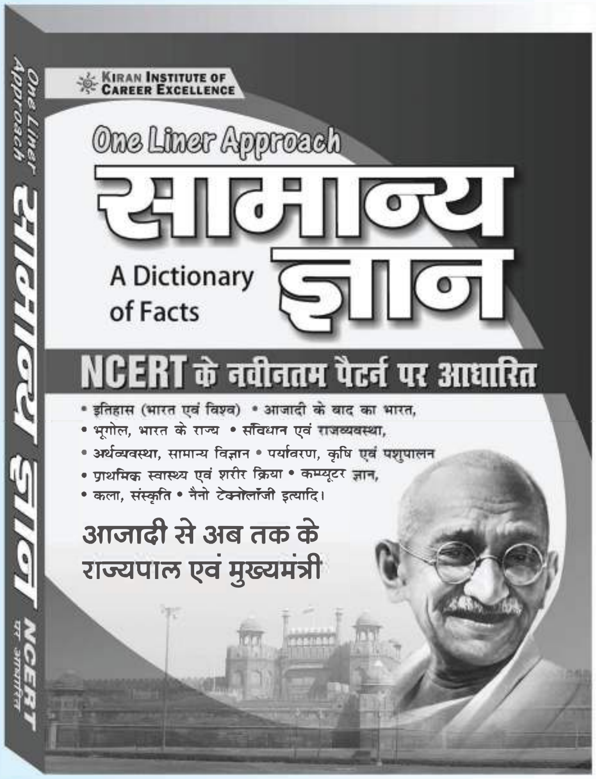


***New Edition***

*The copyright of this book is entirely with the Kiran Institute of Career Excellence Pvt. Ltd. The reproduction of this book or a part of this will be punishable under the Copyright Act.*

*All disputes subject to Delhi jurisdiction.*

*Every possible effort has been made to ensure that the information contained in this book is accurate at the time of going to press, and the publishers and authors cannot accept responsibility for any errors or omissions, however caused.*

*No responsibility for loss or damage occasioned to any person acting, or refraining from action, as a result of the material in this publication can be accepted by the editor, the publisher or any of the authors.*

*Maps used in this book are not to scale*

*All Maps are Notional*

**© COPYRIGHT**
KIRAN INSTITUTE OF CAREER EXCELLENCE PVT. LTD.

**COMPILED BY**
Think Tank of KICX, Pratiyogita Kiran and Kiran Prakashan

**ASSISTANCE**
Ratnesh Kumar Singh, Sanket Sah, Achal Gupta

**DESIGN & LAYOUT**
KICX COMPUTER SECTION, New Delhi.

**KIRAN PRAKASHAN PVT. LTD.**
**RU-67, Opposite Power House**
**Pitampura, Delhi-110034,**
**Ph. : 9821874015, 9821643815**
**E-mail: sanket2000_us@yahoo.com**
**www.kiranprakashan.org**
**www.kiranprakashan.com**

# प्रकाशक की ओर से

*One Liner Approach* **सामान्य ज्ञान** का प्रस्तुत संशोधित एवं परिवर्धित संस्करण आप पाठकों को समर्पित करते हुए मुझे अपार हर्ष की अनुभूति हो रही है। प्रस्तुत पुस्तक में संगृहीत तथ्यों, सूचनाओं एवं आँकड़ों के चयन में किरण प्रकाशन के थिंक टैंक के विज्ञजनों द्वारा प्रतियोगी एवं अकादमीय दोनों ही प्रकार की परीक्षाओं के अभ्यर्थियों की आवश्यकताओं को केन्द्र बिंदु में रखा गया है। प्रस्तुत पुस्तक की इस तरह की प्रस्तुति का मूल विचार विभिन्न प्रतियोगिता परीक्षाओं में अभ्यर्थियों को हो रही सूचनागत परेशानियों की अनुभूति से उभरकर सामने आया है। उनकी परेशानियों एवं आवश्यकताओं के मद्देनजर किरण प्रकाशन के थिंक टैंक ने विभिन्न स्रोतों का दोहन कर सामान्य ज्ञान के विभिन्न खंडों से संबंधित परीक्षोपयोगी सूचनाओं एवं जानकारियों को एक सरल, वैज्ञानिक एवं संक्षिप्त क्रमानुक्रम में संकलित करने का प्रयास किया है।

विद्यार्थियों के लिए 'परीक्षा' एक सामान्य नाम है। अगर आप विद्यार्थी हैं तो आप एक परीक्षार्थी भी हैं। परीक्षा के रूप में एक स्वर्णिम भविष्य का पथ कभी भी आपका दरवाजा खटखटा सकता है। आप यदि पूर्ण रूप से तैयार हैं तो आप इस अवसर को सफलता के रूप में परिवर्तित कर सकते हैं।

प्रस्तुत पुस्तक में तथ्यों तथा सामग्रियों को ग्यारह बड़े शीर्षकों – भारतीय इतिहास, विश्व का इतिहास, भारतीय कला एवं संस्कृति, भारतीय राजव्यवस्था एवं संविधान, भूगोल, सामान्य अर्थशास्त्र एवं भारतीय अर्थव्यवस्था, सामान्य विज्ञान (भौतिक विज्ञान, रसायन विज्ञान, जीव विज्ञान, जन्तु विज्ञान, प्राथमिक स्वास्थ्य एवं शरीर विज्ञान, वनस्पति विज्ञान, कृषि एवं पशुपालन, पारिस्थितिकी, पर्यावरण एवं प्रदूषण), विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी, कम्प्यूटर, पारंपरिक सामान्य ज्ञान एवं खेलकूद के अंतर्गत सुविभाजित किया गया है।

बहरहाल, यह पुस्तक एक प्रयोग के रूप में संयोजित की गई है तथा प्रतियोगी परीक्षाओं में शामिल होने वाले परीक्षार्थी पाठकों को समर्पित की जा रही है। पुस्तक की गुणवत्ता, उपयोगिता एवं दोष के संबंध में निर्णय करने का वास्तविक अधिकार पाठकों को ही है। अतः प्रतियोगी परीक्षाओं के परीक्षार्थी पाठकों से हमारा विनम्र अनुरोध है कि वे इस पुस्तक के संबंध में अपने विचार से यथाशीघ्र अवगत कराते हुए परिवर्द्धन एवं सुधार संबंधी अपने सुझाव हमें प्रेषित करें ताकि इस पुस्तक को और अधिक उपयोगी रूप दिया जा सके।

**आगामी परीक्षाओं में स्वर्णिम सफलताओं की कामना के साथ**

**–सत्यनारायण प्रसाद**

(प्रकाशक)

Email : sanket2000_us@yahoo.com

# अनुक्रमणिका

## भारतीय इतिहास 11-124

भारत का इतिहास 11
भारतीय इतिहास की महत्त्वपूर्ण तिथियाँ 12
प्राचीन भारतीय इतिहास के स्रोत 16
जैन साहित्य 21
लौकिक साहित्य (धर्मेत्तर) 22
प्रमुख संस्कृत साहित्य 22
विदेशी यात्रियों के विवरण 23
प्रागैतिहासिक भारत 24
मध्य पाषाण काल (9000 ई.पू. – 4000 ई.पू.)
(शिकार एवं पशुपालन युग) 24
नव पाषाण काल (7000 – 1000 ई.पू.) 25
ताम्र पाषाण काल 25
सिंधु घाटी या हड़प्पा सभ्यता (2500 ई.पू. – 1750 ई.पू.) 26
वैदिक सभ्यता (1500–600 ई.पू.) 29
उत्तर वैदिक काल 31
महाजनपदों का उदय 33
प्राचीन कालीन धर्म : जैन, बौद्ध, वैष्णव, शैव,
ईसाई एवं इस्लाम धर्म 34
जैन धर्म 34
ईसाई धर्म 39
इस्लाम धर्म 39
पारसी धर्म 39
यहूदी धर्म 39
मगध राज्य का उदय 40
प्राचीनकाल में पारसीक एवं यूनानी आक्रमण 40
चन्द्रगुप्त मौर्य (322 ई.पू. से 298 ई.पू.) 42
बिन्दुसार (298 ई.पू. से 272 ई.पू.) 42
अशोक (269 ई.पू. से 232 ई.पू.) 43
मौर्य प्रशासन 45
शुंग, कण्व एवं सातवाहन राजवंश 45
शक 46
कुषाण वंश 47
कश्मीर के राजवंश 48
संगम युग 48
गुप्त साम्राज्य 50
पुष्यभूति वंश 52
हर्ष की मृत्यु के बाद त्रिपक्षीय संघर्ष : पाल, प्रतिहार एवं राष्ट्रकूट 53
पाल वंश 54
सेन वंश 55
राजपूत वंश 55
गहड़वाल वंश 55
चौहान वंश 55
परमार वंश 55
गुजरात के सोलंकी (चालुक्य) वंश 56
त्रिपुरी के कलचुरी वंश (चेदि वंश) 57
तोमर वंश 57
सिसोदिया वंश 57
दक्षिण भारत के राजवंश 57
वेंगी (आन्ध्र) के पूर्वी चालुक्य 59
कल्याणी के चालुक्य 59
मदुरै के पाण्ड्य 60
देवगिरि के यादव 61
कदम्ब राजवंश 61
गंग वंश 61
वारंगल के काकतीय वंश 61
भारत पर अरबों का आक्रमण 62
मुहम्मद गोरी 63
दिल्ली सल्तनत 63
गुलाम वंश (1206–1290 ई.) 64
खिलजी वंश (1290-1320 ई.) 65
तुगलक वंश (1320-1414 ई.) 66
सैय्यद वंश (1414 ई.-1451 ई.) 67
लोदी वंश (1451 ई.-1526 ई.) 68
दिल्ली सल्तनत का प्रशासन 68
सल्तनतकालीन शिक्षा, साहित्य और कला 69
सल्तनत काल के ऐतिहासिक ग्रंथ एवं उनके लेखक 70
विजयनगर साम्राज्य 70
बहमनी साम्राज्य 71
मध्यकालीन धार्मिक आन्दोलन 72
सूफी आन्दोलन 75
प्रमुख सूफी सिलसिले 75
प्रान्तीय शैली के अन्तर्गत निर्मित महत्त्वपूर्ण भवन 75
मुगल साम्राज्य 76
बाबर (1526-1530 ई.) 76
हुमायूँ (1530 ई.-1556 ई.) 76
शेरशाह सूरी (1540 ई.-1545 ई.) 77
अकबर (1556 ई.-1605 ई.) 77
जहाँगीर (1605-1627 ई.) 78
शाहजहाँ (1628 ई. -1658 ई.) 79
औरंगजेब (1658 ई.–1707 ई.) 80
मुगल शासन व्यवस्था 80
नवीन स्वायत्त राज्य (18वीं शताब्दी) 86
बंगाल के नवाब 86
मराठा साम्राज्य 86
शिवाजी (1627-1680 ई.) 86
प्राचीन एवं मध्यकाल भारत के प्रमुख युद्ध : एक दृष्टि में 88

भारत में यूरोपियनों का आगमन 89
पुर्तगाली 89
डच 89
अंग्रेज 89
फ्रांसीसी 90
1857 का विद्रोह 91
बंगाल के गवर्नर जनरल 97
भारत के गवर्नर जनरल (1833 के चार्टर एक्ट के अधीन) 98
श्रमिक आंदोलन 99
अंग्रेजी शासन के भारत पर आर्थिक परिणाम 100
ब्रिटिश शासन की भू-राजस्व नीतियाँ 100
राष्ट्रीय स्वतंत्रता आंदोलन संबंधी प्रमुख वचन एवं नारे 101
भारत का राष्ट्रीय आंदोलन और स्वतंत्रता प्राप्ति (1885-1947 ई.) 101
भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन का प्रथम चरण (1885-1905 ई.) 101
भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन का द्वितीय चरण (1905-1919 ई.) 102
भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन का तृतीय चरण (1919-1947 ई.) 103
नेहरू युग (भारत की स्वतंत्रता से 1964 ई. तक) 111
प्राचीन भारत में संस्कृत, पाली, प्राकृत एवं अन्य भाषाओं के ग्रन्थ एवं उनके लेखक 122
स्वतंत्रता आंदोलन से संबंधित पुस्तकें एवं उनके लेखक 123
प्रमुख राजवंश, संस्थापक तथा राजधानी 123

## विश्व का इतिहास 125-140

पाषाण काल 125
प्रागैतिहासिक मानव : एक परिचय 125
विश्व की प्रमुख सभ्यतायें 125
विश्व की प्रमुख सभ्यतायें 125
प्राचीन विश्व इतिहास की महत्वपूर्ण तिथियाँ 128
धर्मयुद्ध 129
सामन्तवाद 129
पवित्र रोमन साम्राज्य 129
पुनर्जागरण 129
धर्म सुधार आन्दोलन 130
फ्रांस की राज्यक्रांति 130
पूँजीवाद का विकास 131
अमेरिकी क्रांति 132
रूस की क्रांति 132
प्रथम विश्व युद्ध 133
द्वितीय विश्व युद्ध 133
विश्व इतिहास के प्रमुख युद्ध 133
विश्व इतिहास की महत्त्वपूर्ण तिथियाँ 139

## भारतीय कला एवं संस्कृति 141-150

भारत में संगीत की परम्परा 141
भारत के प्रमुख शास्त्रीय नृत्य 141
भारत के प्रमुख लोक नृत्य : एक दृष्टि में 142
भारत के प्रमुख शास्त्रीय नृत्य एवं नृत्यक 143
चित्रकला 143
आधुनिक चित्रकला की विभिन्न चित्र शैलियों के रूपनाम और सम्बद्ध चित्रकार 145
आधुनिक चित्रकला स्कूल के मिश्रित चित्र एवं उनके चित्रकार 145
विश्व प्रसिद्ध चित्र एवं उनके चित्रकार 146
मूर्तिकला 146
संगीत के प्रमुख वाद्य 147
संगीत के प्रहर 147
प्रमुख भारतीय संगीत शैली के गायक 147
प्रमुख वाद्ययंत्र और वादक 147
भारत के विभिन्न प्रदेशों के परंपरागत लोकगीत 148
प्रमुख लोकगीत एवं संगीतकार 148
भारत में हिन्दुओं के प्रमुख त्योहार 148
प्रमुख स्थापत्य कला शैलियाँ एवं उनके निर्माण काल : एक दृष्टि में 148
प्रमुख लिपियाँ 149
भारतीय प्रदेश एवं आदिम जातियाँ 149
रेडियो, दूरदर्शन एवं फिल्म 150
भारत में विश्व धरोहर स्मारक 150

## भारतीय राजव्यवस्था एवं संविधान 151-190

भारतीय संविधान का विकास 151
भारतीय संविधान की रचना 153
राज्यों के पुनर्गठन के अध्ययन के लिए गठित आयोग 154
वर्ष 1950 के बाद जोड़े गए नए 154
राज्य एवं परिवर्तित नाम 154
जम्मू-कश्मीर 154
भारतीय संविधान : विशेषताएँ 155
संघ और राज्य क्षेत्र 156
भारतीय नागरिकता 156

मौलिक अधिकार (भाग-3-अनुच्छेद 12-35) 156
मौलिक कर्तव्य 158
राज्य के नीति निदेशक तत्व 158
संघीय कार्यपालिका 159
राष्ट्रपति एवं उपराष्ट्रपति 159
भारत का महान्यायवादी (अटार्नी जनरल) 161
नियंत्रक महालेखा परीक्षक (CAG) 161
निर्वाचन एवं भारत का निर्वाचन आयोग 162
परिसीमन आयोग 163
लोक सेवा आयोग 164
अन्तर्राज्यीय विकास परिषद् 164
अल्पसंख्यक आयोग 164
राजभाषा आयोग 164
उपराष्ट्रपति 164
संघीय व्यवस्थापिका (प्रधानमंत्री एवं मंत्रिपरिषद्) 165
संसद 165
संचित निधि [अनुच्छेद 266 (1)] 166
आकस्मिक निधि (अनुच्छेद 267) 166
केन्द्र-राज्य संबंध 167
भारतीय न्यायपालिका 167
सर्वोच्च न्यायालय 167
उच्च न्यायालय 168
अधीनस्थ न्यायालय 168
राज्य की कार्यपालिका 168
राज्यपाल 168
राज्य विधान मण्डल 169
मुख्यमंत्री 169
स्थानीय प्रशासन 169
पंचायती राज्य 169
शहरी प्रशासन 170
महत्त्वपूर्ण संविधान संशोधन अधिनियम 170
भारत का संविधान : एक नजर में 174
संविधान की अनुसूचियाँ 184
देश में वरीयता अनुक्रम (प्रोटोकॉल) 185
भारत के मुख्य पदाधिकारी 185
सूचना का अधिकार 187
भारतीय राजव्यवस्था के प्रमुख राष्ट्रीय आयोग 187
महत्त्वपूर्ण शब्दावली 188
स्वतंत्र भारत का प्रथम मंत्रिमंडल 190

## भूगोल 191-329

ब्रह्मांड 191
आकाशीय पिंड 192
हमारा सौरमंडल 193
तारे 194
ग्रह 195
बौने ग्रह 197
पृथ्वी 197
पृथ्वी के प्रमुख परिमंडल 200
पृथ्वी की आंतरिक संरचना 201
ज्वालामुखी 203
पर्वत 205
पठार 207
मैदान 208
झील 209
विश्व की मिट्टियाँ 210
नदी द्वारा उत्पन्न स्थलाकृतियाँ 210
हिमनदी द्वारा उत्पन्न स्थलाकृतियाँ 211
वायु द्वारा उत्पन्न स्थलाकृतियाँ 211
भौम जल द्वारा उत्पन्न स्थलाकृतियाँ 211
तटीय स्थलाकृतियाँ 211
वायुमंडल 212
सूर्यातप 213
चक्रवात 217
प्रतिचक्रवात 217
जलवायु 218
जलमंडल 219
महासागर 220
महासागरीय तापमान 221
महासागरीय लवणता 221
महासागरीय धाराएँ 221
प्रशांत महासागर की धाराएँ 222
अटलांटिक महासागर की धाराएँ 222
हिन्द महासागर की धाराएँ 222
ज्वारभाटा 222
प्रवाल भित्तियां 223
महासागरीय एवं महाद्वीपीय खनिज संसाधन 224
जीवमंडल 224
विश्व के वन 224
महाद्वीप 225
एशिया महाद्वीप : तथ्य एक दृष्टि में 226
अफ्रीका महाद्वीप : तथ्य एक दृष्टि में 227
उत्तरी अमेरिका महाद्वीप : तथ्य एक दृष्टि में 227
दक्षिण अमेरिका : तथ्य एक दृष्टि में 228
यूरोप महाद्वीप : तथ्य एक दृष्टि में 229
ऑस्ट्रेलिया महाद्वीप : तथ्य एक दृष्टि में 229
अंटार्कटिका 230
महत्त्वपूर्ण तथ्य : विश्व 230
विश्व की प्रमुख नहरें 232
नदियों के किनारे स्थित विश्व के महत्त्वपूर्ण नगर 232
विश्व की प्रमुख जलसंधियाँ 233
आर्थिक भूगोल 235
विश्व के प्रमुख खनिज उत्पादक देश 236
अन्तर्राष्ट्रीय सीमा रेखाएँ 237
विश्व के देश : राजधानी, क्षेत्रफल, मुद्रा, भाषाएं एवं संसद 238
विश्व के परिवहन 243
भारत : एक परिचय 244
भारत के प्रमुख भौगोलिक उपनाम 245
भारत का भूगर्भिक इतिहास 246

भारत का भौतिक स्वरूप 247
भारत के उप-विभाग 249
हिमालय का अनुदैर्ध्य विभाजन 250
भारत का उत्तरी मैदान 250
मैदानी भाग का उप विभाजन 250
प्रायद्वीपीय पठार (पर्वतीय भाग) 250
प्रायद्वीपीय पठार (पठारी भाग) 251
तटीय मैदान 251
अपवाह तंत्र 252
सिंधु तथा गंगा नदी अपवाह तंत्र 252
भारत : जलवायु 253
भारत में वन 254
भारत में वनाच्छादन 254
भारत में सघनता आधार पर वन 255
भारत में वनों के प्रकार 256
प्रजातीय विविधता 257
भारत में वनों के प्रकार एवं इनसे प्राप्त उत्पाद 258
मृदा वितरण एवं विशेषताएँ 258
भारत की प्रमुख पर्वत श्रेणियाँ 259
भारत की प्रमुख झीलें 259
भारत की प्रमुख नहरें 260
भारत के प्रमुख जलप्रपात 261
भारत की कृषि 261
भारत में सिंचाई 263
भारत की महत्त्वपूर्ण बहुउद्देशीय नदी घाटी परियोजनाएँ 263
भारत के उद्योग 266
भारत की प्रमुख एल्युमिनियम कंपनी 266
भारत में परिवहन 269
कुछ प्रमुख राष्ट्रीय राजमार्ग 269
भारत के राष्ट्रीय राजमार्गों की सूची 270
रेल परिवहन 276
भारतीय रेलवे के विभिन्न मण्डल 277
भारत के प्रमुख बन्दरगाह 278
प्रमुख भारतीय दर्रे 279
कोयले पर आधारित देश के प्रमुख ताप विद्युत-गृह 280
भारत में तेल शोधनशालाएँ 282
मानव भूगोल 283
भारत की प्रमुख जनजातियाँ 284
भारतीय राज्य तथा राज्य संघों के स्थापना दिवस एवं राजकीय प्रतीक 285
भारत : राष्ट्रीय प्रतीक 285
भारत की जनगणना, 2011 के अंतिम आँकड़े 287
भारत समग्र कुल जनसंख्या 2011 292

## भारत के कुछ राज्यों का विवरण

बिहार 296
छत्तीसगढ़ 303
हरियाणा 305
हिमाचल प्रदेश 306
झारखंड 307
मध्यप्रदेश 312
राजस्थान 316
पंजाब 321
उत्तराखंड 322
उत्तर प्रदेश 325
राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र (दिल्ली) 328

## सामान्य अर्थशास्त्र एवं भारतीय अर्थव्यवस्था 330-382

आर्थिक क्रियाएँ 330
व्यष्टि एवं समष्टि अर्थशास्त्र 331
भारतीय मुद्रा प्रणाली 335
भारतीय पूँजी बाजार 341
विश्व के प्रमुख शेयर मूल्य सूचकांक (शेयर बाजार) 342
मौद्रिक नीति 342
वस्तु एवं सेवा कर विधेयक 346
भारतीय कर व्यवस्था 347
भारतीय अर्थव्यवस्था 350
प्रथम से बारहवीं पंचवर्षीय योजनाओं का प्रमुख तथ्य 352
भारत की पंचवर्षीय योजनाओं की स्थिति 353
वित्त आयोग 354
बजट 354
भारतीय कृषि 358
उद्योग 362
विभिन्न औद्योगिक सुधार 363
औद्योगिक वित्त 364
औद्योगिक प्रदेश और जिले 368
बेरोजगारी 368
प्रमुख निर्धनता निवारण एवं रोजगार कार्यक्रम 369
राज्य योजनाएँ 375
भारतीय बैंकिंग प्रणाली 375
बीमा क्षेत्र 378
देश में अनुसूचित बैंक 379
मानव विकास सूचकांक 380
कुछ महत्त्वपूर्ण तथ्य 380
महत्त्वपूर्ण आर्थिक शब्दावली 380

## सामान्य विज्ञान 383-524

विज्ञान की कुछ प्रमुख शाखाएँ 383
वैज्ञानिक यन्त्र 385
आविष्कार और आविष्कारक 387
प्रमुख वैज्ञानिक अनुसन्धान संस्थान 389

## भौतिक विज्ञान 390

व्युत्पन्न इकाई 391
विमा 392
न्यूटन के गति के नियम 393
गुरुत्व-केन्द्र एवं संतुलन 395
कार्य, ऊर्जा और शक्ति 397
प्रत्यास्थता 398
दाब 398
प्लवन 398
पृष्ठ तनाव 399
श्यानता एवं श्यानता गुणांक 399
सरल आवर्त गति 400
तरंग गति एवं ध्वनि 400
ध्वनि 401
ऊष्मा 403
प्रकाश 406
प्रकाश की उत्पत्ति के मुख्य सिद्धांत 406
लेंस 408
विद्युत धारा 412
विद्युत शक्ति का मापन 414
चुम्बकत्व 414
आधुनिक भौतिकी 415
भौतिकी सम्बन्धी महत्वपूर्ण खोज 417

## रसायन विज्ञान 418

भौतिक रसायन विज्ञान 418
परमाणु संरचना 421
गैस नियम 424
रेडियो सक्रियता 426
तत्वों का वर्गीकरण 427
रासायनिक बंधन 429
रासायनिक अभिक्रियाएँ 431
ऑक्सीकरण एवं अवकरण 432
अम्ल, भस्म तथा लवण 433
विलयन 434

## अकार्बनिक रसायन विज्ञान 436

धातुएं 436
कुछ प्रमुख धातुएँ 438
कुछ मिश्र धातु एवं उनके मातृ तत्व 439
धातुओं से संबंधित विविध तथ्य 439
अधातुएँ 441

## कार्बनिक रसायन विज्ञान 445

कार्बन एवं उसके यौगिक 445
कार्बन के विलक्षण गुण 445
हाइड्रोकार्बन 449
ऐल्काइन 450
पेट्रोलियम 451
साबुन 453
संश्लेषित रेशे 453
महत्त्वपूर्ण तथ्य 454
जीव विज्ञान की प्रमुख शाखाएँ 456
जीव जगत का वर्गीकरण 456
सूक्ष्म जीव 457
जीवाणु 458

## जंतु विज्ञान 459

कोशिका विज्ञान 462
जन्तु ऊतक 463

## प्राथमिक स्वास्थ्य एवं शरीर क्रिया विज्ञान 465

मानव शरीर के विभिन्न तंत्र एवं उनकी कार्य प्रणालियाँ 465
पाचन तंत्र 465
पाचन तंत्र 466
श्वसन तंत्र 467
उत्सर्जी तंत्र 468
तंत्रिका तंत्र 468
रक्त परिसंचरण तंत्र 469
रक्त 470
कंकाल-तंत्र 472
अन्त:स्रावी 473
आनुवंशिकी 475
जैव-विकास 476
पोषक पदार्थ 476
भोज्य पदार्थ, उनकी प्राप्ति के स्रोत एवं उनका महत्व 479
विटामिन, उनके मुख्य स्रोत, कार्य, न्यूनता के लक्षण और रोग 480
मानव शरीर में होने वाले विभिन्न रोगों के कारण एवं निदान 481
विषाणुओं द्वारा होने वाले कुछ प्रमुख रोग 482
कुछ प्रमुख औषधियाँ 482
मनुष्यों में होने वाला आनुवंशिक रोग 483
नोवेल कोरोना वायरस COVID-19 486
महत्त्वपूर्ण शब्दावली 486

## वनस्पति विज्ञान 490

पादपों के विभिन्न अंग, प्रकार्य एवं कार्य 491
वनस्पतियों का वर्गीकरण 492
तना (Stem) के प्रकार एवं विभिन्न कार्य 492
पत्ती 492
पुष्प 493
फल 493
बीज 494
परागण 494
निषेचन 495
पादप औतिकी 496
पौधों के नाम एवं उसका वानस्पतिक नाम 497
पादप शरीर क्रिया विज्ञान 498
पौधों द्वारा जल का अवशोषण 498
वाष्पोत्सर्जन 499
प्रकाश संश्लेषण 499
पौधों में पाए जाने वाले कुछ मुख्य खनिज तत्व, उनके प्रमुख कार्य एवं उनकी कमी के लक्षण 500
पादप हॉर्मोन 501
श्वसन 502
कुछ विशिष्ट पौधे 503

## कृषि एवं पशुपालन 506

कृषि 506
फसलों का वर्गीकरण 506
खेती की विविध प्रणालियाँ 506
पादप पोषण 507
कृषि में रसायन शास्त्र 509
खाद एवं उर्वरक 509
पशुपालन 512
महत्त्वपूर्ण तथ्य 515
दुग्ध-विज्ञान 517
पारिस्थतिकी, पर्यावरण एवं प्रदूषण 518
पर्यावरण 520
प्रदूषण 520
जल प्रदूषण 520
वायु प्रदूषण 521
संकटापन्न वन्य जीव 522
प्रदूषण नियंत्रण के अंतर्राष्ट्रीय प्रयास 523

## विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी 525-534

भारतीय अन्तरिक्ष कार्यक्रम 525
अन्तरिक्ष केन्द्र और इकाइयाँ 525
प्रमुख भारतीय उपग्रह 526
प्रक्षेपणयान प्रौद्योगिकी 527
अंतरिक्ष में प्रथम 527
अंतरिक्ष शब्दावली 528
भारतीय ऊर्जा कार्यक्रम 529
परमाणु अनुसन्धान केन्द्र 530
भारतीय रक्षा एवं प्रतिरक्षा कार्यक्रम 532
अर्द्धसैनिक और नागरिक बल 533
भारत के प्रमुख प्रक्षेपास्त्र 534

## कम्प्यूटर 535-540

कम्प्यूटर क्या है ? 535
कम्प्यूटर के विकास का वर्गीकरण 536
कम्प्यूटर नेटवर्क 537
भारत में विकसित सुपर कम्प्यूटर 538
कम्प्यूटर शब्दावली 538
कम्प्यूटर से संबंधित महत्त्वपूर्ण शब्द संक्षेप 540

## पारंपरिक सामान्य ज्ञान 541-578

पुरस्कार एवं सम्मान : एक परिचय 541
राष्ट्रीय पुरस्कार 541
अन्तर्राष्ट्रीय पुरस्कार 543
भारत रत्न से सम्मानित व्यक्ति 544
जवाहरलाल नेहरू अंतर्राष्ट्रीय सद्‌भावना पुरस्कार से सम्मानित व्यक्ति 544
ज्ञानपीठ पुरस्कार विजेता 545
नोबेल पुरस्कार 547
नोबेल पुरस्कार से सम्मानित भारतीय 547
मैन बुकर पुरस्कार 547
रैमन मैग्सेसे पुरस्कार 548
पुलित्जर पुरस्कार 548
रवीन्द्रनाथ टैगोर अन्तर्राष्ट्रीय शान्ति पुरस्कार 548
मिस यूनिवर्स पुरस्कार 548
मिस वर्ल्ड पुरस्कार 548
ग्रैमी पुरस्कार 549
ऑस्कर पुरस्कार 549

## पुस्तक एवं लेखक 549

संस्कृत साहित्य 549
हिन्दी साहित्य 549
उर्दू साहित्य 549
अंग्रेजी साहित्य 550
महत्त्वपूर्ण एवं चर्चित पुस्तकें एवं उनके भारतीय लेखक 550
महत्त्वपूर्ण एवं चर्चित पुस्तकें एवं उनके विदेशी लेखक 552

## शब्द-संक्षेप 553

राष्ट्रीय 553
अन्तर्राष्ट्रीय 554

## महत्त्वपूर्ण तिथि, सप्ताह, वर्ष एवं दशक 557

अंतर्राष्ट्रीय दशक : संयुक्त राष्ट्रीय महासभा द्वारा स्वीकृत 559
अंतर्राष्ट्रीय वर्ष 560
प्रमुख संगठन एवं संस्थाएँ 560
संयुक्त राष्ट्र संघ 560
संयुक्त राष्ट्र संघ के प्रमुख अंग 561
संयुक्त राष्ट्र के विशिष्ट अभिकरण 562
अन्य प्रमुख अंतर्राष्ट्रीय संगठन 564
विश्व में प्रथम (महिला) 566
विश्व में प्रथम (पुरुष) 566
विश्व में प्रथम (अन्य) 567

विश्व में सर्वाधिक बड़ा, छोटा, लम्बा एवं ऊँचा 567
प्रमुख देशों के राष्ट्रीय स्मारक 568
प्रमुख देशों के राष्ट्रीय प्रतीक 569
कुछ देशों के सरकारी दस्तावेज 569
विश्व की प्रमुख समाचार एजेंसियाँ 569
प्रमुख देशों की गुप्तचर संस्थाएँ 570
वर्तमान में विश्व के प्रमुख समाचार पत्र 570
विभिन्न देशों के प्रमुख राजनीतिक दल 571
प्रचलित चिह्न एवं उनके अर्थ 571
विश्व के सर्वाधिक राष्ट्रों की सीमा को स्पर्श करने वाले देश 571
विश्व के प्रमुख आतंकवादी/ उग्रवादी/अतिवादी संगठन 572
विश्व प्रसिद्ध यात्री एवं उनकी उपलब्धियाँ 572
विश्व के प्रमुख धार्मिक स्थल 572
प्रमुख देशों के राष्ट्रीय पशु 573
विश्व के सात नए आश्चर्य 573
भारत में प्रथम (महिला) 573
भारत में प्रथम (पुरुष) 574
भारत में प्रथम (अन्य) 574
भारत में सर्वाधिक बड़ा, लम्बा एवं ऊँचा 575
महापुरुषों की जयंतियाँ 575
महान कृत्य एवं संबंधित व्यक्ति 576
प्रमुख व्यक्तियों से सम्बद्ध स्थान 577
प्रमुख व्यक्तियों के उपनाम 577
प्रमुख व्यक्तियों का समाधि-स्थल 578
भारत की गुप्तचर संस्थाएँ 578
जनसंचार 578
भारत की प्रमुख समाचार एजेंसियाँ 578


## खेल-कूद 579-572

प्रमुख खेल, खिलाड़ी कप एवं ट्राफियाँ 579
ओलंपिक खेल 588
राष्ट्रमंडल खेल 590
एशियाई खेल 591
सैफ खेल 591
भारत के प्रमुख स्टेडियम 591
विश्व के प्रमुख क्रिकेट स्टेडियम 592


## परिशिष्ट - A 593-611


आजादी से अब तक : 28 राज्य एवं 8 केन्द्रशासित प्रदेशों के राज्यपाल और मुख्यमंत्री 593


## परिशिष्ट - B 612-616


राज्यों की स्थापना वर्ष तथा विधानसभा, लोकसभा एवं राज्यसभा सीटें 612
भारत के राष्ट्रपति एवं उनके कार्यकाल 613
भारत के उपराष्ट्रपति एवं उनके कार्यकाल 613
भारत के प्रधानमंत्री एवं उनके कार्यकाल 614
भारत के उपप्रधानमंत्री एवं उनके कार्यकाल 615
लोकसभा अध्यक्ष एवं उनके कार्यकाल 615
लोकसभा उपाध्यक्ष एवं उनके कार्यकाल 615
रिजर्व बैंक के गवर्नर 616
राज्यों की महिला मुख्यमंत्री 616



- भारत का सामान्य परिचय
- भारतीय राज्य एवं केंद्र शासित प्रदेश: एक दृष्टि में
- भारत के पड़ोसी देश व सीमाएँ
- भारत की भौगोलिक विविधता
- भारतीय चट्टानों का वर्गीकरण
- भारत के प्रमुख पर्वत शिखर
- भारत के प्रमुख पर्वत एवं पहाड़ियाँ
- भारत की प्रमुख घाटियाँ • भारत के प्रमुख पठार
- भारत के प्रमुख मैदान • भारत की प्रमुख खाड़ियाँ
- भारत के दर्रे • भारत के प्रमुख द्वीप एवं द्वीप समूह
- भारत की प्रमुख झीलें एवं जलप्रपात
- भारत की प्रमुख नदियाँ • भारत के प्रमुख बंदरगाह
- भारत के प्रमुख खनिज संसाधन
- भारत के प्रमुख तेल रिफाइनरी
- भारत के प्रमुख औद्योगिक क्षेत्र • भारत: कृषि के प्रारूप
- भारत के प्रमुख कृषि शोध संस्थान
- भारत की प्रमुख मिट्टियाँ • भारत की प्राकृतिक वनस्पति
- भारत के प्रमुख राष्ट्रीय उद्यान • भारत के प्रमुख जैवमंडल

आरक्षित क्षेत्र • भारत की जनगणना - 2011 • भारत की जनजातियाँ • भारत परिवहन व्यवस्था • भारत से संबंधित विविध तथ्य

रंगीन प्रस्तुति

सर्वत्र उपलब्ध

CODE 2707 Rs. 275/-

# 1 भारतीय इतिहास

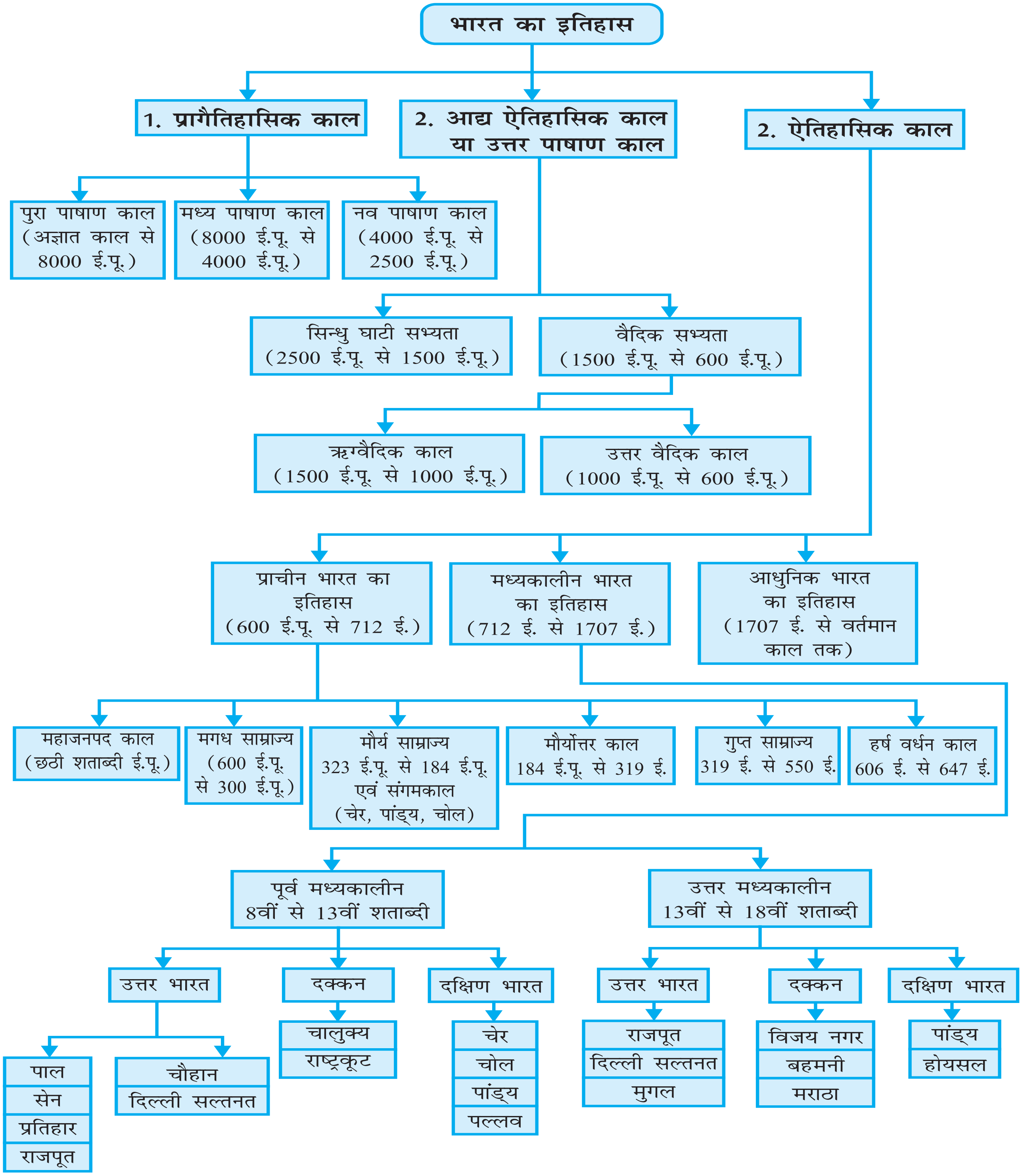
भारत का इतिहास
1. प्रागैतिहासिक काल
2. आद्य ऐतिहासिक काल या उत्तर पाषाण काल
2. ऐतिहासिक काल
पुरा पाषाण काल (अज्ञात काल से 8000 ई.पू.)
मध्य पाषाण काल (8000 ई.पू. से 4000 ई.पू.)
नव पाषाण काल (4000 ई.पू. से 2500 ई.पू.)
सिन्धु घाटी सभ्यता (2500 ई.पू. से 1500 ई.पू.)
वैदिक सभ्यता (1500 ई.पू. से 600 ई.पू.)
ऋग्वैदिक काल (1500 ई.पू. से 1000 ई.पू.)
उत्तर वैदिक काल (1000 ई.पू. से 600 ई.पू.)
प्राचीन भारत का इतिहास (600 ई.पू. से 712 ई.)
मध्यकालीन भारत का इतिहास (712 ई. से 1707 ई.)
आधुनिक भारत का इतिहास (1707 ई. से वर्तमान काल तक)
महाजनपद काल (छठी शताब्दी ई.पू.)
मगध साम्राज्य (600 ई.पू. से 300 ई.पू.)
मौर्य साम्राज्य 323 ई.पू. से 184 ई.पू. एवं संगमकाल (चेर, पांड्य, चोल)
मौर्योत्तर काल 184 ई.पू. से 319 ई.
गुप्त साम्राज्य 319 ई. से 550 ई.
हर्ष वर्धन काल 606 ई. से 647 ई.
पूर्व मध्यकालीन 8वीं से 13वीं शताब्दी
उत्तर मध्यकालीन 13वीं से 18वीं शताब्दी
उत्तर भारत
दक्कन
दक्षिण भारत
पाल
सेन
प्रतिहार
राजपूत
चौहान
दिल्ली सल्तनत
चालुक्य
राष्ट्रकूट
चेर
चोल
पांड्य
पल्लव
उत्तर भारत
दक्कन
दक्षिण भारत
राजपूत
दिल्ली सल्तनत
मुगल
विजय नगर
बहमनी
मराठा
पांड्य
होयसल

## भारतीय इतिहास की महत्त्वपूर्ण तिथियाँ

### ईसा पूर्व

**6000**–मेहरगढ़ और बुर्जहोम में भारत के प्राचीनतम कृषि एवं पशुपालन अवशेष।
**5000-4000**–बागोर तथा आदमगढ़ के निकट भेड़-बकरी पालन के प्रथम अवशेष।
**4000-3000**–कृषक एवं पशुपालक सभ्यताएँ।
**2350-1750**–रेडियो कार्बन तिथि निर्धारण के आधार पर हड़प्पा सभ्यता का समय-विस्तार।
**1500**–ऋग्वैदिक काल, भारत में आर्यों का आगमन।
**1000**–उत्तर वैदिक काल, आर्यों का पूर्वी गंगा मैदान में विस्तार।
**950**–महाभारत युद्ध (NCERT- रामशरण शर्मा के अनुसार 5000 ई.पू.)
**850**–तेइसवें तीर्थंकर पार्श्वनाथ के जन्म का परंपरागत वर्ष।
**600-550**–सोलह महाजनपदों का उदय, उपनिषदों की रचना, आर्यों का दक्षिण विस्तार।
**540**–जैन धर्म के संस्थापक वर्द्धमान महावीर का जन्म।
**540-468**–जैन धर्म के वास्तविक संस्थापक (24वें तीर्थंकर) वर्द्धमान महावीर का जीवन काल।
**563**–बौद्ध धर्म के संस्थापक महात्मा बुद्ध का जन्म।
**563-483**–बौद्ध धर्म के संस्थापक गौतम बुद्ध का जीवन काल।
**516**–ईरान के शासक डेरियस प्रथम का भारत पर प्रथम विदेशी आक्रमण।
**544-412**–हर्यंक वंश बिम्बिसार, अजातशत्रु, उदयिन।
**483**–प्रथम बौद्ध संगीति, राजगृह में।
**412-344**–शिशुनाग वंश की स्थापना एवं विस्तार।
**383**–द्वितीय बौद्ध संगीति, वैशाली में।
**344**–मगध में नन्द वंश की स्थापना।
**326**–सिकन्दर का भारत पर आक्रमण।
**323**–सिकन्दर की बेबीलोन में मृत्यु।
**323**–चन्द्रगुप्त मौर्य द्वारा मौर्य वंश की स्थापना।
**305**–सेल्युकस का भारत पर आक्रमण।
**298**–बिन्दुसार शासक बना।
**272–268**–अशोक तथा उसके भाइयों के बीच उत्तराधिकार युद्ध।
**269**–अशोक शासक बना।
**268–232**–अशोक का शासन काल।
**261**–कलिंग युद्ध
**257**–उपगुप्त द्वारा अशोक बौद्ध धर्म में दीक्षित।
**251**–तृतीय बौद्ध संगीति।
**232**–अशोक की मृत्यु, कुणाल शासक बना।
**200**–यूनानियों का भारत में आगमन।
**185**–अंतिम मौर्य शासक वृहद्रथ की हत्या, शुंग वंश की स्थापना।
**75**–कण्व वंश की स्थापना।
**30**–सिमुक द्वारा सातवाहन वंश की स्थापना।
**58**–विक्रम संवत् का प्रारम्भ (उज्जैन के शासक विक्रमादित्य द्वारा)। शकों पर विजय के उपलक्ष्य में 58 ई॰पू॰ से एक नया संवत् विक्रम संवत् के नाम से प्रारंभ हुआ।
**22**–चोल एवं पाण्ड्यों का रोम से व्यापारिक सम्बन्ध।

### ईसवी वर्ष

**14-15**–रोमन संत सेंट थॉमस का भारत आगमन।
**20–46**–गोंडोफर्निश के समय में भारत में संत थॉमस का आगमन।
**45**–कुषाणों का भारत में प्रवेश।
**65**–चीनी सम्राट का बौद्ध ग्रंथों के लिए भारत में प्रतिनिधि भेजना।
**77**–प्लिनी की पुस्तक नेचुरल हिस्ट्री।
**78**–कनिष्क द्वारा शक संवत् का प्रारम्भ जिसे भारत सरकार द्वारा प्रयोग में लाया जाता है।
**78–100**–कनिष्क का काल।
**86–128**–गौतमीपुत्र शातकर्णी तथा वशिष्ठीपुत्र पुलुमावी के अधीन सातवाहनों का पुनरुत्थान।
**130–150**–पश्चिम भारत का महान शक क्षत्रप रुद्रदामन प्रथम।
**225** –वाकाटक वंश की स्थापना।
**226** –पर्शिया में सासानियन वंश की स्थापना।
**250** –सातवाहन साम्राज्य का विघटन।
**240–280**–गुप्त वंश की स्थापना (श्रीगुप्त शासक)
**280–319**–घटोत्कच सिंहासनारूढ़।
**319–320**–चन्द्रगुप्त प्रथम द्वारा गुप्त वंश की स्थापना।
**335–375**–समुद्रगुप्त का काल जिसे सैन्य विजयों के कारण उसे 'भारत का नेपोलियन' कहा जाता है।
**360**–समुद्रगुप्त के दरबार में श्रीलंका का राजदूत।
**375**–समुद्रगुप्त की मृत्यु, रामगुप्त शासक।
**380–415**–चंद्रगुप्त द्वितीय का शासनकाल, गुप्त राज्य का पश्चिम में विस्तार तथा संस्कृत साहित्य का चरमोत्कर्ष।
**399–414**–फाहियान भारत आया।
**415–455**–कुमार गुप्त प्रथम का शासनकाल, नालंदा विश्वविद्यालय की स्थापना।
**455–467**–स्कन्दगुप्त का काल, हूणों का प्रथम आक्रमण।
**467–540**–गुप्त वंश का अवनति काल।
**500–532**–तोरमाण एवं मिहिरकुल के अधीन उत्तर भारत में हूणों का शासन।
**532**–यशोवर्धन द्वारा मिहिरकुल की पराजय।
**606-647**–हर्ष का शासन काल।
**609** –पुलकेशिन-II शासक बना।
**629-645**–ह्वेनसांग भारत में रहा।
**636** –सिन्ध पर प्रथम अरब-आक्रमण।
**712** –मुहम्मद बिन कासिम का भारत पर प्रथम अरब आक्रमण, राजा दाहिर की पराजय।
**725**–नागभट्ट द्वारा प्रतिहार राज्य की स्थापना।
**753–973**–दक्कन के राष्ट्रकूट।
**760–1142**–पूर्वी भारत के पाल।
**770–810**–महान पाल शासक धर्मपाल का काल, विक्रमशिला विश्वविद्यालय की स्थापना।
**783–1036**–राजस्थान के वत्सराज द्वारा उत्तर भारत में गुर्जर-प्रतिहार वंश की स्थापना तथा उनका शासनकाल।
**788–820**–शंकराचार्य तथा उनका अद्वैतवादी दर्शन।
**835–885**–गुर्जर-प्रतिहार वंश का काल, अरब के व्यापारी सुलेमान का उसके राज्य में आगमन।

836 –मिहिरभोज शासक बना।

850 –विजयालय द्वारा पांड्यों को पराजित कर तंजौर पर अधिकार।

851–अरब-यात्री सुलेमान ने भारत वृत्तान्त लिखा।

860–सुमात्रा (इंडोनेशिया) के राजा बलपुत्र द्वारा नालंदा मे एक बौद्ध विहार की स्थापना।

871–1173–तंजौर के शाही चोल।

883–1026–पंजाब और काबुल के हिन्दूशाही।

907–चोल शासक परांतक प्रथम का राज्याभिषेक।

915–925–महान राष्ट्रकूट इंद्र तृतीय के दरबार में अरबयात्री अल मसूदी का आगमन।

916–1205–जेजाकभुक्ति के चंदेल, चंदेलों द्वारा खजुराहो में मंदिरों का निर्माण।

950–1195–मध्य भारत में त्रिपुरी के कलचुरि।

973–1238–अन्हिलवाड़ा (काठियावाड़) के सोलंकी (गुजराती चालुक्य)।

977–सुबुक्तगीन का भारत पर आक्रमण।

985–1014–राजराज चोल का शासनकाल, तंजौर के प्रसिद्ध शिव अथवा वृहदेश्वर मंदिर का निर्माण।

999–बगदाद के खलीफा द्वारा महमूद गजनवी को स्वतन्त्र शासक के रूप में मान्यता।

1000–महमूद गजनवी का भारत में काबुल पर प्रथम आक्रमण।

1000–1323–वारंगल के काकतीय, बेतराज-प्रथम (संस्थापक), प्रतापरुद्रदेव (अन्तिम शासक)।

1001–वैहिन्द की लड़ाई तथा जयपाल (हिन्दूशाही शासक) की महमूद गजनवी से पराजय।

1025-1026–महमूद गजनवी द्वारा सोमनाथ मंदिर की लूट।

1027–महमूद गजनवी का अन्तिम आक्रमण

1030–महमूद गजनवी की मृत्यु, अलबरुनी का भारत आगमन।

1191–तराइन का प्रथम युद्ध, पृथ्वीराज द्वारा मुहम्मद गोरी पराजित हुआ।

1192–तराइन का द्वितीय युद्ध, मुहम्मद गोरी द्वारा पृथ्वीराज की हार, कुतुबुद्दीन ऐबक भारत का सूबेदार नियुक्त।

1194–चन्दावर का युद्ध, जयचन्द पराजित।

1206–मुहम्मद गोरी की मृत्यु।

1206–कुतुबुद्दीन ऐबक द्वारा दिल्ली सल्तनत की स्थापना, कुतुबमीनार का निर्माण आरम्भ।

1210–कुतुबुद्दीन ऐबक की मृत्यु, आरामशाह को परास्त कर इल्तुतमिश शासक बना।

1221–चंगेज खां का भारत पर आक्रमण।

1236–रजिया सुल्तान गद्दी पर बैठी।

1240–रजिया सुल्तान की हत्या।

1241–भारत पर मंगोलों का प्रथम आक्रमण

1265-66–गयासुद्दीन बलबन गद्दी पर बैठा।

1279–बंगाल में तुगरिल खाँ का विद्रोह।

1286–गयासुद्दीन बलबन की मृत्यु।

1290–खिलजी वंश की स्थापना जलालुद्दीन खिलजी (संस्थापक)।

1296-1316–अलाउद्दीन खिलजी शासक बना।

1309-1313–मलिक काफूर का दक्कन अभियान।

1315–मलिक काफूर दक्कन से वापसी

1320–तुगलक वंश की स्थापना।

1325–मुहम्मद बिन तुगलक शासक बना।

1333-1342–इब्नबतूता की भारत यात्रा।

1336–हरिहर एवं बुक्का द्वारा विजयनगर साम्राज्य की स्थापना।

1347–बहमनशाह द्वारा बहमनी राज्य की स्थापना।

1393–जौनपुर राज्य की स्थापना।

1398–तैमूरलंग का भारत पर आक्रमण, दिल्ली पर अधिकार।

1414–दिल्ली में सैय्यद वंश की स्थापना।

1414-1451–दिल्ली में सैयद वंश का शासन।

1451–बहलोल लोदी द्वारा लोदी वंश की स्थापना।

1455–संत कबीर का जन्म।

1469–सिख धर्म के संस्थापक गुरु नानकदेव का पंजाब के तलवंडी में जन्म।

1472–शेरशाह सूरी का जन्म।

1483–जहीरुद्दीन बाबर का फरगना में जन्म।

1498–पुर्तगाली नाविक वास्कोडिगामा भारत में, कालीकट (केरल) पहुँचा।

1509–कृष्णदेव राय शासक बने।

1510–गोवा पर पुर्तगालियों का कब्जा।

1517–इब्राहिम लोदी का राज्याभिषेक।

1519–भारत में बाबर का प्रवेश।

1520–बाबर का भीटा एवं स्यालकोट पर आक्रमण।

1526–पानीपत का प्रथम युद्ध (बाबर व इब्राहिम लोदी के मध्य), इब्राहिम लोदी की पराजय, मुगल सम्राज्य की स्थापना।

1527–खानवा की लड़ाई, बाबर द्वारा राणा सांगा की हार।

1529–घाघरा के युद्ध में बाबर द्वारा अफगानों की पराजय।

1530–बाबर की मृत्यु, हुमायूँ का सिंहासनारोहण।

1532–गोस्वामी तुलसीदास का जन्म।

1539–चौसा के युद्ध में शेरशाह द्वारा हुमायूँ की पराजय।

1540–शेरशाह का दिल्ली पर अधिकार।

1542–हुमायूँ के पुत्र अकबर का जन्म।

1555–हुमायूँ का भारत पर पुन: अधिकार।

1556–पानीपत के द्वितीय युद्ध में अकबर द्वारा हेमू की पराजय, बैरम खाँ के संरक्षण में अकबर बादशाह बना। पुर्तगालियों द्वारा पहला प्रिंटिंग प्रेस भारत पहुँचा।

1562–अकबर द्वारा दास प्रथा की समाप्ति।

1563–तीर्थ यात्रा कर की समाप्ति।

1564–अकबर द्वारा जजिया कर की समाप्ति।

1565–तालीकोटा या राक्षसी तंगड़ी का युद्ध, विजयनगर साम्राज्य का अंत।

1568–अकबर की चित्तौड़ विजय।

1569–जहाँगीर का जन्म।

1571–अकबर द्वारा फतेहपुर सीकरी का निर्माण।

1572-1573–गुजरात विजय

1574-76–अकबर द्वारा बिहार-बंगाल की विजय।

1576–हल्दीघाटी का युद्ध, अकबर द्वारा महाराणा प्रताप पराजित।

1579–अकबर ने महजरनामा जारी किया।

1582–अकबर द्वारा दीन-ए-इलाही की घोषणा।

1600–ईस्ट इंडिया कम्पनी की स्थापना।

1602–डच व्यापारिक कम्पनी की स्थापना।

1605–अकबर की मृत्यु, जहाँगीर का राज्यारोहण।

1606–जहाँगीर द्वारा गुरु अर्जुन देव को फाँसी।

1610–पुलीकट में डच फैक्टरी स्थापित।

1611–मूसलीपत्तनम में प्रथम अंग्रेज फैक्टरी स्थापित।

1611–नूरजहाँ एवं जहाँगीर का विवाह।

1615–टामस रो भारत आया।

1622–शाहजहाँ का विद्रोह।

1627–जहाँगीर की मृत्यु।
1628–शाहजहाँ मुगल सम्राट बना।
1631-1653–शाहजहाँ द्वारा ताजमहल का निर्माण।
1636–औरंगजेब को दक्कन का सूबेदार बनाया गया।
1639–अंग्रेजों ने मद्रास में सेंट जॉर्ज किले की नींव रखी।
1646–शिवाजी का तोरण पर अधिकार।
1648–शाहजहाँ द्वारा शाहजहाँनाबाद का निर्माण शुरू।
1656–शिवाजी का जाबली पर अधिकार।
1659–शिवाजी द्वारा अफजल खाँ की हत्या, दारा शिकोह को मृत्युदण्ड।
1658–औरंगजेब सिंहासनारूढ़।
1664–शिवाजी द्वारा सूरत की लूट। फ्रांसीसी ईस्ट इण्डिया कम्पनी की स्थापना।
1665–शिवाजी और मुगलों के बीच पुरन्दर की सन्धि।
1666–शाहजहाँ की मृत्यु।
1670–शिवाजी का सूरत पर दूसरा आक्रमण।
1674–शिवाजी का रायगढ़ में राज्याभिषेक, फ्रांसीसियों द्वारा पाण्डिचेरी की स्थापना।
1675–औरंगजेब द्वारा गुरु तेगबहादुर को मृत्युदण्ड।
1679–औरंगजेब ने पुनः जजिया कर लगाया।
1680–शिवाजी की मृत्यु।
1685–अंग्रेज कम्पनी का मुख्यालय सूरत से हटाकर बम्बई स्थानान्तरित।
1689–औरंगजेब द्वारा शंभाजी को मृत्युदण्ड, शाहू बन्दी बनाया गया।
1698–सूतानाटी, कलिकता तथा गोविन्दपुरी की जमींदारी ईस्ट इंडिया कम्पनी को मिली।
1707–औरंगजेब की मृत्यु, शाहू की मुक्ति, बहादुरशाह-प्रथम सम्राट बना।
1708–गुरुगोविन्द सिंह का नांदेड़ में निधन।
1712–बहादुरशाह प्रथम की मृत्यु, जहाँदारशाह शासक बना।
1713–बालाजी विश्वनाथ पेशवा बने।
1715–सिख नेता बन्दाबहादुर को मृत्युदण्ड।
1717–फर्रुखसियर द्वारा ईस्ट इण्डिया कम्पनी को स्वतन्त्र व्यापार का फरमान।
1720–बाजीराव प्रथम पेशवा बने, सैय्यद बन्धुओं का अन्त।
1725–शुजाउद्दीन बंगाल का सुबेदार
1739–नादिरशाह द्वारा दिल्ली पर आक्रमण, कोहिनूर हीरा एवं मयूर सिंहासन उसके कब्जे में।
1740–अलीवर्दी खां बंगाल का नवाब बना।
1742–बंगाल पर मराठों का अभियान, डूप्ले फ्रांसीसी बस्ती पाण्डिचेरी का गवर्नर नियुक्त।
1744-48–प्रथम आंग्ल-फ्रांसीसी कर्नाटक युद्ध।
1747–अहमदशाह अब्दाली का भारत पर आक्रमण।
1750-54–दूसरा आंग्ल-फ्रांसीसी कर्नाटक युद्ध।
1751–अर्काट पर अंग्रेजों का अधिकार (क्लाइव द्वारा)।
1756–अलीवर्दी खां की मृत्यु, सिराजुद्दौला बंगाल की गद्दी पर बैठा, ब्लैक होल की घटना।
1757–63 तीसरा आंग्ल-फ्रांसीसी कर्नाटक युद्ध।
1757–प्लासी की लड़ाई में सिराजुद्दौला अंग्रेजों द्वारा पराजित तथा मीर जाफर बंगाल का नवाब बना।
1758–फ्रांसीसियों का फोर्ट सेंट डेविड पर कब्जा।
1760–मीर कासिम बंगाल का नवाब बना, वान्डीवास के युद्ध में अंग्रेजों द्वारा फ्रांसीसियों की पराजय।
1761–पानीपत का तीसरा युद्ध, अहमदशाह अब्दाली द्वारा मराठों की पराजय।
1763–मीर जाफर पुनः बंगाल का नवाब बना
1764–बक्सर का युद्ध
1765–बंगाल में अंग्रेजों द्वारा द्वैध शासन की शुरुआत।
1765–क्लाइव की दूसरी गवर्नरी (1765-67 ई०), बंगाल, बिहार और उड़ीसा की दीवानी कम्पनी को मिली।
1767-69–प्रथम आंग्ल-मैसूर युद्ध।
1772–वारेन हेस्टिंग्स बंगाल का गवर्नर जनरल बना, कम्पनी द्वारा द्वैध शासन की समाप्ति।
1773–ब्रिटिश संसद द्वारा रेग्यूलेटिंग एक्ट पारित, कम्पनी पर ब्रिटिश संसद का आंशिक नियंत्रण।
1774–रूहेला युद्ध, वारेन हेस्टिंग प्रथम गवर्नर जनरल (1774-85 ई०), कलकत्ता में पहले उच्चतम न्यायालय की स्थापना।
1775-82–प्रथम आंग्ल-मराठा युद्ध।
1777–वीर कुँवर सिंह का जन्म।
1776–पुरन्दर की सन्धि अंग्रेजों एवं मराठा के बीच।
1780-84–द्वितीय आंग्ल-मैसूर युद्ध।
1784–पिट्स का इण्डिया एक्ट पारित, एशियाटिक सोसायटी ऑफ बंगाल की स्थापना।
1786–लॉर्ड कार्नवालिस गवर्नर जनरल बना।
1790-92–तीसरा आंग्ल-मैसूर युद्ध।
1792–रणजीत सिंह गद्दी पर बैठे।
1793–बंगाल में स्थाई बन्दोबस्त लागू।
1797–श्रीरंगपट्टनम में फ्रांसीसियों द्वारा जैकोबिन क्लब की स्थापना।
1798–लॉर्ड वेलेजली बंगाल का गवर्नर जनरल बना।
1799–चौथा आंग्ल-मैसूर युद्ध, टीपू सुल्तान की मृत्यु।
1801–फोर्ट विलियम कॉलेज की स्थापना।
1802–पेशवा के साथ बेसीन की संधि।
1803-1806–द्वितीय आंग्ल-मराठा युद्ध।
1803–सुर्जी अर्जुनगाँव की सन्धि।
1806–वेल्लोर का सैनिक विद्रोह।
1809–कम्पनी और रणजीतसिंह के बीच अमृतसर की सन्धि।
1813–चार्टर अधिनियम।
1814-16–नेपाल के साथ युद्ध तथा सुगौली की सन्धि।
1817–कलकत्ता में 'हिन्दू कॉलेज' की स्थापना।
1817-18–तृतीय आंग्ल-मराठा युद्ध।
1818–भारतीय भाषा (बांग्ला) में प्रथम समाचार पत्र ''समाचार दर्पण'' साप्ताहिक प्रकाशित, अष्टी की लड़ाई, कोरेगांव की सुरक्षा, पेशवा बाजीराव द्वारा आत्मसमर्पण।
1818–पेशवा पद की समाप्ति, बाजीराव द्वितीय को अंग्रेजों के पेंशनर के रूप में बिठूर में भेज दिया गया।
1820-22–सर थॉमस मुनरो मद्रास के गवर्नर।
1821–पूना में संस्कृत कॉलेज की स्थापना।
1823–मिस्टर एडम्स की कार्यवाहक गवर्नर जनरल के रूप में नियुक्ति, लॉर्ड एमहर्स्ट गवर्नर जनरल।
1824-बैरकपुर में सैनिक विद्रोह।
1824-26–प्रथम आंग्ल-बर्मा युद्ध।
1826–यान्डूब की सन्धि।
1828–विलियम बेंटिक बंगाल के गवर्नर जनरल बने।
1828–राजा राममोहन राय द्वारा ब्रह्म समाज की स्थापना।
1829–विलियम बेंटिक द्वारा सती प्रथा को गैरकानूनी घोषित किया गया।
1830–ठगी प्रथा को समाप्त कर दिया गया।

1831–राजा राममोहन राय इंगलैण्ड गये।

1833–भारतीय विधि आयोग गठित, बंगाल का गवर्नर जनरल भारत का गवर्नर जनरल कहलाने लगा, कम्पनी का व्यापारिक अधिकार समाप्त, राजा राममोहन राय की ब्रिस्टल में मृत्यु।

1835–चार्ल्स मेटकॉफ द्वारा समाचार पत्रों पर से प्रतिबन्ध की समाप्ति, अंग्रेजी सरकारी भाषा बनी, कलकत्ता मेडिकल कॉलेज की स्थापना हुई।

1838–कम्पनी, रणजीतसिंह तथा शाहशुजा के बीच त्रिदलीय सन्धि।

1839–रणजीतसिंह की मृत्यु।

1839-42–प्रथम अफगान युद्ध।

1841–कलकत्ता में "देश हितैषिणी सभा" की स्थापना।

1843–सिंध पर अंग्रेजों का अधिकार, दास प्रथा पर प्रतिबन्ध।

1845-46–प्रथम आंग्ल (Anglo)-सिख युद्ध (अंग्रेजी कंपनी तथा सिख राजा के बीच)

1847–रुड़की में प्रथम इंजीनियरिंग कॉलेज स्थापित।

1848–लॉर्ड डलहौजी गवर्नर जनरल बना, गोद लेने की प्रथा पर प्रतिबन्ध।

1848-49–द्वितीय आंग्ल-सिख युद्ध।

1851–कलकत्ता में ''ब्रिटिश इण्डियन एसोसिएशन'' की स्थापना।

1852–द्वितीय आंग्ल-बर्मा युद्ध।

1853–बम्बई से थाणे तक पहली रेलवे लाइन का उद्घाटन, कलकत्ता से आगरा तक पहली टेलीग्राफ लाइन, पहली बार आई.सी.एस. परीक्षा प्रारम्भ।

1853–बंगाल में नील विद्रोह

1855-56–संथाल विद्रोह, कलकत्ता में अंजुमन- ए-इस्लामी की स्थापना।

1856–हिन्दू विधवा पुनर्विवाह अधिनियम पारित, अवध को ब्रिटिश साम्राज्य में मिलाया गया।

1857–कलकत्ता, बम्बई तथा मद्रास विश्वविद्यालय की स्थापना, भारत का प्रथम स्वतंत्रता संग्राम का विद्रोह।

1858–भारत का शासन कम्पनी से ब्रिटिश सरकार ने अपने हाथों में लिया।

1858–1 नवम्बर, 1858 ई. को प्रथम वायसराय लॉर्ड कैनिंग ने इलाहाबाद में एक दरबार का आयोजन किया, जिसमें वायसराय ने महारानी विक्टोरिया द्वारा भारतीय शासन चलाने की विधिवत् घोषणा की तथा विक्टोरिया की ओर से एक घोषणा पत्र पढ़कर सुनाया, जिसे भारतीय स्वतंत्रता का 'मैग्नाकार्टा' कहा जाता है।

1854–बंगाल में नील विद्रोह

1859–कागज का नोट जारी, गोद प्रथा की समाप्ति।

1860–बजट की व्यवस्था शुरू। (7 अप्रैल, 1860 को देश का पहला बजट ब्रिटिश सरकार के वित्त मंत्री जेम्स विल्सन ने पेश किया था)

1861–भारतीय परिषद् अधिनियम पारित।

1861–भारतीय उच्च न्यायालय अधिनियम-1861 के अंतर्गत कलकत्ता, बम्बई, मद्रास में एक-एक उच्च न्यायालय की स्थापना की गयी।

1862–भारतीय दण्ड संहिता लागू। उच्च न्यायालय की स्थापना।

1863–कलकत्ता में मोहम्मडन एसोसिएशन की स्थापना, पटना कॉलेज की स्थापना।

1866–इलाहाबाद उच्च न्यायालय की स्थापना।

1872–प्रथम जनगणना प्रारम्भ।

1872–लॉर्ड मेयो की हत्या।

1874–बिहार में अकाल।

1875–सैय्यद अहमद खाँ द्वारा अलीगढ़ में मोहम्मडन एंग्लो-ओरिएन्टल कॉलेज की स्थापना, प्रिंस ऑफ वेल्स की प्रथम भारत यात्रा। आर्य समाज की स्थापना।

1876–लॉर्ड लिटन का दिल्ली दरबार, महारानी विक्टोरिया भारत की साम्राज्ञी घोषित।

1878–लिटन का वर्नाक्यूलर प्रेस एक्ट पारित।

1878–80–द्वितीय आंग्ल-अफगान युद्ध।

1878–अकाल आयोग की स्थापना।

1881–प्रथम फैक्टरी अधिनियम बना।

1882–वर्नाक्यूलर प्रेस एक्ट निरस्त, स्कूल शिक्षा के लिए हंटर आयोग नियुक्त।

1883–इलबर्ट बिल का विवाद।

1885–भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की बम्बई में स्थापना।

1888–कर्नल बेक द्वारा 'यूनाईटेड इण्डियन पैट्रियॉटिक एसोसिएशन' की स्थापना।

1889–प्रिंस ऑफ वेल्स की दूसरी भारत यात्रा।

1891–दूसरा फैक्टरी अधिनियम पारित।

1892–ब्रिटिश संसद द्वारा भारतीय परिषद् अधिनियम पारित।

1893–एनी बेसेन्ट का भारत आगमन।

1895–बाल गंगाधर तिलक ने शिवाजी उत्सव मनाया।

1897–भारतीय शिक्षा सेवा का गठन, तिलक को 18 माह की कैद।

1899-1905–लॉर्ड कर्जन-वायसराय।

1904–भारतीय विश्वविद्यालय एक्ट पारित, पुरातत्व विभाग का गठन।

1905–बंगाल का विभाजन।

1906–मुस्लिम लीग की स्थापना।

1908–खुदीराम बोस को फाँसी, तिलक पर राजद्रोह केस तथा तिलक को 6 वर्ष का कारावास।

1908–गाँधीजी को सत्याग्रह करने के लिए सबसे पहले जेल हुई।

1909–मॉर्ले मिण्टो सुधार, गाँधीजी ने ''हिन्द स्वराज'' पुस्तक लिखी। भारतीय परिषद् अधिनियम पारित।

1911–बंगाल विभाजन रद्द, राजधानी कलकत्ता से दिल्ली स्थानान्तरित।

1912–दिल्ली राजधानी बनायी गयी। लॉर्ड हार्डिंग पर बम फेंका गया।

1913–सैन फ्रांसिस्को में गदर पार्टी का गठन, रवीन्द्रनाथ टैगोर को साहित्य का नोबेल पुरस्कार मिला।

1914–तिलक माण्डले जेल से रिहा।

1915–गाँधीजी दक्षिण अफ्रीका से भारत लौटे, एनीबेसेण्ट ने मद्रास में होमरूल लीग का गठन।

1916–होमरूल लीग का गठन, क्रांग्रेस-मुस्लिम लीग के बीच लखनऊ समझौता।

1917–मॉण्टेग्यू-चेम्सफोर्ड सुधार, गाँधीजी द्वारा चम्पारण सत्याग्रह प्रारम्भ, एनी बेसेन्ट बन्दी।

1919–जलियांवाला बाग नरसंहार, रौलेट एक्ट पारित, रवीन्द्रनाथ टैगोर द्वारा सर की उपाधि वापस, मॉण्टेग्यू-चेम्सफोर्ड सुधार अधिनियम पारित।

1920–असहयोग तथा खिलाफत आन्दोलन प्रारम्भ, गाँधीजी ने कैसर-ए-हिन्द की उपाधि लौटाई, अखिल भारतीय ट्रेड यूनियन की स्थापना।

1922–चौरी-चौरा काण्ड

1923–स्वराज पार्टी की स्थापना।

1923–मदन मोहन मालवीय द्वारा 'इण्डियन पार्टी' का गठन।

1924–कानपुर षड्यन्त्र केस, गाँधीजी बेलगाँव कांग्रेस अधिवेशन के अध्यक्ष।

1925–अखिल भारतीय दलित वर्ग एसोसिएशन की स्थापना। कम्युनिस्ट पार्टी की स्थापना। (27 सितम्बर, 1925 को नागपुर में RSS की स्थापना हुई थी)

1926–ट्रेड यूनियन एक्ट पारित।

1927–साइमन कमीशन की नियुक्ति।

1927–अखिल भारतीय महिला सम्मेलन की स्थापना।

**1928**–हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिक पार्टी की स्थापना, नेहरू रिपोर्ट, साइमन कमीशन भारत आया, लाला लाजपतराय की मृत्यु।

**1929**–लाहौर कांग्रेस अधिवेशन में नेहरू द्वारा पूर्ण-स्वराज का प्रस्ताव पारित। शारदा एक्ट पारित।

**1930**–सविनय अवज्ञा आन्दोलन प्रारम्भ, 26 जनवरी को स्वाधीनता दिवस के रूप में मनाने का आह्वान। लंदन में प्रथम गोलमेज सम्मेलन।

**1931**–गाँधी-इर्विन पैक्ट, द्वितीय गोलमेज सम्मेलन में गाँधीजी की भागीदारी। भगत सिंह, सुखदेव और राजगुरु को फांसी।

**1932**–साम्प्रदायिक अधिनिर्णय की घोषणा। पूना समझौता तथा देहरादून में राष्ट्रीय सेना अकादमी की स्थापना।

**1933**–प्रस्तावित सुधारों पर श्वेतपत्र जारी, संयुक्त चयन समिति का गठन।

**1934**–कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी की पटना में स्थापना, सविनय अवज्ञा आन्दोलन वापस, बिहार में भूकंप, फैक्टरीज एक्ट लागू, रॉयल इंडियन नेवी की स्थापना।

**1935**–भारत सरकार अधिनियम-1935 पारित। संघीय न्यायालय की स्थापना, प्रान्तीय स्वशासन की शुरुआत।

**1936**–सम्राट जार्ज V की मृत्यु, एडवर्ड VIII का राज्यारोहण।

**1937**–नए चुनाव तथा नवीन प्रान्तीय सरकारें।

**1938**–सुभाष चन्द्रबोस कांग्रेस अध्यक्ष चुने गए।

**1939**–द्वितीय विश्वयुद्ध आरम्भ, सुभाष चन्द्र बोस दोबारा कांग्रेस अध्यक्ष चुने गये तथा बाद में त्यागपत्र दे दिया।

**1940**–जिन्ना द्वारा मुस्लिमों के लिये पृथक देश की माँग, गाँधीजी का व्यक्तिगत सत्याग्रह, विनोबा भावे पहले सत्याग्रही बने।

**1941**–सुभाष चन्द्र बोस कलकत्ता से भागकर जर्मनी पहुँचे।

**1942**–"अंग्रेजों भारत छोड़ो" प्रस्ताव पारित।

**1943**–सुभाष चन्द्र बोस द्वारा स्वतंत्र भारत की सरकार का गठन तथा भारतीय राष्ट्रीय सेना बनायी।

**1944**–असम पर जापानी आक्रमण, आजाद हिन्द फौज मणिपुर के नजदीक पहुँची।

**1945**–आजाद हिन्द फौज पर मुकदमा, लॉर्ड वेवेल की घोषणा।

**1946**–कैबिनेट मिशन भारत आया, अंतरिम सरकार का गठन, संविधान सभा की प्रथम बैठक, 16 अगस्त को मुस्लिम लीग द्वारा 'सीधी कार्यवाही दिवस' मनाया गया, 2 सितंबर को अंतरिम सरकार गठित, नोआखाली एवं टिपरा में 14 अक्टूबर को सांप्रदायिक दंगे, 25 अक्टूबर को बिहार में दंगे, 26 अक्टूबर को मुस्लिम लीग का अंतरिम सरकार में विलय, 9 दिसंबर को संविधान सभा का प्रथम सत्र।

**1947**–ब्रिटिश प्रधानमंत्री क्लीमेंट एटली द्वारा जून 1948 तक भारत छोड़ने का निर्णय, लॉर्ड माउंटबेटन द्वारा 15 अगस्त, 1947 को सत्ता हस्तान्तरित किया जाना, भारत-पाक विभाजन प्रस्ताव पारित, जवाहर लाल नेहरू प्रधानमंत्री बने।

**1948**–महात्मा गाँधी की दिल्ली में हत्या, जिन्ना की मृत्यु, भारतीय सेना द्वारा हैदराबाद की मुक्ति।

**1950**–भारतीय संविधान लागू हुआ, राजेन्द्र प्रसाद राष्ट्रपति चुने गए।

**1951**–प्रथम पंचवर्षीय योजना की शुरुआत।

**1952**–प्रथम आम चुनाव सम्पन्न

**1954**–चीन और भारत में पंचशील समझौता।

**1955**–अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी की आवड़ी (चेन्नई) अधिवेशन में समाजवादी समाज का लक्ष्य स्वीकार।

**1956**–जीवन बीमा का राष्ट्रीयकरण।

**1957**–दूसरे आम चुनाव।

**1958**–माप और तौल की मीट्रिक प्रणाली का प्रारम्भ।

**1959**–भारत में दूरदर्शन की शुरुआत।

**1960**–महाराष्ट्र और गुजरात राज्यों का बनना।

**1961**–गोवा स्वतन्त्र हुआ।

**1962**–भारत पर चीन का आक्रमण।

**1963**–डॉ. राजेन्द्र प्रसाद की मृत्यु।

**1964**–पं. जवाहरलाल नेहरू की मृत्यु।

**1965**–भारत-पाकिस्तान युद्ध।

**1966**–ताशकन्द समझौता, प्रधानमंत्री लालबहादुर शास्त्री की मृत्यु।

- **प्रागैतिहासिक काल**–वह काल, जिसके लिए कोई लिखित सामग्री उपलब्ध नहीं है और जिसमें मानव का जीवन अपेक्षाकृत पूर्णतया सभ्य नहीं था, **'प्रागैतिहासिक काल'** कहलाता है।
  - (i) इस काल का इतिहास पुरातात्त्विक साधनों से ज्ञात होता है।
  - (ii) इस काल को तीन भागों में विभाजित किया गया है–
    - (1) **पुरा पाषाण काल** (अज्ञात काल से 8000 ई. पू.)
    - (2) **मध्य पाषाण काल** (8000 ई. पू. से 4000 ई. पू.)
    - (3) **नव पाषाण काल** (4000 ई. पू. से 2500 ई. पू.)
- **आद्य इतिहास**–इतिहास का ऐसा काल, जिसके लिए लेखन कला के प्रमाण तो हैं, लेकिन या तो वे अपुष्ट हैं या फिर उनकी गूढ़ लिपि को समझना कठिन है, ऐसे काल को **'आद्य इतिहास'** कहते हैं।
  - (i) इस काल के इतिहास लेखन के लिए साहित्यिक एवं पुरातात्त्विक साधनों का प्रयोग किया जाता है।
  - (ii) इस काल के अंतर्गत 2500 ई. पू. से 600 ई. पू. के मध्य का काल आता है।
- **ऐतिहासिक काल**–जिस काल के लिए लिखित सामग्री उपलब्ध है और जिसमें मानव सभ्य बन चुका था, उस काल के अंतर्गत 600 ई. पू. के बाद का काल आता है जिसे **'ऐतिहासिक काल'** कहते हैं।

## प्राचीन भारतीय इतिहास के स्रोत

1. पुरातात्त्विक स्रोत  2. साहित्यिक स्रोत  3. विदेशी यात्रियों के विवरण

### 1. पुरातात्त्विक स्रोत

- प्राचीन भारतीय इतिहास को जानने के लिए पुरातात्विक सामग्रियाँ सर्वाधिक प्रामाणिक हैं।

**पुरातात्त्विक स्रोत**

अभिलेख | मुद्रायें | स्मारक एवं भवन | मूर्तिकला | चित्रकला | अवशेष

### अभिलेख :

अभिलेख पाषाण शिलाओं, स्तम्भों, ताम्रपत्रों, दीवारों, मुद्राओं एवं प्रतिमाओं पर उत्खनित हैं।

- अभिलेखों के अध्ययन को इपीग्राफी कहते हैं।
- सर्वाधिक प्राचीन पठनीय अभिलेख अशोक के हैं, जो प्राकृत भाषा में हैं।
- पूर्व हैदराबाद राज्य में स्थित मास्की एवं गुर्जरा (मध्यप्रदेश) से प्राप्त अभिलेखों में अशोक के नाम का स्पष्ट उल्लेख है, उसे प्राय: देवताओं का प्रिय 'प्रियदर्शी' राजा कहा गया है।

- अशोक के अधिकांश अभिलेख 'ब्राह्मी लिपि' में हैं, जो बायें से दायें लिखी जाती थी।
- पश्चिमोत्तर प्रान्त से प्राप्त उसके अभिलेख 'खरोष्ठी लिपि' में हैं जो दायें से बायें लिखी जाती थी।
- पाकिस्तान एवं अफगानिस्तान से प्राप्त अशोक के शिलालेखों में यूनानी एवं आर्मेइक लिपियों का प्रयोग हुआ है।
- ❖ अशोक के अभिलेखों को पढ़ने में सर्वप्रथम जेम्स प्रिंसेप को 1837 ई. में सफलता मिली।
- सर्वाधिक प्राचीन अभिलेख 2500 ई.पू. के हड़प्पा कालीन हैं जो मुहरों पर भावचित्रात्मक लिपि में अंकित हैं।
- जिनका प्रामाणिक पाठ अभी तक असंभव बना हुआ है।
- प्रथम श्रेणी के अभिलेखों में अधिकारों और जनता के लिए जारी किए गये सामाजिक, आर्थिक एवं प्रशासनिक राज्यादेशों एवं निर्णयों की सूचना रहती है–जैसे अशोक के अभिलेख।
- द्वितीय श्रेणी के वे अनुष्ठानिक अभिलेख हैं जिन्हें बौद्ध, जैन, वैष्णव, शैव आदि सम्प्रदायों के मतानुयायियों ने स्तम्भों, प्रस्तर फलकों मंदिरों एवं प्रतिमाओं पर उत्कीर्ण कराया।
- तृतीय श्रेणी के वे अभिलेख हैं, जिसमें राजाओं की विजय प्रशस्तियों का आख्यान तो है, लेकिन उनके दोषों का उल्लेख नहींहै।
- ❖ गैर-राजकीय अभिलेखों में यवन राजदूत हेलियोडोरस का बेसनगर (विदिशा) से प्राप्त गरुड़ स्तम्भ लेख विशेष रूप से उल्लेखनीय है जिससे द्वितीय शताब्दी ई.पू. के मध्य भारत में भागवत धर्म विकसित होने का प्रमाण मिलता है।
- 'भारतवर्ष' शब्द का सर्वप्रथम उल्लेख हाथीगुम्फा अभिलेख में मिलता है।
- ❖ 'दुर्भिक्ष' शब्द का सर्वप्रथम उल्लेख सौहगौरा अभिलेख में मिलता है।
- एरण (मध्यप्रदेश) से प्राप्त वराह भगवान पर हूणराज तोरमाण का लेख अंकित है।
- **भूमि अनुदान पत्र :** ये प्राय: ताँबे की चादरों पर उत्कीर्ण हैं। इनमें राजाओं और सामन्तों द्वारा भिक्षुओं, ब्राह्मणों, मंदिरों, विहारों, जागीरदारों और अधिकारियों को दिए गए गाँवों, भूमियों और राजस्व सम्बन्धी, दानों का विवरण है।
- जो प्राकृत, संस्कृत, तमिल एवं तेलुगू भाषाओं में लिखे गये हैं।

**महत्वपूर्ण अभिलेख**

| | अभिलेख | शासक एवं अभिलेख की विशेषताएँ |
|---|---|---|
| 1. | हाथी गुम्फा अभिलेख (तिथि रहित अभिलेख) | कलिंग राज खारवेल |
| 2. | जूनागढ़ (गिरनार अभिलेख) | रुद्रदामन (सुदर्शन झील के बारे में जानकारी) |
| 3. | नासिक अभिलेख | (गौतमी बलश्री तथा सातवाहनों की उपलब्धियाँ) |
| 4. | प्रयाग स्तम्भ अभिलेख | समुद्रगुप्त (इनकी दिग्विजयों की जानकारी) |
| 5. | ऐहोल अभिलेख | पुलकेशिन द्वितीय |
| 6. | मन्दसौर अभिलेख | मालवा नरेश यशोवर्मन (रेशम बुनकर की श्रेणियों की जानकारी) |
| 7. | ग्वालियर अभिलेख | प्रतिहार नरेश भोज |
| 8. | भितरी एवं जूनागढ़ अभिलेख | स्कन्दगुप्त (हूणों पर विजय का विवरण) |
| 9. | देवपाड़ा अभिलेख | बंगाल शासक विजयसेन |
| 10. | बांसखेड़ा और मधुबन अभिलेख | हर्षवर्द्धन की उपलब्धियों पर प्रकाश |
| 11. | बालाघाट एवं कार्ले अभिलेख | सातवाहनों की उपलब्धियाँ |
| 12. | अयोध्या अभिलेख | शुंगों की उपलब्धियाँ |
| 13. | भरहुत अभिलेख | सुंगनरेण शब्द खुदे होने से शुंगों द्वारा निर्मित |
| 14. | एरण अभिलेख | भानुगुप्त सती-प्रथा का पहला लिखित साक्ष्य |

- **विदेशी अभिलेख**
  (i) विदेशों से प्राप्त अभिलेखों में एशिया माइनर में बोगजकोई नामक स्थल से लगभग ई.पू. 1400 का संधिपत्र अभिलेख मिला है, जिसमें मित्र, वरुण, इंद्र एवं नासत्य नामक वैदिक देवताओं के नाम उत्कीर्ण हैं।
  (ii) मिस्र के तेलूअल-अमर्ना में मिट्टी की कुछ तख्तियाँ मिली हैं, जिन पर बेबीलोनिया के कुछ शासकों के नाम उत्कीर्ण हैं, जो ईरान व भारत के आर्य शासकों के नामों जैसे हैं।
  (iii) पार्सिपोलिल एवं बेहिस्तून अभिलेखों से ज्ञात होता है कि ईरानी सम्राट दारा प्रथम ने सिंधु नदी घाटी पर अधिकार कर लिया था।

## मुद्रायें :

- 206 ई.पू. से लेकर 300 ई. तक के भारतीय इतिहास का ज्ञान हमें मुख्य रूप से मुद्राओं की सहायता से ही प्राप्त हो पाता है।
- इसके पूर्व के सिक्कों पर लेख नहीं है और उन पर जो चिह्न बने हैं उनका ठीक-ठीक ज्ञान नहीं है।
- ये सिक्के 'आहत सिक्के' (Punch Marked) कहलाते हैं।
- मुद्राओं का उपयोग दान-दक्षिणा, क्रय-विक्रय तथा वेतन-मजदूरी के भुगतान में होता था।
- शासकों की अनुमति से व्यापारिक संघों (श्रेणियों) ने भी अपने सिक्के चलाये थे।
- सर्वाधिक मात्रा में मुद्रायें मौर्योत्तर काल की मिलती हैं, जो सीसा, पोटीन, ताँबा, कांसे, चाँदी तथा सोने से बनी हैं।
- कुषाण शासकों द्वारा जारी स्वर्ण सिक्कों में जहाँ सर्वाधिक शुद्धता थी, वहीं गुप्तों ने सबसे अधिक मात्रा में स्वर्ण सिक्के जारी किये।
- धातु के टुकड़ों पर ठप्पा मारकर बनायी गयी बुद्धकालीन आहत मुद्राओं पर पेड़, मछली, सांड़, हाथी, अर्द्धचंद्र आदि वस्तुओं की आकृति होती थी।
- मुद्राओं से तत्कालीन आर्थिक दशा तथा सम्बन्धित राजाओं की साम्राज्य सीमा का भी ज्ञान हो जाता है।
- कनिष्क के सिक्कों से उसका बौद्ध धर्म का अनुयायी होना प्रमाणित होता है।
- ❖ समुद्रगुप्त के कुछ सिक्कों पर 'यूप' बना है जबकि कुछ पर 'अश्वमेध पराक्रम:' शब्द उत्कीर्ण है, जिसमें उसे 'वीणा' बजाते हुए भी दिखाया गया है।
- इण्डो-यूनानी तथा इण्डो-सीथियन शासकों के इतिहास के प्रमुख स्रोत सिक्के हैं।

- सातवाहन राजा शातकर्णी की एक मुद्रा पर जलपोत उत्कीर्ण होने से उसके द्वारा समुद्र विजय का अनुमान लगाया गया है।
- चंद्रगुप्त द्वितीय की व्याघ्र शैली (चाँदी) की मुद्राओं से उसके द्वारा पश्चिम भारत के शकों पर विजय सूचित होती है।

### स्मारक एवं भवन

- उत्तर भारतीय मंदिरों की कला शैली 'नागर शैली' कहलाती है।
- दक्षिण भारतीय मंदिरों की कला शैली 'द्रविड़ शैली' कहलाती है।
- जबकि दक्षिणापथ के वे मंदिर जिनमें नागर एवं द्रविड़ दोनों शैलियों का प्रयोग हुआ है, 'वेसर शैली' के मंदिर कहलाते हैं।
- ❖ जावा के 'बोरोबुदुर मंदिर' से वहाँ नवीं शताब्दी में महायान बौद्ध धर्म की लोकप्रियता प्रमाणित होती है।

### मूर्तिकला

- कुषाण काल, गुप्त काल और गुप्तोत्तर काल में जो मूर्तियाँ निर्मित की गयीं, उनसे जन-साधारण की धार्मिक आस्थाओं और मूर्तिकला का ज्ञान मिलता है।
- कुषाण कालीन मूर्तिकला में जहाँ विदेशी प्रभाव अधिक है, वहीं गुप्तकालीन मूर्तिकला में स्वभाविकता परिलक्षित होती है जबकि गुप्तोत्तर कला में सांकेतिकता अधिक है।
- भरहुत, बोधगया, साँची और अमरावती की मूर्तिकला में जन-सामान्य के जीवन की यथार्थ झांकी मिलती है।

### चित्रकला

- अजन्ता गुफा में उत्कीर्ण 'माता और शिशु' तथा 'मरणासन्न राजकुमारी' जैसे चित्रों की शाश्वता सर्वकालिक है, जिससे गुप्तकालीन कलात्मक और तत्कालीन जीवन की झलक मिलती है।

### अवशेष

- पाकिस्तान में सोहन नदी घाटी में उत्खनन द्वारा प्राप्त पुरापाषाण युग के पत्थर के खुरदुरे हथियारों/औजारों से अनुमान लगाया गया है कि भारत में 4 लाख से 2 लाख वर्ष ईसा पूर्व मानव रहता था।
- 10 से 6 हजार वर्ष ई.पू. वह कृषि कार्य, पशुपालन, कपड़ा बुनना, मिट्टी के बर्तन बनाना तथा पत्थर के चिकने औजार बनाना सीख गया था।
- गंगा-यमुना के दोआब में पहले काले और लाल मृद्भांड और फिर चित्रित भूरे रंग के मृद्भांड प्राप्त हुए हैं।
- मोहनजोदड़ो में 500 से अधिक मुहरें प्राप्त हुई हैं जो हड़प्पा संस्कृति के निवासियों के धार्मिक विश्वासों की ओर इंगित करती हैं।
- बसाढ़ (प्रारम्भिक वैशाली) से 274 मिट्टी की मुहरें मिली हैं।
- कौशाम्बी में व्यापक स्तर पर किए गये उत्खनन कार्य में उदयन का राजप्रासाद तथा घोषिताराम नामक एक विहार मिला है।
- अतरंजीखेड़ा आदि की खुदाइयों से ज्ञात होता है कि देश में लोहे का प्रयोग ई.पू. 1000 के लगभग आरम्भ हो गया था।
- रोमिला थापर के अनुसार लोहे का उपयोग 800 ई.पू. में आरम्भ हुआ।
- दक्षिण भारत में अरिकमेडु नामक स्थल की खुदाई से रोमन सिक्के, दीप का टुकड़ा तथा बर्तन आदि मिले हैं, जिससे यह पुष्ट हुआ है कि ईसा की आरम्भिक शताब्दियों में रोम तथा दक्षिण भारत के मध्य घनिष्ठ व्यापारिक सम्बन्ध था।

## 2. साहित्यिक स्रोत

- धार्मिक साहित्य
  - ब्राह्मण या वैदिक साहित्य
  - ब्राह्मणेत्तर या अवैदिक साहित्य
- लौकिक साहित्य

### वैदिक साहित्य

- इसके अंतर्गत वेद तथा उससे सम्बन्धित ग्रंथ, पुराण, महाकाव्य, स्मृति आदि हैं।
- भारत के सबसे प्राचीन ग्रंथ 'वेद' का शाब्दिक अर्थ 'ज्ञान' है।
- श्रवण परम्परा में सुरक्षित होने के कारण इसे 'श्रुति' भी कहा जाता है।
- कालान्तर में वेदव्यास ने 'वेदों' को संकलित कर दिया।
- वेद कुल चार हैं–ऋग्वेद, सामवेद, यजुर्वेद तथा अथर्ववेद।

### ऋग्वेद ( 1500-1000 ई.पू. )

- भारत की सर्वाधिक प्राचीन रचना ऋग्वेद में 'ऋक्' का अर्थ 'छन्दों तथा चरणों से युक्त मंत्र' होता है।
- ऋग्वेद मंत्रों का एक संकलन (संहिता) है, जिन्हें यज्ञों के अवसर पर देवताओं की स्तुति के लिए 'होतृ या होता' ऋषियों द्वारा उच्चरित किया जाता था।
- ऋग्वेद की अनेक संहिताओं में से 'शाकल संहिता' ही उपलब्ध है।
- 'संहिता' का अर्थ संग्रह या संकलन है।
- ❖ सम्पूर्ण संहिता में दस मंडल तथा 1028 सूक्त हैं।
- ऋग्वेद की पाँच शाखायें हैं – शाकल, वाष्कल, आश्वलायन, शांखायन तथा मांडूक्य।
- ऋग्वेद के कुल मंत्रों (ऋचाओं) की संख्या लगभग 10,600 है।
- ऋग्वेद में मंत्रों को उच्चारण करने वाले को 'होता' कहते हैं।
- ऋग्वेद में इंद्र के लिए 250 तथा अग्नि के लिए 200 ऋचाओं (मंत्रों) की रचना की गई है।
- ऋग्वेद का दो से सातवाँ मंडल प्रामाणिक और शेष प्रक्षिप्त माना जाता है।
- ❖ बाद में जोड़े गये दसवें मंडल में पहली बार 'शूद्रों' का उल्लेख किया गया है; जिसे 'पुरुषसूक्त' के नाम से जाना जाता है।
- देवता 'सोम' का उल्लेख नवें मंडल में है।
- लोकप्रिय 'गायत्री मंत्र' (सावित्री) का उल्लेख भी ऋग्वेद में ही है।
- गायत्री मंत्र जिसकी रचना विश्वामित्र ने की थी जिसका उल्लेख तीसरे मंडल में है।

### सामवेद ( 1000-500 ई.पू. )

- 'साम' का अर्थ 'संगीत' या 'गान' होता है।
- इसमें यज्ञों के अवसर पर गाये जाने वाले मंत्रों का संग्रह है।
- इन मंत्रों को गाने वाला 'उद्गाता' कहलाता था।
- सामवेद के दो मुख्य भाग हैं–आर्चिक एवं गान।
- सामवेद के प्रथम द्रष्टा वेदव्यास के शिष्य जैमिनी को माना जाता है।
- सामवेद की प्रमुख शाखायें हैं–कौथुमीय, जैमिनीय तथा राणायनीय।

भारतीय इतिहास

- सामवेद में कुल 1549 ऋचायें हैं।
- जिसमें मात्र 78 ही नयी हैं, शेष ऋग्वेद से ली गयी हैं।
- ❖ सामवेद को भारतीय संगीत का जनक माना जा सकता है।

## यजुर्वेद :

- 'यजुष' शब्द का अर्थ यज्ञ है। यजुर्वेद संहिता में यज्ञों को सम्पन्न कराने में सहायक मंत्रों का संग्रह है, जिसका उच्चारण 'अध्वुर्यु' नामक पुरोहित द्वारा किया जाता था।
- यह गद्य एवं पद्य दोनों शैली में है।
- यजुर्वेद कर्मकाण्ड प्रधान वेद है।
- इसके दो भाग हैं–(क) कृष्ण यजुर्वेद (ख) शुक्ल यजुर्वेद

**(क) कृष्ण यजुर्वेद :** इसमें छन्दबद्ध मंत्र तथा गद्यात्मक वाक्य हैं।

- कृष्ण यजुर्वेद की मुख्य शाखायें हैं–तैत्तिरीय, काठक, मैत्रायणी तथा कपिष्ठल।

**(ख) शुक्ल यजुर्वेद :** इसमें केवल मंत्र ही हैं। इसकी मुख्य शाखायें हैं–माध्यन्दिन तथा काण्व।

- इसकी संहिताओं को 'वाजसनेय' भी कहा गया है, क्योंकि वाजसेनी के पुत्र याज्ञवल्क्य इसके द्रष्टा थे।
- इसमें कुल 40 अध्याय हैं।

## अथर्ववेद :

- उपर्युक्त तीनों संहितायें जहाँ परलोक सम्बन्धी विषयों का प्रतिपादन करती हैं, वहीं अथर्ववेद संहिता लौकिक फल प्रदान करने वाली है।
- 'अथर्वा' नामक ऋषि इसके प्रथम द्रष्टा हैं, अत: उन्हीं के नाम पर इसे 'अथर्ववेद' कहा गया।
- इसके दूसरे द्रष्टा आंगिरस ऋषि के नाम पर इसे 'अथर्वांगिङ्रसवेद' भी कहा जाता है।
- अथर्ववेद में उस समय के समाज का चित्र मिलता है, जब आर्यों ने अनार्यों के अनेक धार्मिक विश्वासों को अपना लिया था।
- अथर्ववेद की दो शाखायें हैं–पिप्पलाद एवं शौनक।
- इस संहिता में कुल 20 कांड 731 सूक्त तथा 5987 मंत्रों का संग्रह है।
- इसमें लगभग 1200 मंत्र ऋग्वेद से उद्धृत हैं।
- इसकी कुछ ऋचायें यज्ञ सम्बन्धी तथा ब्रह्म विद्या विषयक होने के कारण इसे 'ब्रह्मवेद' भी कहा जाता है।
- लेकिन इसके अधिकांश मंत्र लौकिक जीवन से सम्बन्धित हैं।
- रोग निवारण, तंत्र-मंत्र, जादू-टोना, शाप, वशीकरण, आशीर्वाद, स्तुति, प्रायश्चित, औषधि, अनुसंधान, विवाह, प्रेम, राजकर्म, मातृभूमि महात्म्य आदि विविध विषयों से सम्बद्ध मंत्र तथा सामान्य मनुष्यों के विचारों, विश्वासों अंधविश्वासों इत्यादि का वर्णन अथर्ववेद से प्राप्त होता है।
- आयुर्वेद के सिद्धांत तथा व्यवहार जगत की अनेक बातें भी इसमें हैं।

## ब्राह्मण ग्रंथ

- ब्राह्मण ग्रंथों की रचना यज्ञादि विधानों का प्रतिपादन तथा उसकी क्रिया को समझाने के उद्देश्य से की गयी।
- 'ब्रह्म' का शब्दार्थ 'यज्ञ' है, अत: यज्ञीय विषयों के प्रतिपादक ग्रंथ 'ब्राह्मण' कहे गये।
- ग्रंथ जहाँ स्तुति प्रधान हैं, वहीं ब्राह्मण ग्रंथ विधि प्रधान हैं, जो अधिकांशत: गद्य में लिखे गये हैं। प्रत्येक वेद हेतु पृथक ब्राह्मण ग्रंथ लिखे गये।

## आरण्यक ग्रंथ

- इनकी रचना अरण्यों अर्थात् वनों में पढ़ाये जाने के निमित्त होने के कारण इन्हें 'आरण्यक' कहा गया है।
- इनमें ज्ञान एवं चिंतन को प्रधानता दी गयी है।
- इन दार्शनिक रचनाओं से ही कालान्तर में उपनिषदों का विकास हुआ।

## उपनिषद् (108)

- ❖ उपनिषदों को 'वेदांत' भी कहा जाता है।
- उपनिषद् मुख्यत: ज्ञानमार्गी रचनायें हैं।
- इनका मुख्य विषय ब्रह्मविद्या का प्रतिपादन है।
- 'उपनिषद्' का शाब्दिक अर्थ है–उप-समीप, नि-निष्ठापूर्वक, सद्-बैठना; अर्थात् (रहस्य ज्ञान हेतु) गुरु के समीप निष्ठापूर्वक बैठना।
- वैसे तो मुक्तिकोपनिषद् में 108 उपनिषदों का उल्लेख मिलता है, लेकिन सर्वाधिक प्राचीन और प्रामाणिक 12 उपनिषद् माने जाते हैं।

| 12 उपनिषद् |
|---|
| (1) ईश (2) केन (3) कठ (4) प्रश्न (5) मुण्डक (6) माण्डूक्य (7) तैत्तिरीय (8) ऐतरेय (9) छान्दोग्य (10) वृहदारण्यक (11) श्वेताश्वतर और कौषीतकी (12) शंकराचार्य ने आरम्भिक दस उपनिषदों पर भाष्य लिखा है। |

- ❖ भारत का राष्ट्रीय आदर्श वाक्य "सत्यमेव जयते" 'मुण्डकोपनिषद्' से उद्धृत है।
- श्वेतास्वतर उपनिषद् में सर्वप्रथम भक्ति शब्द का उल्लेख मिलता है।
- उपनिषदों के विकास में गार्गी और मैत्रेयी के साथ दीर्घकाल तक ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य मनीषियों ने बौद्धिक योगदान दिया।
- उपनिषदों में सर्वत्र सत्य को खोजने की सच्ची उत्कंठा परिलक्षित होती है।
- नचिकेता-यम का संवाद कठोपनिषद् में है।
- इषोपनिषद् में गीता का निष्काम कर्म का उल्लेख मिलता है।
- वृहदारण्यक उपनिषद् में अहम-ब्रह्मास्मि, पुनर्जन्म का सिद्धांत एवं याज्ञवलक्य गार्गी संवाद का वर्णन है।

## वेदांग

वेदों (संहिता के अर्थ को सरलता से समझने तथा वैदिक कर्मकांडों के प्रतिपादन में सहायतार्थ 'वेदांग' नामक नवीन साहित्य की रचना की गयी, जिसकी संख्या 6 है–

**वेदांग**

शिक्षा | कल्प | व्याकरण | निरुक्त | छंद | ज्योतिष

**1. शिक्षा (उच्चारण विधि) :**

- वैदिक मंत्रों के शुद्ध उच्चारण एवं शुद्ध स्वर क्रिया की विधियों के ज्ञानार्थ लिखित साहित्य 'शिक्षा' कहा जाता है।
- वैदिक शिक्षा सम्बन्धी प्राचीनतम साहित्य प्रतिशाख्य है।

**2. कल्पसूत्र (कर्मकाण्ड) :**

- कल्प नामक वेदांग में छोटे-छोटे वाक्यों में सूत्र (Formula) बनाकर महत्त्वपूर्ण वैदिक विधि-विधानों को प्रस्तुत किया गया।
- सूत्र ग्रंथों को ही कल्प कहा जाता है। कल्पसूत्र चार प्रकार के हैं।

### 3. व्याकरण :

- शब्दों की मीमांसा करने वाला शास्त्र व्याकरण कहा गया, जिसका सम्बन्ध भाषा सम्बन्धी नियमों से है।
- ❖ व्याकरण की सर्वप्रमुख रचना पाणिनी कृत 'अष्टाध्यायी' (5वीं शती ई.पू.) है, जिसमें 8 अध्याय एवं 400 सूत्र हैं।
- ईसा पूर्व चौथी शताब्दी में कात्यायन ने संस्कृत में प्रयुक्त होने वाले नये शब्दों की व्याख्या के लिए 'वार्तिक' लिखे।
- ईसा पूर्व द्वितीय शताब्दी में पतंजलि ने पाणिनी के सूत्रों पर 'महाभाष्य' लिखा।

### 4. निरुक्त (भाषा विज्ञान) :

- क्लिष्ट वैदिक शब्दों के संकलन 'निघण्टु' की व्याख्या हेतु यास्क ने 'निरुक्त' की रचना की, जो भाषा शास्त्र का प्रथम ग्रंथ माना जाता है।

### 5. छन्द :

- वैदिक मंत्र प्रायः छंदबद्ध हैं।
- छंदों के नाम संहिताओं एवं ब्राह्मण ग्रंथों में मिलते हैं।
- छंदशास्त्र पर पिङ्गलमुनि का ग्रंथ 'छन्द सूत्र' उपलब्ध है।

### 6. ज्योतिष :

- शुभ मुहूर्त में याज्ञिक अनुष्ठान करने के लिए ग्रहों तथा नक्षत्रों का अध्ययन करके सही समय ज्ञात करने की विधि को वेदांग ज्योतिष की उत्पत्ति की सर्व प्राचीन रचना मगधमुनि कृत 'वेदांग ज्योतिष' है।
- ज्योतिष के सबसे प्राचीनतम आचार्य मगध मुनि हैं।
- ज्योतिष में कुल 44 श्लोक हैं।
- वेदांग ज्योतिष के ऋग्वेद एवं यजुर्वेद से सम्बन्धित दो ग्रंथ हैं–आचार्य ज्योतिष एवं याजुष ज्योतिष।
- वेदों की शरीर रचना की दृष्टि में वेद का पाद, हाथ, आँखें, कान नाक तथा मुख क्रमशः छन्द, कल्प, ज्योतिष, निरुक्त, शिक्षा तथा व्याकरण कहलाते हैं।

## पुराण

- 'पुराण' का शाब्दिक अर्थ 'प्राचीन आख्यान' होता है।
- पुराणों में मत्स्य पुराण सबसे प्राचीन है।
- पांचवीं से चौथी शताब्दी ई.पू. में पुराण ग्रंथ अस्तित्व में आ चुके थे।
- वर्तमान उपलब्ध पुराण गुप्तकाल के आसपास के हैं।
- ❖ मुख्य पुराणों की संख्या 18 हैं– मत्स्य, मार्कण्डेय, भविष्य, भागवत, ब्रह्माण्ड, ब्रह्मवैवर्त्त, ब्रह्म, वामन, वराह, विष्णु, वायु, अग्नि, नारद, पद्म, लिंग, गरुड़, कूर्म एवं स्कन्द।
- ये सभी महापुराण कहलाते हैं।
- पुराणों के अंतर्गत हम प्राचीन शासकों की वंशावलियाँ पाते हैं।
- विष्णु पुराण का संबंध मौर्य वंश से, मत्स्य पुराण का सातवाहन से तथा वायु पुराण का गुप्तवंश से है।
- इनके संकलनकर्त्ता महर्षि लोमहर्ष अथवा उनके सुपुत्र उग्रश्रवा माने जाते हैं।
- पुराण सरल एवं व्यावहारिक भाषा में लिखे गये जनता के ग्रंथ हैं।
- जिनमें प्राचीन ज्ञान-विज्ञान, पशु-पक्षी, वनस्पति विज्ञान, आयुर्वेद इत्यादि का वृहद् वर्णन मिलता है।

## स्मृतियाँ या धर्मशास्त्र

- धर्मसूत्र साहित्य के कालान्तर में स्मृति ग्रंथों का विकास होने के कारण इन्हें 'धर्मशास्त्र' की संज्ञा भी दी जाती है।
- ईसा पूर्व द्वितीय शताब्दी से लेकर पूर्व मध्यकाल तक विभिन्न स्मृति ग्रंथों की रचना की गयी।
- कुछ प्रमुख स्मृतिग्रंथों का नाम निम्नवत है: मनुस्मृति, याज्ञवल्क्य स्मृति, विष्णु स्मृति, कात्यायन स्मृति, वृहस्पति स्मृति, पाराशर स्मृति, गौतम स्मृति, वशिष्ठ स्मृति, नारद स्मृति, देवल स्मृति आदि।
- इनमें मनुस्मृति (शुंगकाल-ई.पू. द्वितीय शती) सर्वाधिक प्राचीन तथा प्रामाणिक है, शेष गुप्तकालीन (पाँचवीं शती ई.) हैं।
- विष्णु स्मृति के अतिरिक्त शेष स्मृतियाँ श्लोकों में लिखी गयी हैं और इनकी भाषा लौकिक संस्कृत है।
- ❖ मनुस्मृति के प्रसिद्ध भाष्यकार मेघातिथि, गोविन्दराज तथा कुल्लूक भट्ट हैं और याज्ञवल्क्य स्मृति के टीकाकार विश्वरूप, विज्ञानेश्वर (मिताक्षरा), अपरार्क इत्यादि हैं।
- स्मृतियों में विभिन्न वर्णों, राजाओं और पदाधिकारियों के नियम भी दिए गये हैं।

### कल्पसूत्र

- **ई.पू. 600 से 300 ई. के मध्य रचित**

(क) **श्रौत सूत्र :** वेदों में वर्णित यज्ञ भागों का क्रमबद्ध विवरण उस काल की परम्पराओं तथा धार्मिक रूढ़ियों का ज्ञान ऋग्वेद के दो श्रौत सूत्र-आश्वलायन, शांखायन, यजुर्वेद-कात्यायन, आपस्तम्ब, हिरण्यकेशी, बोधायन, भारद्वाज, मानव तथा वैखानस। सामवेद-लाट्यायन, द्राह्मायण एवं आर्षेय। अथर्ववेद-वैतान।

(ख) **गृह्य सूत्र :** गृहस्थाश्रम से सम्बद्ध धार्मिक अनुष्ठान (कर्तव्य) प्रमुख गृह सूत्र- शांखायन, आश्वलायन, बोधायन, आपस्तम्ब, हिरण्यकेशी, भारद्वाज, पारस्कर, गोभिल, खादिर एवं कौषिक।

(ग) **धर्म सूत्र :** वर्णधर्म, राजा के कर्तव्य, प्रायश्चित विधान, न्यायालयों की स्थापना, कराधान, नियोग नियम तथा गृहस्थ कर्तव्यों का विवरण। प्रमुख धर्मसूत्र- वशिष्ठ, मानव, आपस्तम्ब, बोधायन, गौतम। धर्मसूत्रों से ही कालान्तर में स्मृति ग्रंथों का विकास हुआ।

(घ) **शुल्व सूत्र :** 'शुल्व' का तात्पर्य है–नापने की डोरी। इनमें यज्ञीय वेदियों को नापने, स्थान चयन एवं निर्माणादि का वर्णन है। ये आर्यों के ज्यामिति ज्ञान के परिचायक है।

- षड्दर्शन से भारतीय दर्शन का निर्माण हुआ जिनमें आत्मा, जीव, जगत, ब्रह्म इत्यादि को विभिन्न प्रकार से समझाने का प्रयास किया गया है।

**भारतीय दर्शन के प्रवर्तक**

| दर्शन | प्रवर्तक |
|---|---|
| सांख्य | कपिल |
| न्याय | गौतम |
| योग | पतंजलि |
| वैशेषिक | कणाद |
| पूर्व मीमांसा | जैमिनी |
| उत्तर मीमांसा | बादरायण |

## बौद्ध साहित्य

### त्रिपिटक

विनय पिटक | सूत्त पिटक | अभिधम्म पिटक

- गौतमबुद्ध की मृत्यु के बाद उनकी शिक्षाओं को विभिन्न बौद्ध संगीतियों में संकलित कर तीन पिटकों (पिटारियों) में विभाजित किया गया– (1) विनय पिटक (2) सूत्त पिटक (3) अभिधम्म पिटक, जिन्हें 'त्रिपिटक' की संज्ञा दी गयी। त्रिपिटक पालि भाषा में रचित हैं।

1. **विनय पिटक :** इसमें संघ सम्बन्धी नियमों, दैनिक आचार-विचार व विधि-निषेधों का संग्रह है, जिसके निम्न भाग हैं–

   **(क) पातिमोक्ख (प्रतिमोक्ष) :** इसमें अनुशासन सम्बन्धी विधानों तथा उनके उल्लंघन पर किए जाने वाले प्रायश्चितों का संकलन है।

   **(ख) सुत्ताविभंङ्ग :** इसमें पातिमोक्ख के नियमों पर भाष्य प्रस्तुत किए गये हैं। इसके दो भाग हैं–महाविभंङ्ग तथा भिक्खुनी विभंङ्ग। प्रथम में बौद्ध भिक्षुओं तथा द्वितीय में भिक्षुणियों हेतु विधि एवं निषेध वर्णित हैं।

   **(ग) खन्धक :** इसमें संघीय जीवन सम्बन्धी विधि निषेधों का विस्तृत वर्णन है, जिसके– महावग्ग और चुल्लवग्ग नामक दो भाग हैं।

   **(घ) परिवार**

2. **सूत्त पिटक :** इसमें बौद्धधर्म के सिद्धांत तथा उपदेशों का संग्रह हैं इसमें पांच निकाय आते हैं– दीघ्य निकाय, मज्झिम निकाय, संयुक्त निकाय, अंगुत्तर निकाय तथा खुद्दक निकाय।

- प्रथम चार में बुद्ध के उपदेश वार्तालाप रूप में दिये गये हैं और पाँचवां पद्यात्मक है।
- खुद्दक निकाय में कई ग्रंथ आते हैं, जैसे–खुद्दक पाठ, धम्मपद, उदान सुत्तनिपात, विमान वत्थु, पंतवत्थु, थेरगाथा, थेरीगाथा एवं जातक आदि।
- जातकों में बुद्ध के पूर्व जन्मों (550) की कहानियाँ संग्रहीत हैं।

3. **अभिधम्म पिटक :** यह प्रश्नोत्तर क्रम में है और इसमें दार्शनिक सिद्धांतों का संग्रह है।

- इसमें सात ग्रंथ सम्मिलित हैं–धम्मसंगणि, विभंग, धातुकथा, पुग्गल पंचति, कथावत्थु, यमक तथा पट्ठानं।
- अभिधम्म पिटक सबसे बाद की रचना है, जो कुषाण काल में हुई चौथी बौद्ध संगीति में संकलित की गयी।
- त्रिपिटकों के अतिरिक्त पालि भाषा में लिखित अन्य बौद्ध ग्रंथों में नागसेन कृत 'मिलिन्दपन्हो' तथा सिंहली अनुश्रुतियाँ–दीपवंश एवं महावंश (सिंहल या लंका का इतिहास) उल्लेखनीय हैं।
- **संस्कृत बौद्ध ग्रंथ :** संस्कृत बौद्ध लेखकों में सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण नाम कवि एवं नाटककार अश्वघोष का है।
- सर्वास्तिवादी सम्प्रदाय के चिंतक अश्वघोष कनिष्क (प्रथम शती ई.) की राजसभा में थे।
- उनकी तीन प्रसिद्ध रचनायें हैं– बुद्धचरित, सौन्दरानन्द तथा सारिपुत्र प्रकरण।
- इसमें प्रथम दो रचनायें महाकाव्य तथा अंतिम रचना नाटक ग्रंथ है।

❖ संस्कृत में ही लिखित महावस्तु तथा ललितविस्तार में महात्मा बुद्ध के जीवन तथा दिव्यावदान में परवर्ती मौर्य शासकों एवं शुंग राजा पुष्यमित्र शुंग का उल्लेख मिलता है।

## जैन साहित्य

❖ जैन साहित्य को 'आगम' कहा जाता है, जिसमें 12 अंग, 12 उपांग, 10 प्रकीर्ण, 6 छेदसूत्र, 4 मूलसूत्र, अनुयोग सूत्र एवं नन्दि सूत्र की गणना की जाती है।

- इनकी रचना महावीर स्वामी की मृत्यु के बाद विभिन्न संगीतियों में ई.पू. चौथी शती से छठीं शती ई. के मध्य हुई।

**(1) अंग (12) :**

1. आचारांग सूत्त
2. सूय कंडग सूत्त (सूत्र कृतांग)
3. थावंग (स्थानांग)
4. समवायंग सूत्त
5. भगवती सूत्त
6. नवधम्मकहा सूत्त (ज्ञाताधर्मकथा)
7. उवासगदसाओ सूत्त (उपासकदशा)
8. अंत गडदसाओ
9. अणुत्तरोववाइय दसाओ
10. पठहावागरणाइ (प्रश्न व्याकरण)
11. विवाग सुयम्
12. दिट्टिवाय (दृष्टिवाद)

**(2) उपांग (12) :**

1. औपपातिक
2. राजप्रश्नीय
3. जीवाभिगम
4. प्रजापना
5. जम्बूद्वीप प्रज्ञप्ति
6. चंद्र प्रज्ञप्ति
7. सूर्य प्रवरित
8. निरयावलि
9. कल्पावसंतिका
10. पुष्पिका
11. पुष्प चूलिका
12. वृष्णि दशा।

**(3) प्रकीर्ण (10) :**

1. चतु:शरण
2. आतुर प्रत्याख्यान
3. भक्तिपरिज्ञा
4. संस्तार
5. तंदुल वैतालिक
6. चंद्रवैध्यक
7. गणिविद्या
8. देवेन्द्रस्तव
9. वीरस्तव
10. महाप्रत्याख्यान

**(4) छेदसूत्र (6) :**

1. निशीथ
2. महानिशीथ
3. व्यवहार
4. आचार दशा
5. कल्प
6. पंचकल्प।

**(5) मूलसूत्र :** इसमें जैन धर्म के उपदेश, भिक्षुओं के कर्तव्य, विहार जीवन पथ नियम आदि का वर्णन है। इनकी संख्या चार है– उत्तराध्ययन, षडावशयक, दशवैकालिक, पिण्डनिर्युक्ति या पाक्षिक सूत्र।

**(6) नन्दि सूत्र एवं अनुयोग द्वार :** ये जैनियों के स्वतंत्र ग्रंथ तथा विश्वकोश हैं।

- उपर्युक्त सभी ग्रंथ श्वेताम्बर सम्प्रदाय के जैनों के लिए हैं।
- दिगम्बर सम्प्रदाय के मतावलम्बी इन्हें प्रामाणिक नहीं मानते हैं।
- श्वेताम्बर अनुश्रुति के अनुसार महावीर की मृत्यु के 140 वर्ष बाद वलभी में देवधि क्षमा श्रमण की अध्यक्षता में एक सभा हुई जिसमें धार्मिक साहित्य को संकलित किया गया।
- इसके बाद हुई पाटलिपुत्र सभा में भी कुछ ग्रंथों का संकलन हुआ।
- दिगम्बर मतावलम्बी भद्रबाहु की शिक्षाओं को ही प्रामाणिक मानते हैं।

## लौकिक साहित्य ( धर्मेत्तर )

### रामायण :

- वाल्मीकि कृत महाकाव्य रामायण में मूलतः 6000 श्लोक थे, जो कालान्तर में 12000 हुए और फिर 24000 हो गये।
- इसे 'चतुर्विंशति साहस्री संहिता' भी कहा गया है।
- इसकी रचना संभवतः ई.पू. पांचवीं शती में आरम्भ हुई।
- इसकी पांचवीं अवस्था ईसा की बारहवीं शती में सामने आयी है।
- कुल मिलाकर इसकी रचना महाभारत के बाद की गयी प्रतीत होती है।
- यह सात काण्डों में विभक्त है—बालकाण्ड, अयोध्याकाण्ड, अरण्यकाण्ड, सुन्दरकाण्ड, किष्किंधा काण्ड, युद्धकाण्ड तथा उत्तरकाण्ड के अधिकांश भागों को प्रक्षिप्त माना जाता है।

### महाभारत :

- वेदव्यास कृत 'महाभारत' महाकाव्य संभवतः 10वीं सदी ई.पू. से चौथी सदी ई. तक की स्थिति का आभास देता है।
- पहले इसमें मात्र 8800 श्लोक थे, और इसका नाम 'जयसंहिता' (विजय संबंधी ग्रंथ) था।
- बाद में श्लोक संख्या बढ़कर 24000 हो जाने पर यह 'भारत' नाम से प्रसिद्ध हुआ, क्योंकि इसमें वैदिक जन भरत के वंशजों की कथा है।
- कालान्तर में इसमें एक लाख श्लोक हो गये और यह 'शतसाहस्री संहिता' या 'महाभारत' कहलाने लगा।
- इसमें कथोपकथायें, वर्णन और उपदेश हैं।
- मूलकथा कौरवों-पांडवों के युद्ध की है—जो उत्तर वैदिक काल की हो सकती है।
- वर्णनांश का सम्बन्ध वेदोत्तर काल से तथा उपदेशात्मक अंश का सम्बन्ध मौर्योत्तर और गुप्तकाल से हो सकता है।
- महाभारत में कुल 18 पर्व हैं : 1. आदि पर्व 2. सभा पर्व 3. वन पर्व 4. विराट पर्व 5. उद्योग पर्व 6. भीष्म पर्व 7. द्रोण पर्व 8. कर्ण पर्व 9. शल्य पर्व 10. सौप्तिक पर्व 11. स्त्री पर्व 12. शांति पर्व 13. अनुशासन पर्व 14. अश्वमेध पर्व 15. आश्रमवासी पर्व 16. मौसल पर्व 17. महाप्रस्थानिक पर्व 18. स्वर्गारोहण पर्व।
- इसके अलावा हरिवंश इसका परिशिष्ट (खिल्य पर्व) है, जिसमें कृष्ण वंश की कथा वर्णित है।

### अर्थशास्त्र :

- कौटिल्य कृत अर्थशास्त्र महत्त्वपूर्ण मौर्यकालीन विधि ग्रंथ है।
- कौटिल्य को विष्णुगुप्त तथा चाणक्य के नाम से भी जाना जाता है, जो चंद्रगुप्त मौर्य का गुरु था।
- अर्थशास्त्र 15 अधिकरणों में विभाजित है, जिसमें द्वितीय और तृतीय सर्वाधिक प्राचीन हैं।
- इस ग्रंथ को वर्तमान स्वरूप ईसवी सन् के आरम्भ में दिया गया, लेकिन इसके प्राचीनतम अंश मौर्यकालीन समाज और अर्थतंत्र पर प्रकाश डालते हैं।
- इससे प्राचीन भारतीय राज्यतंत्र और अर्थ- व्यवस्था के अध्ययन की महत्त्वपूर्ण सामग्री उपलब्ध होती है।

## प्रमुख संस्कृत साहित्य

**कालिदास :** शैव मतावलम्बी कालिदास गुप्त सम्राट चंद्रगुप्त द्वितीय के दरबारी कवि थे। कालिदास द्वारा विरचित सात पद्य और नाट्य ग्रंथों की प्रामाणिकता सुविदित है। इनके नाटक निम्नलिखित हैं—

### कालिदास के पद्य और ग्रंथ

(1) **ऋतुसंहार :** यह कालिदास की प्रथम काव्य रचना है, जो छः सर्गों (छः ऋतुओं) का एक खंड काव्य है—ग्रीष्म, वर्षा, शरद्, हेमन्त, शिशिर एवं वसंत।

(2) **मेघदूत :** पूर्व मेघ तथा उत्तर मेघ में विभक्त खंडकाव्य, वियोग श्रृंगार की उत्कृष्ट रचना।

(3) **कुमारसंभव :** 17 सर्गों का महाकाव्य, जिसमें शिव एवं पार्वती के पुत्र कुमार (कार्तिकेय) के जन्म की कथा वर्णित है।

(4) **रघुवंश :** 19 सर्गों में विभक्त महाकाव्य, जिसमें राजा दिलीप से लेकर अग्निवर्ण तक चालीस इक्ष्वाकुवंशी राजाओं की चरित्र चित्रण है।

(5) **मालविकाग्निमित्र :** पाँच अंकों में बंटी कालिदास की प्रथम नाट्य रचना, जिसमें शुंग राजा अग्निमित्र और मालविका की प्रणय कथा वर्णित है।

(6) **विक्रमोर्वशीय :** कालिदास का द्वितीय नाट्य ग्रंथ, पांच अंकों में पुरूरवा एवं उर्वशी की प्रणय कथा।

(7) **अभिज्ञानशाकुंतलम् :** कालिदास की सर्वोत्कृष्ट नाट्य रचना, सात अंकों में हस्तिनापुर के राजा दुष्यन्त एवं कण्व ऋषि की पालिता पुत्री शकुन्तला के संयोग एवं वियोग श्रृंगार का वर्णन।

- **भारवि :** 18 सर्गों में विभाजित 'किरातार्जुनीयम' नामक महाकाव्य के रचयिता।
- **माघ** (675 ई.) : महाकाव्य 'शिशुपाल वध' के रचयिता।
- **श्रीहर्ष** (12वीं शती गहड़वाल जयचंद) : नैषधीयमचरित (महाकाव्य), खण्डनखण्डखाद्य (अद्वैतवाद का प्रणयन) के रचनाकार।
- **भास** (ई.पू. पांचवीं-चौथी शती) : कालिदास के पूर्ववर्ती प्रथम नाटककार, 13 नाटकों के प्रणेता— 1. स्वप्नवासवदत्ता 2. उरूभंग 3. प्रतिमका 4. अभिषेक 5. पंचरात्र 6. मध्यम व्यायोम 7. दूतघटोत्कच 8. कर्णभार 9. दूतवाक्य 10. बालचरित 11. दरिद्र चारूदत्त 12. अविमारक 13. प्रतिज्ञायौगन्धरायण।
- **विशाखदत्त ( गुप्तकालीन ) :** मुद्राराक्षस, देवीचंद्रगुप्तम्।
- शूद्रक ने ही अपनी रचनाओं का पात्र राज परिवार के स्थान पर समाज के मध्यम वर्ग के लोगों को बनाया।
- **हर्षवर्धन** (606–647 ई.) : तीन नाटक— रत्नावली, प्रियदर्शिका तथा नागानन्द का लेखक।
- **भवभूति** (700 ई.-यशोवर्मन, कन्नौज) : तीन नाटक मालतीमाधव, उत्तररामचरित, महावीर चरित।
- **राजशेखर :** कन्नौज के प्रतिहार राजाओं महेन्द्रपाल (890–908 ई.) तथा महिपाल (910–940 ई.) की राजसभा में निवास करने वाले प्रसिद्ध संस्कृत कवि/नाटककार।
- चार नाटकों तथा एक अलंकार शास्त्र का प्रणयन–बाल रामायण, बाल भारत (प्रचण्ड पांडव), विद्धशालभंजिका, कर्पूरमंजरी, काव्यमीमांसा।

## गद्य साहित्य

- **बाणभट्ट** (हर्ष काल) : हर्षचरित एवं कादम्बरी।
- **दण्डी** (पल्लव नरसिंह वर्मन-690-715 ई.) : काव्यादर्श, दशकुमार चरित, अरन्ति सुन्दरी कथा।

## ऐतिहासिक साहित्य

- **पद्मगुप्त 'परिमल'** [(परमार शासक मुंज) (992-998 ई.)] : नवसहसांकचरित।
- **बिल्हण** (कल्याणी के चुलक्य विक्रमादित्य VI-1076-1127 ई.) विक्रमांकदेव चरित।
- **कल्हण :** कल्हण ने अपने प्रमुख ग्रंथ 'राजतंरगिणी' की रचना कश्मीर नरेश जयसिंह (1127-1159 ई.) के काल में की, जिसमें 8 तरंगों में कश्मीर का 12वीं शती तक का इतिहास वर्णित है।
- राजतरंगिणी संस्कृत भाषा में ऐतिहासिक घटनाओं को क्रमबद्ध रूप से प्रस्तुत करने का प्रथम प्रयास है।
- **हेमचंद्र :** (12वीं शती) : कुमार पाल चरित (द्रया-श्रममहाकाव्य)।
- **नयचंद सूरि :** हम्मीर काव्य
- **जयानक :** पृथ्वीराज विजय
- **वाक्पति राज :** गौड़वाहो
- **संध्याकर नन्दी :** रामपालचरित

## कथा साहित्य

- **गुणाढ्य :** प्रसिद्ध रचना 'वृहत्कथा' (पैशाची भाषा), सातवाहन नरेश हाल (प्रथम-द्वितीय शती) का दरबारी कवि।
- **क्षेमेन्द्र :** वृहत्कथामंजरी
- **सोमदेव :** कथासरित्सागर
- **विष्णुशर्मा :** पंचतत्र (संकलन)
- **नारायण भट्ट :** हितोपदेश (संस्कृत शिक्षक का प्रथम ग्रंथ
- **अमरसिंह :** अमरकोश (शब्दकोष)।

# विदेशी यात्रियों के विवरण

- भारत आने वाले विदेशी यात्रियों एवं लेखकों के विवरण से भी हमें भारतीय इतिहास को जानने में सहायता मिलती है, जिनमें अनेक यूनानी, रोमन, अरबी और चीनी यात्री सम्मिलित हैं।

## यूनानी-रोमन (परम्परागत) लेखक

- भारतीय स्रोत से सिकन्दर के आक्रमण (325 ई.पू.) की कोई जानकारी नहीं मिलती, इसके लिए हमें यूनानी स्रोतों पर ही आश्रित रहना पड़ता है।
- सिकन्दर महान के आक्रमण के समय एक समकालीन भारतीय राजा **'सैण ड्रोकोट्टस'** का नामोल्लेख यूनानी लेखकों स्ट्रैबो एवं जस्टिन ने किया है, विलियम जोंस ने जिसकी पहचान चन्द्रगुप्त मौर्य के रूप में की है।
- एरियन तथा प्लूटार्क ने उसे 'एण्ड्रोकोट्टस' तथा फिलार्कस ने 'सैण ड्रोकोट्टस' के नाम से उल्लिखित किया है।
- स्ट्रैबो, डायोडोरस, प्लिनी और एरियन नामक यूनानी विद्वान 'क्लासिकल' लेखक के रूप में जाने जाते हैं।
- **टेसियस :** ईरानी राजवैद्य, जिसने मात्र ईरानी अधिकारयों से ही भारत विषयक ज्ञान प्राप्त करके अपना विवरण लिखा था।
- **हेरोडोटस :** 'इतिहास का पिता' कहलाने वाले हेरोडोटस ने अपने ग्रंथ 'हिस्टोरिका' में पाँचवीं शताब्दी ई.पू. के भारत-फारस सम्बन्ध का वर्णन अनुश्रुतियों के आधार पर किया है।
- **नियार्कस, आनेसिक्रिटस एवं आरिस्टोबुलस:** सिकन्दर के साथ भारत आने वाले इन लेखकों के विवरण अधिक प्रामाणिक हैं, जिनका उद्देश्य अपने देशवासियों को भारतीयों के विषय में बताना था।
- ❖ **मेगस्थनीज :** सेल्युकस 'निकेटर' के राजदूत के रूप में चंद्रगुप्त मौर्य के दरबार में 14 वर्षों तक रहा।
- उसने अपनी पुस्तक 'इण्डिका' में मौर्य युगीन समाज व संस्कृति के बारे में लिखा, लेकिन 'इण्डिका' अब उपलब्ध नहीं है, इसके सम्बन्ध में जानकारी उत्तर कालीन यूनानी लेखकों के उद्धरण के रूप में प्राप्त होती है।
- ❖ **डाइमेकस :** सीरियाई राजा अन्तियोकस के राजदूत के रूप में बिन्दुसार के दरबार में रहा था।
- ❖ **डायोनिसियस :** मिस्र नरेश टालेमी फिलाडेल्फस के राजदूत के रूप में अशोक के दरबार में आया था।
- **टालेमी की 'ज्योग्राफी' और पेरीप्लस ऑफ द एरिथ्रियन सी' :** ज्योग्राफी लगभग 150 ई. के आसपास लिखी गयी थी, जिसमें प्राचीन भारतीय भूगोल और वाणिज्य का वर्णन है।
- 'पेरीप्लस' का अज्ञात लेखक 80-115 ई. के मध्य हिन्द महासागर की यात्रा पर आया था।
- जिसने बंदरगाहों और व्यापारिक वस्तुओं का विवरण दिया है।
- ❖ **प्लिनी :** पुस्तक नेचुरल हिस्टोरिका (ईसा की प्रथम सदी) : यह लैटिन भाषा में है, जिसमें भारत एवं इटली के मध्य होने वाले व्यापार तथा भारतीय पशुओं, वनस्पतियों, खनिजों का विवरण है।
- प्लिनी ने रोम से भारत आने वाले धन के लिए दु:ख प्रकट किया है।

## चीनी लेखक

भारत आने वाले अधिकांश चीनी यात्री बौद्ध तीर्थस्थानों तथा बौद्ध धर्म के विषय में ज्ञान प्राप्त करने आये थे। इनमें प्रमुख हैं–

**(1) फाह्यान :** यह चीनी यात्री गुप्त नरेश चंद्रगुप्त द्वितीय 'विक्रमादित्य' (375-415 ई.) के दरबार में भारत आया था।
- 399 से 414 ई. तक उसने भारत के विभिन्न स्थानों का भ्रमण किया।
- उसने गुप्तकालीन भारत की सामाजिक, धार्मिक और आर्थिक स्थिति का विवरण दिया है।

**(2) ह्वेनसांग :** ह्वेनसांग कन्नौज के शासक हर्ष वर्धन (606 ई-647 ई.) के शासन काल में भारत आया। 16 वर्ष तक विभिन्न स्थानों की यात्रा की, 6 वर्ष तक 'नालन्दा विश्वविद्यालय' में रहकर शिक्षा प्राप्त की।
- उसका यात्रा विवरण 'सी-यू-की' नाम से प्रसिद्ध है, जो हर्षकालीन भारत की स्थिति जानने का महत्त्वपूर्ण स्रोत है।

**(3) ह्वी ली :** इसके द्वारा लिखित ह्वेनसांग की जीवनी से भी हर्षकालीन इतिहास की बातें ज्ञात होती हैं।

**(4) इत्सिंग :** सातवीं शताब्दी के अन्त में भारत आने वाले इस चीनी यात्री ने नालंदा तथा विक्रमशिला विश्वविद्यालय तथा अपने समय की भारत की स्थिति का वर्णन किया है।

**(5) मा त्वान लिन :** हर्ष के पूर्वी अभियान का विवरण।

**(6) चाऊ-जू-कुआ :** चोल इतिहास का विवरण।

### अरबी लेखक

- अलबरुनी (अबूरिहान) तहकीक-ए-हिन्द (किताबुल हिन्द अर्थात् 'भारत की खोज'; कानून-अल-मसूदी) : महमूद गजनवी के आक्रमण (1000 ई.) के समय भारत आने वाले इस अरबी विद्वान ने राजपूत कालीन भारत की वर्ण-व्यवस्था, रीति-रिवाज तथा राजनीति इत्यादि का प्रशंसात्मक वर्णन किया है।
- **सुलेमान :** नवीं शती ईस्वी में भारत आने वाले अरबी यात्री सुलेमान ने प्रतिहार और पाल राजाओं के विषय में लिखा है।
- उसने पाल साम्राज्य को 'रूहमा' (धर्म या धर्मपाल) कहा है।
- **अलमसूदी :** (915-916 ई.) में बगदाद से आने वाले अलमसूदी ने प्रतिहार राजाओं का वर्णन किया है।
- उपर्युक्त लेखकों के अतिरिक्त तिब्बती बौद्ध लेखक तारानाथ (12वीं शती) के ग्रंथों- 'कंग्यूर' और 'तंग्यूर' से भी भारतीय इतिहास पर प्रकाश पड़ता है।
- वेनिस (इटली) का प्रसिद्ध यात्री मार्कोपोलो तेरहवीं शताब्दी के अंत में पांड्य राज्य की यात्रा पर आया था, इसलिए उसका यात्रा विवरण मूलत: दक्षिण भारत से ही सम्बन्धित है।

## प्रागैतिहासिक भारत

- ❖ भारत में पाषाणकालीन सभ्यता की खोज का कार्य सर्वप्रथम 1863 ई. में आरम्भ हुआ, जब भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण विभाग के विद्वान रॉबर्ट ब्रूस फुट ने पल्लवरम् (मद्रास) से पूर्व पाषाण कालीन उपकरण (पत्थर के हाथ की कुल्हाड़ी) प्राप्त किया।
- ❖ ब्रिटिश भू-वैज्ञानिक और पुरातॅत्वविद् रॉबर्ट ब्रूस फुट ने भारतीय संस्थान जियोलॉजिकल सर्वे ऑफ इंडिया के लिए भारत में इतिहास पूर्व स्थानों का भू-विज्ञान संबंधी सर्वेक्षण किया था जिन्हें भारत के इतिहास पूर्व अध्ययन का संस्थापक माना जाता है।
- ❖ सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण अनुसंधान के रूप में 1935 ई. में डी. टेरा तथा पीटरसन के नेतृत्व वाले येल कैम्ब्रिज अभियान दल ने शिवालिक पहाड़ियों की तलहटी में स्थित पोतवार के पठारी भाग का व्यापक सर्वेक्षण किया।
- विद्वानों का विचार है कि इस सभ्यता का उदय और विकास 'अतिनूतन' काल (प्लाइस्टोसीन एज) में हुआ।
- अब तक की जानकारी के अनुसार 400 करोड़ वर्ष पुरानी पृथ्वी की चार अवस्थाओं में से चौथी और अंतिम अवस्था के दो भाग हैं-1. अतिनूतन 2. अद्यतन (होलोसीन)।
- अतिनूतन, दस लाख वर्ष से दस हजार वर्ष पूर्व और अद्यतन युग को आज से दस हजार वर्ष पूर्व आरम्भ माना जाता है।

### पुरापाषाण काल (शिकार एवं खाद्य संग्रह युग)

- भारत में मानव के प्राचीनतम अस्तित्व का संकेत द्वितीय हिमावर्त्तन (ग्लेसिएशन) काल की परतों से प्राप्त पत्थर के उपकरणों से मिलता है, जिसका काल 25,00,000 ई.पू. बताया जाता है।
- आदिम मानव को धातुओं का ज्ञान नहीं था, उसके पास निश्चित घरों का अभाव था। जानवरों का भय बराबर बना रहता था।
- खेती करना, आग जलाना और बर्तन बनाने की कला का ज्ञान नहीं था।
- वे शिकार द्वारा जानवरों के मांस और ऐसे फलों एवं सब्जियों, कंद-मूलों (खाद्य संग्रह) पर जीवन व्यतीत करते थे, जो जंगलों में उपजाते थे।
- पुरापाषाण युग को मानव द्वारा प्रयुक्त होने वाले हथियारों के स्वरूप और जलवायु में होने वाले परिवर्तनों के आधार पर तीन वर्गों में बाँटा जा सकता है :
  1. पूर्व पुरापाषाण युग (2500000 ई.पू.-100000 ई.पू.)।
  2. मध्य पुरापाषाण युग (100000 ई.पू.- 40000 ई.पू.
  3. उत्तर पुरा पाषाण युग (40000 ई.पू.- 10000 ई. पू.)।

**1. पूर्व पुरा पाषाण युग :** अधिकांश हिमयुग आरम्भिक पुरापाषाण युग में ही व्यतीत हुआ है। इसका प्रमाण है-कुल्हाड़ी या हस्त-कुठार (हैंड-एक्स), विदारणी (क्लीवर) और गंडासा (खंडक) का उपयोग।

- भारत में प्राप्त हुई प्रस्तर कुल्हाड़ियाँ प्राय: पश्चिम एशिया, यूरोप एवं अफ्रीका से प्राप्त कुल्हाड़ियों जैसी ही हैं।
- निम्न पुरापाषाण युग के अधिसंख्य स्थल, सिंधु नदी की सहायक 'सोहन नदी' की घाटी (सम्प्रति पाकिस्तान के पंजाब प्रांत में) में पाये गये हैं।
- पहली बार सोहन क्षेत्र से सम्बन्धित साक्ष्य मिलने के कारण इसे 'सोहन संस्कृति' की संज्ञा भी दी गयी है।
- अनेक स्थल कश्मीर तथा थार के मरुस्थल (डिडवाना क्षेत्र) में भी मिले हैं।
- निम्न पुरापाषाणकालीन हथियार मिर्जापुर जिले की बेलनघाटी (उ.प्र.) एवं भीमबेटका की गुहाओं (भोपाल म.प्र.) में भी मिले हैं।

**2. मध्य पुरा पाषाण युग :** इस युग में प्रस्तर शल्कों से निर्मित विभिन्न प्रकार के फलक, वेधनी, छेदनी और खुरचनी का प्रयोग होता था।

- जो सम्पूर्ण भारत में पाये गये हैं।
- इस युग का शिल्प कौशल नर्मदा नदी के किनारे-किनारे अनेक स्थानों पर और तुंगभद्रा नदी के दक्षिणवर्ती स्थानों पर भी पाया जाता है।

**3. उत्तर पुरा पाषाण युग :** इस युग में आर्द्रता कम हो गयी थी और जलवायु अपेक्षाकृत गर्म होते जाने से हिमयुग की अंतिम अवस्था आरम्भ हो चुकी थी।

- ❖ इसी युग में आधुनिक प्रारूप के मानव (होमोसेपियन्स) का आविर्भाव हुआ।
- इस युग के प्रस्तर फलक और कुल्हाड़ियाँ आंध्र, कर्नाटक, महाराष्ट्र, केन्द्रीय मध्य प्रदेश, दक्षिण उत्तर प्रदेश, पूर्व बिहार (वर्तमान झारखंड) के पठारी भाग में पाये गये हैं।
- गुजरात के टिब्बों के ऊपरी तलों पर एक उच्च पुरापाषाणीय भंडार भी मिला है, जिसमें शल्क फलक, तक्षणियाँ और खुरचनियाँ सम्मिलित हैं।

### मध्य पाषाण काल (9000 ई.पू. – 4000 ई.पू.)
### (शिकार एवं पशुपालन युग)

- मध्य पाषाणकालीन मानव शिकार करके मछली पकड़ कर तथा जंगली कंद-मूल का संग्रह कर उसी से अपना पेट भरते थे।
- इस युग के प्रस्तर उपकरणों में परिष्कार आया और उनका आकार भी छोटा हो गया।
- इस मध्यवर्तीकाल को उत्तर पाषाण युग या Mesolithic Age भी कहा जाता है।
- मध्य पाषाण-कालीन स्थल राजस्थान, दक्षिणी उ.प्र., मध्य व पूर्वी भारत तथा कृष्णा नदी के दक्षिण में बहुतायत से पाये गये हैं।
- यहाँ पर मानव बस्ती 5000 वर्षों तक रही।
- मध्य प्रदेश में आदमगढ़ और राजस्थान का बागोर पशुपालन का प्राचीनतम प्रमाण प्रस्तुत करते हैं, जिसका समय 5000 ई.पू. हो सकता है।
- मध्य पाषाण कालीन महादहा (उत्तर प्रदेश के प्रतापगढ़ जिले) से बड़ी मात्रा में हड्डी एवं सींग निर्मित उपकरण प्राप्त हुए हैं।

## नव पाषाण काल ( 7000 – 1000 ई.पू. )
## ( अन्न उत्पादक युग )

- विश्व के संदर्भ में नव पाषाण युग (Neolithic Age) का आरम्भ 9000 ई.पू. में आरम्भ होता है लेकिन ब्लूचिस्तान के मेहरगढ़ में एक ऐसी प्राचीन भारतीय बस्ती (सम्प्रति पाकिस्तान) मिली है, जिसका समय 7000 ई.पू. बताया जाता है।
- इस युग के लोग पॉलिशदार पाषाण हथियारों का प्रयोग करते थे। वे विशेष रूप से पत्थर की कुल्हाड़ियाँ प्रयुक्त करते थे, जो देश के पहाड़ी क्षेत्रों में बड़ी मात्रा में पायी गयी हैं।
- ❖ नवपाषाण युग के निवासियों को सबसे पहले अन्न उगाने का श्रेय जाता है।
- कृषि कार्य की प्रक्रिया में वे पत्थर की कुदालों और नुकीले पाषाण डंडों से जमीन तोड़ते थे।
- पॉलिशदार पाषाण हथियारों के अतिरिक्त वे सूक्ष्म पाषाण फलकों का भी प्रयोग करते थे।
- वे मिट्टी और सरकंडे से निर्मित गोलाकार तथा आयताकार घरों में निवास करते थे।
- ❖ इस युग में लोग घर बनाकर स्थायी रूप से रहना सीख गये थे; बुर्जाहोम, (कश्मीर) तथा चिंराद (छपरा, सारण) में पाषाणयुगीन लोग पॉलिशदार पाषाण उपकरणों के अतिरिक्त बड़ी मात्रा में हड्डियों से निर्मित उपकरणों का भी प्रयोग करते थे।
- बुर्जाहोम के लोग 'धूसर मृद्भांडों' का प्रयोग करते थे।
- यहाँ कब्रों में पालतू कुत्ते भी अपने मालिकों के शवों के साथ दफनाये जाते थे।
- यह प्रथा भारत के अतिरिक्त अन्य कहीं नहीं पायी गयी है।
- ❖ इस काल के लोग कृषि के अतिरिक्त पशुपालन भी करते थे।
- वे गाय, बैल, भेड़ एवं बकरी पालते थे।
- मेहरगढ़ के नव पाषाणीय लोग गेहूँ, जौ और रूई उपजाते थे, जबकि इलाहाबाद के पास कोल्डिहवा से चावल उगाने का प्रमाण मिलता है।
- नवपाषाण कालीन अनेक स्थायी निवासियों को कृषि कार्य के कारण अनाज रखने तथा पकाने, खाने और पीने के लिए बर्तनों की आवश्यकता महसूस हुई।
- अत: कुम्भकारी सर्वप्रथम इसी युग में परिलक्षित होती है।
- यहाँ आरम्भ में हाथ से मृद्भांड निर्मित होते थे, बाद में मिट्टी के अधिकांश बर्तन चाक पर बनने लगे।
- इनमें पॉलिशयुक्त काला मृद्भांड, धूसर मृद्भांड एवं मन्द वर्ण मृद्भांड सम्मिलित हैं।
- नवपाषाण युगीन सेल्ट, कुल्हाड़ियां, बसूले, छेनी आदि उपकरण उड़िसा (ओडिशा) और छोटानागपुर (झारखंड) के पहाड़ी क्षेत्रों में भी पाये गये हैं।
- कालान्तर में मानव को लोहे का ज्ञान हो गया तो उसकी चरम उन्नति का मार्ग भी प्रशस्त हो गया।
- लोहे के फल से युक्त हलों के कारण मैदानी इलाकों में वनों को काट कर खेत बनाना और गहरी जुताई करना संभव हो गया, जिससे अधिशेष उत्पादन होने लगा और नगरीय जीवन का आरम्भ हो सका।

## ताम्र पाषाण काल (Chalcolithic Age)

- नव पाषाण युग का अंत होते-होते धातुओं का प्रयोग आरम्भ हो गया था।
- पत्थर के साथ-साथ पहली धातु के रूप में ताँबे के उपकरणों का भी प्रयोग होने लगा।
- ताम्रपाषाण युग को चालकोलिथिक युग भी कहा जाता है।
- ताम्र पाषाणकालीन लोग मुख्यत: ग्रामीण समुदाय के थे और देश के ऐसे भागों में फैले थे, जहाँ पहाड़ी जमीन और नदियां थीं।
- भारत में इस अवस्था से सम्बद्ध स्थल दक्षिण-पूर्वी राजस्थान, पश्चिमी मध्य प्रदेश, पश्चिमी महाराष्ट्र तथा दक्षिण-पूर्वी भारत में पाये गये हैं।
- राजस्थान में 'अहार' और 'गिलुंड' में उत्खनन हुआ है, जो बनास घाटी के सूखे भागों में स्थित हैं।
- पश्चिमी मध्यप्रदेश में मालवा, कयथा और एरण में उत्खनन हुआ है।
- मालवा से प्राप्त मृद्भांडों को ताम्र पाषाणीय मृद्भांडों में उत्कृष्ट माना गया है।
- पश्चिमी महाराष्ट्र के जोरवे, नेवासा एवं दैमाबाद (अहमदनगर); चंदोली, सोनगाँव, इनामगाँव, झामगाँव, प्रकाश और नासिक में विस्तृत उत्खनन किए गये हैं।
- ये सभी स्थल 'जोरवे संस्कृति' के हैं।
- जोरवे, अहमदनगर जिले में गोदावरी नदी की शाखा प्रवरा नदी के बायें तट पर अवस्थित है।
- इस अवस्था के अनेक स्थल पूर्वी भारत, विंध्य क्षेत्र, पश्चिम बंगाल (वीरभूमि), बिहार (चिराँद, सोनपुर, ताराडीह), पूर्वी उ.प्र. (रैवराडीह, नौहान), दक्षिण भारत तथा राजस्थान की बनास घाटी के शुष्क क्षेत्रों में पड़ते हैं।
- ❖ अहार संस्कृति का काल 2100 ई.पू.-1500 ई.पू. माना जाता है।
- गिलुंड इसका स्थानीय केंद्र है, जहाँ ताँबे के टुकड़े ही मिलते हैं।
- ताम्र पाषाण युग के लोग गाय, भेड़, बकरी, सुअर और भैंस पालते थे।
- हिरण का शिकार करते थे।
- ऊँट के अवशेष भी मिले हैं।
- यह स्पष्ट नहीं होता कि वे घोड़े से परिचित थे या नहीं।
- वे गेहूँ, चावल, बाजरा, मसूर, उड़द, मूँग, मटर, रागी (मडुवा), अलसी तथा कपास उगाते थे।
- वे मछली पकड़ने के कांटे (बंसी) का प्रयोग करते थे।
- वे अपना घर गीली मिट्टी थोप कर बनाते थे, अहार के लोग पत्थर से बने घरों में रहते थे।
- वे ताँबे का शिल्प कर्म और पत्थर का कार्य भी करते थे।
- वे पत्थरों के मनके या गुटिकायें भी बनाते थे।
- वस्त्र निर्माण से भी वे सुपरिचित थे।
- लोग मृतक को अस्थिकलश में रखकर अपने घर में फर्श के नीचे उत्तर-दक्षिण स्थिति में गाड़ते थे।
- ❖ ताम्रपाषाणीय लोग मातृ देवी की पूजा करते थे।
- अनेक कच्ची मिट्टी की नग्न पुतलियाँ भी पूजी जाती थीं।
- बस्तियाँ छोटी और बड़ी होती थीं।
- इस सभ्यता की खुदाई से प्राप्त ताम्र वस्तुयें हैं–तीर के नोक, बरछे के फल, बंसियाँ, सेल्ट, कंगन, छेनी आदि।
- ❖ यहाँ 'गैरिक मृद्भांड' (OCP) भी पाया गया है।

- यह एक लाल अनुलेपित भांड है जो अक्सर काले रंग से रंगा होता है और प्रायः कलश के आकार में होता है।
- तिथिक्रम की दृष्टि से भारत में ताम्रपाषाणीय बस्तियों की अनेक शृंखलायें हैं।
- कुछ प्राक् हड़प्पीय हैं, कुछ हड़प्पाकालीन, तो कुछ हड़प्पेत्तर।
- राजस्थान का कालीबंगा और हरियाणा का बनवाली प्राक् हड़प्पीय ताम्र-पाषाणिक अवस्था है।
- कोटदीजी और कयथा की संस्कृति हड़प्पाकालीन है।
- ऐसा प्रतीत होता है कि ताम्रपाषाण युग के कुछ कृषक समुदाय सिंधु के बाढ़ वाले मैदानों की ओर बढ़े, कांसे का तकनीकी ज्ञान प्राप्त किया और वे नगरों की स्थापना में सफल हुए।
- ताम्रपाषाणीय संस्कृतियाँ 1200 ई.पू. तक बनी रही। इसके लुप्त होने का कारण 1200 ई.पू. के बाद से वर्षा की मात्रा में कमी आना माना जाता है।
- जलोढ़ मिट्टी वाले मैदानों और घने जंगल वाले इलाकों को छोड़कर प्रायः समूचे देश में ताम्र पाषाणीय संस्कृतियाँ प्राप्त हुई हैं।
- इस युग में लोगों ने पहाड़ियों से कम दूरी पर तथा नदी तटों पर घर बनाये।
- वे लघु पाषाण उपकरणों के साथ ताँबे के उपकरण भी प्रयुक्त करते थे।
- वे चाकों पर बने काले-लाल मृद्भांडों का प्रयोग करते थे।
- उनकी प्राक् कांस्य अवस्था से लगता है कि उन्होंने सर्वप्रथम चित्रित मृद्भांडों का प्रयोग किया।
- वे पकाने, खाने, पीने और समान रखने के लिए इन मृद्भांडों का प्रयोग करते थे।
- लोटा एवं थाली दोनों उनके द्वारा प्रयुक्त होता था।
- ताम्र पाषाण काल में पशुपालन–गाय, भेड़, बकरी, सुअर, भैंस, हिरण, ऊँट।
- कयथा (मालवा) और एरण (मध्य भारत) उनकी सबसे पुरानी बस्तियाँ हैं।
- उन्होंने ही सर्वप्रथम बड़े-बड़े गाँव बसाये।
- ताम्र पाषाणीय लोग पशुपालन का सदुपयोग नहीं कर सके।
- वे विस्तृत कृषि भी न कर सके।
- हल और फावड़ा न होने से वे केवल झूम खेती कर पाते थे।
- कांसे के उपकरणों के प्रयोग से क्रीट, मिस्र, मेसोपोटामिया और सिंधु में घाटी भी प्राचीनतम सभ्यताओं के विकास में सहायता मिली।
- ताम्र पाषाणीय लोग लिखने की कला नहीं जानते थे और न ही वे नगरों में रहते थे, जबकि कांस्ययुगीन लोग नगरवासी हो गये थे।
- ताम्र पाषाणीय गैरिक मृद्भांड वाले लोग हड़प्पावासियों के सम-सामयिक थे और वे जिस क्षेत्र में रहते थे वह भी हड़प्पाइयों के क्षेत्र से बहुत दूर नहीं था।
- ❖ नवदाटोली, मध्य प्रदेश का एक महत्पवूर्ण ताम्रपाषाणिक पुरास्थल है जो इंदौर के निकट स्थित है।
- ❖ यहाँ से मिट्टी, बांस तथा फूस के बने चौकोर एवं वृत्ताकार घर मिले हैं।
- ❖ यहाँ के मृदभांड लाल काले रंग के है जिन पर ज्यामितीय अरिरत उत्कीर्ण है।

## सिंधु घाटी या हड़प्पा सभ्यता (2500 ई.पू. – 1750 ई.पू.)

- सैंधव सभ्यता आध ऐतिहासिक काल की सभ्यता थी।
- ❖ हड़प्पा संस्कृति को कांस्य युगीन सभ्यता भी कहते हैं।
- हड़प्पा के लोगों को ताँबे (Cu) में टिन (Sn) मिलाकर कांसा (Bronze) बनाने की विधि आती थी।
- ताम्र पाषाणिक पृष्ठभूमि पर सिंधु घाटी नामक विकसित सभ्यता का आविर्भाव हुआ, जिसका केंद्र भारतीय उपमहाद्वीप के पश्चिमोत्तर भाग में था।
- ❖ हड़प्पा टीले का सर्वप्रथम उल्लेख 1826 ई. में चार्ल्स मैस्सन द्वारा किया गया।
- लेकिन एक प्राचीन उन्नत सभ्यता का रहस्योद्घाटन 1856 में करांची और लाहौर के बीच रेल पटरी बिछाने के दौरान हुआ, जब जॉन ब्रंटन और विलियम ब्रंटन नामक अंग्रेजों ने दो प्राचीन नगरों हड़प्पा और मोहनजोदड़ो का पता लगाया।
- ❖ इस सभ्यता का नाम 'हड़प्पा संस्कृति' इसलिए पड़ा क्योंकि 1921 ई. में पाकिस्तान के पंजाब प्रांत में स्थित हड़प्पा (मोंटगुमरी जिला) नामक स्थल पर ही सर्वप्रथम दयाराम साहनी और माधव स्वरूप वत्स के नेतृत्व में उत्खनन कार्य किया गया।
- इस प्राचीन सभ्यता के दूसरे महत्त्वपूर्ण स्थल मोहनजोदड़ों (मृतकों का टीला) में उत्खनन कार्य 1922 ई. में राखालदास बनर्जी के नेतृत्व में आरम्भ हुआ, जो वर्तमान पाकिस्तान के सिंध प्रांत के लरकाना जिले में स्थित है।
- उक्त दोनों स्थलों पर संयुक्त उत्खनन कार्य के पश्चात् भारतीय पुरातत्व विभाग के तत्कालीन महानिदेशक सर जॉन मार्शल ने 1924 ई. में सिंधु सभ्यता (कांस्य युगीन) नामक एक उन्नत नगरीय व्यवस्था के खोज की विधिवत घोषणा की।
- बाद में जे.एफ. मैके ने 1927 ई. से 1931 ई. तक तथा जी. एफ. डेल्स ने 1963 ई. में मोहनजोदड़ो में उत्खनन कार्य किया।
- पिगट ने हड़प्पा एवं मोहनजोदड़ो को एक विस्तृत साम्राज्य की जुड़वां राजधानियाँ बताया है।
- वैसे तो हड़प्पा सभ्यता का केन्द्र पंजाब और सिंध (मुख्यतः सिंधु घाटी) में है, लेकिन सैन्धव सभ्यता दक्षिण और पूर्व में ब्लूचिस्तान, गुजरात, राजस्थान, हरियाणा, पश्चिमी उत्तर प्रदेश, जम्मू और उत्तरी अफगानिस्तान तक विस्तृत है।
- यद्यपि हड़प्पा सभ्यता के लगभग 1000 स्थलों के बारे में जानकारी प्राप्त हो चुकी है, लेकिन इनमें से केवल 6 को ही नगर माना जाता है–हड़प्पा, मोहनजोदड़ो, सिंध का चन्हूदड़ो, गुजरात का लोथल, उत्तरी राजस्थान का कालीबंगा तथा हरियाणा के हिसार जिले में स्थित बनवाली।
- ❖ त्रिभुजाकार हड़प्पा संस्कृति का समूचा क्षेत्रफल 1,299,600 वर्ग किलोमीटर था, जो तत्कालीन मिस्र एवं मेसापोटामियाई क्षेत्रफल से काफी अधिक था।
- सिन्धु सभ्यता का विस्तार भारत एवं पाकिस्तान में लगभग 1500 स्थलों पर पाया गया है।

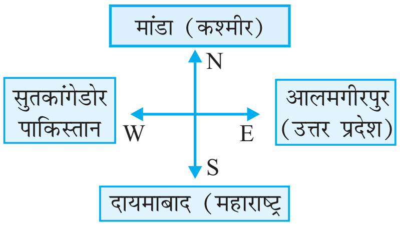


- कालीबंगा और बनवाली में हड़प्पा पूर्व और हड़प्पा कालीन संस्कृतियों का प्रमाण मिलता है। यहाँ बिना पकी ईंटों के चबूतरों, सड़कों तथा नालियों के अवशेष हड़प्पा युगीन हैं।

- सुतकांगेडोर और सुरकोतदा जैसे समुद्रतटीय नगरों में भी इस सभ्यता के उन्नत रूप के दर्शन मिलते हैं। जहाँ नगर दुर्ग प्राप्त होते हैं।
- गुजरात के काठियावाड़ प्रायद्वीप में स्थित रंगपुर और रोजड़ी नामक स्थलों में इस सभ्यता की उत्तरावस्था का संकेत मिलता है।
- **प्रथम नगर नियोजन :** हड़प्पा संस्कृति की सर्वोत्कृष्ट विशेषता इसका 'नगर नियोजन' है।
- हड़प्पा और मोहनजोदड़ों दोनों ही नगरों के अपने दुर्ग थे, जहाँ संभवतः शासक वर्ग के सदस्य रहते थे।
- प्रत्येक नगर में दुर्ग के बाहर निचले स्तर पर ईंटों के मकानों वाला नगर बसा था।
- अलेक्जेंडर कनिघंम को भारतीय पुरातत्व का जनक कहा जाता है।
- भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण, संस्कृति मंत्रालय के अधीन एक विभाग है।

## सिंधु घाटी सभ्यता का काल निर्धारण

- **रेडियो कार्बन**-2500 ई. पू. से 1750 ई. पू.
- डी॰ पी॰ अग्रवाल के अनुसार सिंधु सभ्यता का काल 2350 ई॰ पू॰ से 1750 ई॰ पू॰ माना जाता है।
- **मृण्मुद्राओं के आधार पर** - मृण्मुद्राओं के आधार पर सिंधु सभ्यता का काल 2500 ई॰पू॰ से 1800 ई॰ पू॰ माना जाता है।
- **मार्शल के अनुसार** - मार्शल ने सिंधु सभ्यता का काल 3250 ई॰ पू॰ से 2750 ई॰ पू॰ माना है।
- **ह्वीलर के अनुसार** - सिंधु सभ्यता का काल 2500 ई. पू. से 1500 ई. पू.।
- हड़प्पा संस्कृति के अध्ययन के साथ चार्ल्स मैस्सन, कनिंघम, एम. व्हीलर, माधो स्वरूप वत्स आदि जुड़े थे।
- सिंधु सभ्यता के उत्थान का चरमोत्कर्ष काल 2100 ई॰ पू॰ माना जाता है।
- इरावथम महादेवन एक भारतीय पुरा लेखशास्त्री और भूतपूर्व लोक सेवक हैं, जो सिंधु घाटी सभ्यता के पुरालेखशास्त्री पर अपनी सुविज्ञता और तमिल-ब्राह्मी अभिलेखों का सफलतापूर्वक अर्थ निकालने के लिए जाने जाते हैं।

**प्रमुख वस्तुएं**

| वस्तु | प्राप्ति स्थल |
|---|---|
| ताँबा | ब्लूचिस्तान, राजस्थान, दक्षिण भारत, अफगानिस्तान |
| टिन | बंगाल, अफगानिस्तान, ईरान |
| चाँदी | अजमेर, दक्षिण भारत, अफगानिस्तान, ईरान |
| लाजवर्द | बदख्शां, उत्तर-पूर्व अफगानिस्तान, मेसोपोटामिया |
| सोना | मैसूर, कंधार (अफगानिस्तान) |
| स्फटिक | पामीर, कश्मीर, फारस |
| जमोनिया | महाराष्ट्र |
| शंख, कौड़ी | दक्षिण भारत, सौराष्ट्र |
| गोमेद | सौराष्ट्र |
| सेलखड़ी | ब्लूचिस्तान, राजस्थान |
| सीसा | ईरान, अफगानिस्तान एवं राजस्थान |
| हरित नील मणि | ईरान |
| नील मणि | महाराष्ट्र |

**हड़प्पा संस्कृति के पतन के कारण**

| पतन के कारण | मत के संस्थापक |
|---|---|
| 1. नदी की शुष्कता | सूद और अग्रवाल |
| 2. अस्थिर नदी तंत्र | लैम्ब्रिक |
| 3. जलवायु परिवर्तन | आरेल स्टीन और ए॰ एन॰ घोष |
| 4. प्राकृतिक आपदा | के. यू. आर. केनेडी |
| 5. भूकम्प | रेइक्स, डेल्स |
| 6. पारिस्थितिक असंतुलन | फेयर सर्विस |
| 7. आर्यों का आक्रमण | आर. मार्टीमर ह्वीलर |
| 8. बाह्य आक्रमण | गार्डन चाइल्ड, स्टुवर्ट पिगट |
| 9. बाढ़ | मैके, राव, मार्शल |

- सैंधववासी दशमलव प्रणाली पर आधारित बाटों का प्रयोग करते थे।
- खुदाई में 16 के गुणकों में बाट प्राप्त हुए हैं, जैसे 16, 64, 160, 320, 640 आदि।
- सिन्धु सभ्यता में ईटों का अनुपात 4 :2 :1 था।
- टेराकोटा का उपयोग हड़प्पा-काल की मुद्राओं के निर्माण में मुख्य रूप से किया गया था।
- सैंधववासियों के जीवन का मुख्य व्यवसाय कृषि कार्य था।
- सिन्धु घाटी सभ्यता के विषय में जानकारी कम प्राप्त हुई हैं क्योंकि उस काल की लिपि आज तक पढ़ी नहीं जा सकी।
- इसकी लिपि भावचित्रात्मक है।
- सिन्धु घाटी के लोगों द्वारा प्रयोग में लाए जाने वाले बर्तन चाक पर बने होते थे।
- पतली गर्दन वाले बड़े आकार के घड़े तथा लाल रंग के बर्तनों पर काले रंग की चित्रकारी हड़प्पा के बर्तनों की मुख्य विशेषता है।
- सिन्धु सभ्यता से प्राप्त अनाज चावल, जौ, खजूर, गेहूँ, कपास, तरबूज, मटर, ब्रासिका, जुंसी, तिल एवं सरसों।
- हड़प्पा सभ्यता के सर्वाधिक स्थल गुजरात राज्य में मिले हैं।
- पहली बार कपास उपजाने का श्रेय हड़प्पावासियों को प्राप्त है।
- यहाँ के लोग लकड़ी के हलों का प्रयोग जुताई के लिए तथा पत्थर के हंसियों का प्रयोग फसल काटने के लिए करते थे।
- सर्वप्रथम स्वास्तिक चिह्न के अवशेष हड़प्पा सभ्यता से मिले हैं।
- लोथल में मिट्टी से निर्मित घोड़े की प्रतिमा प्राप्त हुई है।
- सैन्धववासी मातृदेवी की पूजा करते थे।
- चावल के प्रथम साक्ष्य लोथल एवं रंगपुर से मिले हैं।
- सिन्धु क्षेत्र का प्राचीन नाम मेलुहा था। सिन्धु मुहरों पर एकशृंगी सांड के चित्र सर्वाधिक मिले हैं।
- सिन्धु सभ्यता के लोथल एवं कालीबंगा से हवनकुण्ड का साक्ष्य मिला है।
- **पालतु पशु**—बैल, भैंस, भेड़, बकरी, सुअर, कुत्ता, बिल्ली, गधा, ऊँट, कूबड़वाला सांड़, हाथी, गैंडा।
- यहाँ गाय के साक्ष्य नहीं मिले हैं।
- ऋग्वेद में हड़प्पा सभ्यता को हरयूपिया कहा गया है।

- विश्व में चाँदी सर्वप्रथम भारत (हड़प्पा सभ्यता) में पाई गई।
- सिन्धु सभ्यता का मुख्य केन्द्र हड़प्पा था। सिन्धुवासी लोहे से परिचित नहीं थे।
- सैन्धववासियों का मुख्य भोजन जौ और गेहूँ था।
- मोहनजोदड़ो की मुख्य सड़क 10 मीटर चौड़ी थी।
- हड़प्पाई लोग कताई के लिए तकलियों का इस्तेमाल करते थे।
- हड़प्पाई लोग नाव बनाने का काम भी करते थे।
- सैंधव कालीन मुहरें बनाने में सर्वाधिक उपयोग सेलखड़ी (Steatite) का किया गया है।
- स्त्री मृण्मूर्तियाँ (मिट्टी की मूर्तियाँ) अधिक मिलने से ऐसा अनुमान लगाया जाता है कि सैंधव समाज मातृसत्तात्मक था।
- सैंधव मुहरें बेलनाकार, वर्गाकार, आयताकार और वृत्ताकार हैं।
- सिंधु घाटी की खुदाई में मिले अवशेषों में तत्कालीन व्यापारिक और आर्थिक विकास के द्योतक मुद्राएँ हैं।
- वर्गाकार मुहरें सर्वाधिक प्रचलित थीं।
- सैंधवकालीन सर्वाधिक मुहरें मोहनजोदड़ो से मिली हैं।
- लोथल एवं कालीबंगा से युग्म समाधियां मिली हैं।
- हड़प्पाकालीन पुरास्थल कुणाल से चाँदी के दो मुकुट मिले हैं।
- हड़प्पा में शवों को दफनाने जबकि मोहनजोदड़ो में जलाने की प्रथा विद्यमान थी।
- लोथल एवं सुरकोतदा सिन्धु सभ्यता का बन्दरगाह था।
- लोथल से एक तराजू पाया गया है।
- सैंधववासी मिठास के लिए शहद का प्रयोग करते थे।
- पर्दा-प्रथा एवं वेश्यावृत्ति सैंधव सभ्यता में प्रचलित थी।
- सिन्धुवासी 'बतख' को अत्यधिक पवित्र मानते थे।
- हड़प्पा संस्कृति के विनाश का ठीक कारण ज्ञात नहीं है।
- सिन्धु नदी की बाढ़, सिन्धु नदी का मार्ग बदलना, वर्षा की कमी, भूकम्प एवं विदेशी आक्रमण जैसे कारण समय-समय पर बताए गए हैं।
- सैंधव सभ्यता के विनाश का संभवत: सबसे प्रभावी कारण बाढ़ था।
- हाड़प्पा से तांबे की बनी हुई एक 'एक्का गाड़ी' प्राप्त हुई है।
- हड़प्पा से एक दर्पण प्राप्त हुआ है जो ताँबे का बना हुआ है।
- हड़प्पा से प्राप्त मुद्रा में गरुड़ का अंकन मिला है।
- मोहनजोदड़ो में सबसे बड़ा भवन विशाल अन्नागार था।
- मोहनजोदड़ो से सूती कपड़े का साक्ष्य तथा नर्तकी की एक कांस्य मूर्ति मिली है।
- कांसे की नर्तकी उनकी मूर्तिकला का सर्वश्रेष्ठ नमूना है।
- मोहनजोदड़ो से पाँच बेलनाकार मुद्राएं प्राप्त हुई हैं।
- सिंधु सभ्यता के प्रमुख स्थल लोथल में बन्दरगाह का अस्तित्व मिला है, जहाँ विदेशी जलयानों का आवागमन होता था।
- लोथल गुजरात के अहमदाबाद से 80 किमी. दूर अरब सागर तट पर खंभात की खाड़ी में स्थित है।
- 1955-56 ई. में हुई खुदाई में यहाँ 216 मी. लम्बी, 36 मी. चौड़ी तथा 3 मीटर गहरी ईटों से निर्मित गोदी का पता चला।
- लोथल में महिला-पुरुष को एक साथ दफनाया गया है।
- ऊँट की हड्डियाँ कालीबंगा से प्राप्त हुई हैं।
- घोड़े की अस्थियों का अवशेष सुरकोटदा से मिला है।
- चन्हूदड़ो से दवात तथा मनके बनाने के कारखाने प्राप्त हुई है।

## धार्मिक प्रतीक के चिह्न

| | |
|---|---|
| (1) | **ताबीज**—इनके द्वारा वे भौतिक व्याधियों अथवा प्रेतात्माओं से छुटकारा पाने का प्रयास करते थे। |
| (2) | **स्वास्तिक**—सूर्योपासना का प्रतीक। यह चिह्न संभवत: हड़प्पा सभ्यता की देन है। |
| (3) | **योगी के रूप में बैठे पुरुष (शिव)**—शिव को आज भी योगीश्वर के नाम से संबोधित किया जाता है। |
| (4) | **शृंग**—महाभारत में शिव को 'त्रि-शृंग' कहा गया है। (शृंग शिव से संबंधित) |
| (5) | **बैल**—संहारकारी देवता शिव का वाहन था। यह सर्वाधिक धार्मिक महत्त्व का पशु था। |
| (6) | **बकरा**—बलि हेतु प्रयुक्त होता था। |
| (7) | **भैंसा**—एक मुद्रा पर भैंसा व्यक्ति को उछाले हुए एवं एक अन्य मुद्रा पर व्यक्तियों के समूह पर आक्रमण करते हुए दिखाया गया है, जो किसी देवता की शत्रुओं पर विजय का प्रतीक है। |
| (8) | **नाग**—इनकी भी पूजा होती थी। |
| (9) | **बैल, भेड़ एवं बकरी की हड्डियों के ढेर**—पशुबलि का द्योतक। |
| (10) | **कांस्य नर्तकी**—मंदिर की कल्पना करने पर नृत्य भी धार्मिक महत्त्व का हो सकता है। |
| (11) | **शवों के साथ बर्तन एवं अन्य सामग्री**—मृत्यु के बाद जीवन में विश्वास। |
| (12) | **शवों को उत्तर-दक्षिण दिशा में लिटाना**—धार्मिक विश्वास का द्योतक। |
| (13) | **दो शवों का एक साथ गाड़ा जाना**—पुरुष की मृत्यु के बाद संभवत: स्त्री का सती होना। |
| (14) | सिंधु घाटी की प्राचीन संस्कृति और आज के हिंदू धर्म के बीच जैव संबंध का प्रमाण पत्थर, पेड़ और पशु की पूजा से मिलता है। |

## सिन्धु सभ्यता के महत्वपूर्ण उत्खनन स्थल एवं उनकी तटीय स्थिति

| नदी/सागर तट | खुदाई वर्ष | जगह का नाम | उत्खननकर्ता |
|---|---|---|---|
| रावी नदी | 1921 ई. | हड़प्पा (मांटगुमरी, पंजाब-पाकिस्तान) | दयाराम साहनी |
| सिन्धु नदी | 1922 ई. | मोहनजोदड़ो (सिंध, पाकिस्तान) | राखालदास बनर्जी |
| | 1929 ई. | आमरी | एन॰जी॰ मजूमदार |
| सिन्धु नदी | 1931 ई. | चन्हूदड़ो (सिंध, पाकिस्तान) | एन॰जी॰ मजूमदार |
| दाश्क नदी | 1927 ई. | सुतकांगेडोर (बलूचिस्तान-पाकिस्तान) | सर ओरेल स्टीन |

| | | | |
|---|---|---|---|
| हिन्डन नदी | 1952-55 ई. | आलमगीरपुर (मेरठ-उत्तर प्रदेश) | यज्ञदत्त शर्मा |
| सतलज नदी | 1950-55 ई. | रोपड़ (पंजाब-सतलज तट) | बी. बी. लाल, यज्ञदत्त शर्मा |
| मादर नदी | 1953 ई. | रंगपुर (गुजरात-मादर नदी तट) | माधोस्वरूप वत्स एवं रंगनाथ राव |
| घग्घर नदी | 1953 ई. | कालीबंगा (हनुमानगढ़-राजस्थान) | डॉ॰ ए॰ घोष |
| सिन्धु नदी | 1955-57 ई. | कोटदीजी (सिंध-पाकिस्तान) | एफ॰ ए॰ खान |
| भोगवा नदी | 1955-63 ई. | लोथल (अहमदाबाद-गुजरात) | एस॰ आर॰ राव, माधो स्वरूप वत्स |
| | 1956-57 ई. | प्रभासपाटन | – |
| | 1963-64 ई. | देसलपुर | के. वी सौन्दरराजन |
| | 1972-75 ई. | सुरकोटदा (ब्लूचिस्तान) | जे॰ पी॰ जोशी |
| | 1973 ई. | बनवाली (हिसार-हरियाणा) | डॉ. आर॰ एस॰ विष्ट |
| अरब सागर | 1979 ई. | बालाकोट | जॉर्ज एफ॰ डेल्स |
| | 1967-68 ई. | धौलावीरा (भारत में सबसे बड़ा हड़प्पाकालीन स्थल) (गुजरात) | जे॰ पी॰ जोशी |
| | 1990-91 ई. | धौलावीरा (गुजरात) | डॉ॰ आर॰ एस॰ विष्ट |

**अन्य महत्वपूर्ण स्थल**

| स्थल | क्षेत्र |
|---|---|
| 1. मेहरगढ़ | ब्लूचिस्तान (पाकिस्तान) |
| 2. डेरा इस्माइल खान | पंजाब (पाकिस्तान) |
| 3. राखीगढ़ी | हरियाणा |
| 4. माण्डा | जम्मू-कश्मीर राज्य |
| 5. रोजड़ी एवं प्रभासपाटन | गुजरात |
| 6. मांडा | जम्मू एवं कश्मीर |
| 7. कालीबंगा | राजस्थान |
| 8. आलमगीरपुर | उत्तर प्रदेश |
| 9. लोथल | गुजरात |

**भारतीय नदियों के प्राचीन नाम**

| प्राचीन नाम | आधुनिक नाम |
|---|---|
| कुमु | कुर्रम |
| कुमा | काबुल |
| वितस्ता | झेलम |
| आस्किनी | चिनाब |
| पुरुष्णी | रावी |
| शतुद्री | सतलज |
| विपाशा | व्यास |
| सदानीरा | गंडक |
| दृषद्वति | घग्घर |
| गोमती | गोमल |
| सुवास्तु | स्वात |
| सिंधु | सिंध |

| प्रमुख स्थल | नदी तट |
|---|---|
| मोहनजोदाड़ो | सिंधु नदी |
| हड़प्पा | रावी |
| रोपड़ | सतलज नदी |
| सुतकांगेडोर | दाश्क नदी |
| लोथल | भोगवा नदी |
| कालीबंगा | घग्घर नदी |
| रंगपुर | भादर नदी |
| आलमगीरपुर | हिंडन नदी |

## वैदिक सभ्यता (1500-600 ई.पू.)

- 'वेद' शब्द का अर्थ 'ज्ञान' होता है।
- भारतीय परंपरा में वेदों को अपौरुषेय कहा गया है।
- ब्रह्मा ने कुछ ऋषियों को मन्त्रों का प्रकाश दिया।
- ऋषियों ने अपने शिष्यों को बताया।
- कालान्तर में वेद व्यास ने इस ज्ञान को संकलित कर लिया।
- इसी कारण वेदों को श्रुति भी कहा गया है।
- ऋग्वैदिक काल 1500-1000 ई. पू. है।
- खगोलीय आधार पर जर्मन भारतविद् प्रो. हरमन जैकोबी के अनुसार ऋग्वेद की ऋचाएँ 4500 ई.पू.-2500 ई.पू. संकलित की गई थी।
- ऋग्वेद, यजुर्वेद तथा सामवेद को 'वेदत्रयी' या 'त्रयी' कहा जाता है।
- ऋग्वेद में 10 मण्डल तथा 1028 सूक्त हैं।
- दूसरे से सातवें मण्डल तक को "वंश मण्डल" कहा जाता है।
- ऋग्वेद का आठवाँ मण्डल कण्व और अंगिरस वंश को समर्पित है।
- ऋग्वेद के नौवें मण्डल को "सोम मण्डल" कहा जाता है।

**ऋषि और मंडल**

| | |
|---|---|
| गृत्समद् | द्वितीय मंडल |
| विश्वामित्र | तृतीय मंडल |
| वामदेव | चतुर्थ मंडल |
| अत्रि | पंचम मंडल |
| भारद्वाज | षष्ठ मंडल |
| वशिष्ठ | सप्तम मंडल |

- आरंभिक वैदिक काल में वर्ण व्यवस्था व्यवसाय पर आधारित थी।
- ऋग्वेद के दसवें मण्डल में पुरुष सूक्त है, जिसमें चारों वर्णों (ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य तथा शूद्र) की उत्पत्ति का साक्ष्य है।

| ऋग्वैदिक कालीन नदियाँ | |
|---|---|
| प्राचीन नाम | आधुनिक नाम |
| क्रुमु | कुर्रम |
| कुंभा | काबुल |
| वितस्ता | झेलम |
| अस्किनी | चिनाब |
| परुष्णी | रावी |
| शतुद्रि | सतलज |
| विपाशा | व्यास |
| सदानीरा | गंडक |
| दृशद्वती | घग्घर |
| गोमती | गोमल |
| सुवस्तु | स्वात् |
| सिन्धु | सिन्ध |

- यजुर्वेद (यज्ञ सूत्र) की प्रमुख विशेषता कर्मकाण्ड है।
- इसमें पहली बार राजसूय एवं वाजपेय यज्ञ का उल्लेख हुआ है।
- ❖ यह वेद पद्य एवं गद्य दोनों में है।
- आर्यों का आगमन 1500 ई. पू. के पहले है।
- आर्य सर्वप्रथम सप्त सैंधव प्रदेश में लाये थे।
- आर्य शब्द का अर्थ श्रेष्ठ होता है।
- क्लासिकल संस्कृत में आर्य का अर्थ एक उत्तम व्यक्ति है।
- सुदास ने अनार्यों को पराजित किया था।
- ❖ दशराज्ञ युद्ध परुष्णी नदी (रावी) के तट पर सुदास एवं दस जनों के बीच लड़ा गया था।
- ❖ ऋग्वैदिक काल की सबसे महत्त्वपूर्ण नदी सिन्धु थी।
- ❖ ऋग्वेद के तीसरे मण्डल में गायत्री मन्त्र का उल्लेख है।
- ऋग्वेद के दशम् मण्डल में नदी सूक्त है। ऋग्वेद में सर्वाधिक पवित्र नदी सरस्वती को नदियों की माता कहा गया है।
- ❖ ऋग्वेद के ऋचाओं के पढ़ने वाले ऋषि को होतृ कहा जाता था।
- ❖ यजुर्वेद के पाठकर्ता को अध्वर्यु कहा जाता था।
- ❖ सामवेद के पाठकर्ता को उदगातृ (उद्गाता) कहा जाता था।
- सबसे नया वेद अथर्ववेद है।
- अथर्ववेद में वेदत्रयी नहीं आता है।
- इसमें जादू-टोना तथा तन्त्र-मन्त्र का उल्लेख है।
- वेदों की टीकाओं को ब्राह्मण ग्रंथ कहा जाता है।

| वेद-उपवेद और उसके रचनाकार | | |
|---|---|---|
| वेद | उपवेद | रचनाकार |
| ऋग्वेद | आयुर्वेद | धन्वन्तरि |
| यजुर्वेद | धनुर्वेद | विश्वामित्र |
| सामवेद | गन्धर्ववेद | भरतमुनि |
| अथर्ववेद | शिल्पवेद | विश्वकर्मा |

- ऋग्वैदिक काल का समाज कबीले के रूप में संगठित था।
- आर्यों का प्रारम्भिक जीवन मुख्यत: पशुचारक था तथा कृषि उनका गौण धंधा था।
- भरतकुल के पुरोहित वशिष्ठ थे।
- आर्यों ने घोड़ों द्वारा चलाए जा रहे रथों का प्रयोग किया।
- ऋग्वेद में 21 नदियों का जिक्र मिलता है।
- आर्यों की सर्वाधिक प्राचीन संस्था विदथ थी।
- श्रेष्ठ लोगों की संस्था को समिति कहते थे। राजा को चुनने एवं पदच्युत करने का अधिकार समिति को था।
- ऋग्वैदिक काल में पुलिस को उग्र तथा गुप्तचर को स्पश कहते थे।
- ऊनी कपड़े को सामूल्य कहते थे।
- ❖ तम्बाकू का ज्ञान वैदिक काल के लोगों को नहीं था।
- इन्द्र ऋग्वैदिक काल के सबसे प्रतापी देवता थे, जिन्हें किला तोड़ने वाला कहा गया है।
- ❖ ऋग्वेद में इन्द्र का सर्वाधिक 250 बार उल्लेख हुआ है।

| कृषि संबंधी शब्दावली | |
|---|---|
| लांगल | हल |
| वृष | बैल |
| उर्वरा | जुते हुए खेत |
| सीता | हल से बनी नालियाँ |
| अवट | कुआँ |
| पर्जन्य | बादल |
| करीष | गोबर (खाद) |
| स्थिवि | अनाज जमा करने वाले कोठार |
| कीनांश | हलवाहे |

- ❖ उत्तरवैदिक काल के सर्वाधिक प्रतापी देवता प्रजापति थे।
- ❖ शूद्रों के देवता पूषन थे, जो पशुओं से भी सम्बद्ध थे।
- ❖ आश्रम व्यवस्था का सर्वप्रथम उल्लेख छान्दोग्य उपनिषद् में मिलता है।
- राजा का प्रमुख सलाहकार पुरोहित होता था।
- आर्यों के मनोरंजन के मुख्य साधन थे–संगीत, रथदौड़, घुड़दौड़ एवं द्यूतक्रीड़ा।
- ऋग्वेद में नाई को वप्ता कहा जाता था।
- ❖ वैदिक युग में राजा अपनी जनता से जो कर वसूल करते थे, उसे बलि कहते थे।
- सर्वप्रथम कर लगाने की प्रथा उत्तर वैदिक काल में शुरू हुई।
- मगध में निवास करने वाले लोगों को अथर्ववेद में व्रात्य कहा गया है।
- वैदिक आर्यों का मुख्य भोजन दूध और उसके उत्पाद थे।
- जौ के सत्तू को दही में मिलाकर करव नामक खाद्य पदार्थ बनाया जाता था।
- वैदिक काल में जौ, गेहूँ, मूँग, तिल, उड़द आदि प्रमुख अन्न थे।
- ❖ ऋग्वैदिक आर्यों को बढ़ईगीरी, कुम्हार, बुनकर, चर्मकार, रथकार, स्वर्णकार आदि के बारे में मालूम था परंतु उस समय लुहारगीरी की जानकारी नहीं थीं परंतु उत्तरवैदिक काल में लोहे की जानकारी आर्यों को हो गयी थी।
- ❖ अथर्ववेद में सभा तथा समिति को प्रजापति की दो पुत्रियों के समान माना गया है।

| विद्वान | आर्यों का मूल निवास स्थान |
|---|---|
| 1. मैक्समूलर | मध्य एशिया (बैक्ट्रिया) |
| 2. बाल गंगाधर तिलक | उत्तरी ध्रुव |
| 3. दयानन्द सरस्वती | तिब्बत |
| 4. गंगानाथ झा | ब्रह्मर्षि देश |
| 5. एल. डी. कल्ल | कश्मीर तथा हिमालय क्षेत्र |
| 6. गाइल्स | हंगरी अथवा डेन्यूब नदी |
| 7. गार्डन चाइल्ड्स, मेयर, पीक | दक्षिणी रूस |
| 8. पेनका, हर्ट | जर्मनी |
| 9. डॉ. अविनाश चन्द्र दास | सप्त सैंधव प्रदेश |

### अन्य प्राचीन शब्दावली

ऊर्दर – अनाज नापने वाले पात्र के लिये।
गौरी – भैंस को कहते थे।
होता – प्रार्थना करने वाले पुरोहित।
उद्‌गाता – सामवेद का गायन करने वाला पुरोहित।
अध्वर्यु – कर्मकाण्ड एवं पशुबलि देने वाला पुरोहित।
ब्रह्मा – यज्ञ विधि पूर्वक कराने वाले अध्यक्ष पुरोहित।
ब्रीही – चावल।
तक्षण – बढ़ई।
निष्क – मुद्रा के लिये प्रयुक्त शब्द।
व्रजपति – चारागाह का अधिकारी।

- अथर्ववेद को ब्रह्मवेद भी कहा जाता है।
- यजुर्वेद पर विद्वानों ने सर्वाधिक भाष्य लिखे हैं।
- अगस्त्य ऋषि ने दक्षिण भारत का आर्यकरण किया था।
- ऋग्वेद में क्षत्रिय के लिये राजन्य शब्द का प्रयोग होता था।
- ऋग्वैदिक काल में पर्दा प्रथा नहीं थी।
- इस काल में स्त्रियों की दशा बहुत अच्छी थी।
- ऋग्वैदिक काल में सती प्रथा नहीं थी।
- पर्दा प्रथा का उल्लेख वैदिक काल में नहीं मिलता है।

### ऋग्वैदिक देवता

1. **आकाश के देवता :** सूर्य, द्यौस, मित्र, पूषन्, विष्णु, उषा, अश्विन, सवितृ, आदित्य आदि।
2. **अन्तरिक्ष के देवता :** इन्द्र, मरुत, रुद्र, वायु, पर्जन्य आदि।
3. **पृथ्वी के देवता :** अग्नि, सोम, पृथ्वी, वृहस्पति, सरस्वती।

- वैदिक काल में नियोग प्रथा प्रचलित थी।
- शतपथ ब्राह्मण में पत्नी को अर्द्धांगिनी कहा गया है।
- ऋग्वैदिक काल में दास प्रथा का प्रचलन था।
- गाय को अघन्या (न मारने योग्य) माना जाता था।
- ऋग्वैदिक काल में संयुक्त परिवार की प्रथा थी।
- ❖ ओऽम शब्द का सर्वप्रथम निश्चित वर्णन वृहदारण्यक उपनिषद् में मिलता है।
- ❖ "सत्यमेव जयते" शब्द मुण्डकोपनिषद् से लिया गया है।
- ❖ पाप–पुण्य तथा स्वर्ग–नरक का उल्लेख सर्वप्रथम ऋग्वेद में मिलता है।
- महाभारत काल में अनार्य जातियों को पणि या दास कहा जाता था।
- ऋग्वेद में वैद्य या चिकित्सक को भेषज कहा जाता था।

### ऋग्वेद में शब्दों का उल्लेख (बारंबारता)

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| ऊँ या ओऽम | 1028 | | | समुद्र | 1 |
| जन | 275 | ग्राम | 13 | पिता | 335 |
| वर्ण | 23 | क्षत्रिय | 9 | शूद्र | 1 |
| राष्ट्र | 10 | सभा | 8 | विदथ | 122 |
| गण | 46 | अग्नि | 200 | विष्णु | 6 |
| पुषन् | 8 | गंगा | 1 | मित्र | 1 |
| गृह | 90 | विश | 171 | कुलप | 2 |
| माता | 234 | ब्राह्मण | 14 | वैश्य | 1 |
| राजन्य | 1 | सेना | 20 | समिति | 9 |
| वरुण | 30 | इन्द्र | 250 | सोम | 120 |
| सूर्य | 10 | गौ | 176 | यमुना | 3 |
| रुद्र | 3 | अश्व | 315 | कृषि | 24 |

- ऋत् को नैतिक व्यवस्था का नियामक कहा गया था।
- अग्नि, देवता एवं मानवों के बीच मध्यस्थ की भूमिका निभाने वाला देव था।
- मरुत को तूफान का देवता कहा जाता था।
- प्राचीन भारत के दो महाकाव्य हैं – रामायण तथा महाभारत।
- वैदिक लोगों द्वारा ताँबा का प्रयोग पहले किया गया था।

## उत्तर वैदिक काल

**काल –** 1000 ई. पू. - 600 ई. पू.
**पुरातात्विक स्रोत –** चित्रित धूसर मृदभांड, लोहा, स्थायी निवास।
**साहित्यिक स्रोत –** सामवेद ● यजुर्वेद ● अथर्ववेद ● आरण्यक ● उपनिषद्
**लोहे के प्रयोग का साक्ष्य –** ● अतरंजीखेड़ा- 1050 ई. पू. ● गांधार क्षेत्र-1000 ई. पू. ● गंगा-यमुना दोआब-800 ई. पू.

**चार पुरातात्विक स्थलों की खुदाई –** जखेड़ा, हस्तिनापुर, नोह तथा अतरंजीखेड़ा में सर्वाधिक लौहास्त्र मिले हैं।

- 700 ई. पू. के लगभग लोहे का प्रसार उत्तर प्रदेश तथा विदेह में हुआ।
- उत्तर वैदिक ग्रंथ में लोहे को 'श्याम अयस्' तथा 'कृष्ण अयस्' कहा गया है।
- प्रारंभ में उनकी राजधानी असन्दनीवात थी। कालांतर में हस्तिनापुर उनकी राजधानी हुई।
- महत्वपूर्ण राजा हुए–बाल्हिक प्रतिपीय, राजा परीक्षित, जन्मेजय आदि।
- अथर्ववेद में परीक्षित का उल्लेख मिलता है।
- जन्मेजय ने एक नागयज्ञ और दो अश्वमेध यज्ञ करवाए थे।
- अंतिम कुरुवंशी शासक निचक्षु ने बाढ़ से विनष्ट होने के कारण हस्तिनापुर की जगह कौशाम्बी को अपनी राजधानी बनाया।
- महाभारत-कुरुकुल का गृहयुद्ध-950 ई. पू. में हुआ था।
- इस काल में कबीलों ने जनपद रूप ग्रहण किया।
- ❖ जैसे–भरत एवं पुरु ने मिलकर कुरु जनपद की स्थापना की तथा तुर्वस एवं क्रिवि ने मिलकर पांचाल जनपद की स्थापना की।
- मध्य दोआब, आधुनिक बरेली, बदायूँ, फर्रुखाबाद।
- पांचाल दार्शनिक राजाओं के लिए जाना जाता है।
- महत्वपूर्ण शासक प्रवाहण जाबालि थे।
- ❖ आरुणि एवं श्वेतकेतु इसी क्षेत्र से संबद्ध थे।
- गंगा-यमुना दोआब से आर्यों का विस्तार सरयू नदी तक हुआ, जिसके किनारे कोशल राज्य स्थित था।
- आर्यों का विस्तार सरस्वती नदी से वर्णवती नदी के किनारे हुआ और काशी की स्थापना हुई।
- ❖ सदानीरा (गंडक) के किनारे विदेह माधव ने विदेह की नींव डाली।
- विदेह माधव ने अपने गुरु राहुल गण की सहायता से अग्नि के द्वारा इस क्षेत्र का सफाया किया।
- यह शतपथ ब्राह्मण में वर्णित है।
- शतपथ ब्राह्मण में महाजनी प्रथा का पहली बार जिक्र हुआ है तथा सूदखोर को कुसीदिन कहा गया है।

### पुरुषार्थ–मनुष्य के भौतिक सुख एवं आध्यात्मिक सुखों के मध्य सामंजस्य हेतु

1. धर्म–न्याय, सद्‌गुण, नैतिकता, कर्तव्य पालन
2. अर्थ–अर्थ (धन) की प्राप्ति और मर्यादा से उपभोग
3. काम–धर्माचरण एवं सृष्टि के विकास हेतु सन्तानोत्पत्ति
4. मोक्ष–जीवन चक्र से मुक्ति

- शतपथ ब्राह्मण में 12 प्रकार के रत्नियों का विवरण मिलता है।
- पुनर्जन्म का सिद्धांत सर्वप्रथम शतपथ ब्राह्मण में दिखाई देता है।
- ऋग्वेद में राजा के दैवी अधिकारों की पुरु द्वारा घोषणा 'मैं इन्द्र हूँ', 'मैं वरुण हूँ'।
- तैत्तिरीय उपनिषद् में प्रजापति द्वारा इन्द्र को राजा नियुक्त किये जाने की चर्चा।
- सुनियोजित रूप में 'ऐतरेय ब्राह्मण' में 'राजत्व का सिद्धांत' मिलता है।
- देवताओं द्वारा निरंतर पराजय के पश्चात् सोम को राजा नियुक्त कर तथा उनके नेतृत्व में जीतना।
- राजा की शक्ति में वृद्धि एवं राजपद वंशानुगत हुआ।
- 'शतपथ ब्राह्मण' में 'राजा के निर्वाचन' की चर्चा, निर्वाचित राजा 'विशपति' कहलाते थे।
- 'शतपथ ब्राह्मण' में अत्याचारी शासक दुष्टहीतु पौसायन को सृजन द्वारा सिंहासनाच्युत किये जाने की जानकारी देता है।
- 'ताण्ड्य ब्राह्मण' में प्रजा द्वारा राजा के विनाश के लिए एक विशेष यज्ञ किये जाने का उल्लेख है।
- 'शतपथ ब्राह्मण' में अब राजा को 'राष्ट्रिक' कहा जाने लगा जो निरंकुशता पूर्वक प्रजा की संपत्ति का उपभोग करता था।
- 'शतपथ ब्राह्मण' में राजा को 'विषमता' (जनता का भक्षक) कहा गया है।
- 'ऐतरेय ब्राह्मण' में राजा को उत्तर में 'विराट', दक्षिण में 'भोज', पूर्व में 'सम्राट' और पश्चिम में 'स्वराट' कहा जाता था।
- उत्तर वैदिक काल में तीन आश्रम - ब्रह्मचर्य, गृहस्थ एवं वानप्रस्थ होता था।
- परन्तु कालान्तर में संन्यास नाम से चौथा आश्रम भी इस व्यवस्था का अंग बन गया।
- चार आश्रम व्यवस्था बुद्ध काल एवं सूत्रकाल में स्थापित हुई।
- यम और नचिकेता और उनके बीच तीन वर प्राप्त करने की कहानी कठोपनिषद् में वर्णित है।
- छंदोग्य उपनिषद् में 'इतिहास पुराण' को स्पष्ट रूप से 'पंचम वेद' कहा गया है।
- अथर्ववेद में मवेशियों की वृद्धि के लिए प्रार्थना की गई है।
- उत्तर वैदिक काल में गोत्र व्यवस्था स्थापित हुई।
- उत्तर वैदिक काल में ही मूर्ति पूजा का आरंभ हुआ।
- अथर्ववेद में सभा तथा समिति को प्रजापति की दो पुत्रियाँ कहा गया है।
- जाबालोपनिषद् में प्रथम बार चारों आश्रम की चर्चा हुई है।
- ऐतरेय ब्राह्मण द्वारा बहुविवाह के प्रचलन का संकेत मिलता है।
- विधवा विवाह का प्रचलन - तैत्तिरीय संहिता में मिलता है।
- विधवा पुत्र को 'देधिपत्य' कहा जाता था।
- शतपथ ब्राह्मण में कृषि की समस्त प्रक्रिया का वर्णन मिलता है।
- काठक संहिता में 24 बैलों द्वारा खींचे जाने वाले हलों का उल्लेख मिलता है।
- उत्तर वैदिक काल में वेद विरोधी और ब्राह्मण विरोधी धार्मिक अध्यापकों को 'श्रमण' नाम से जाना जाता था।
- अथर्वदेव के अनुसार राजा को आय का 16वाँ भाग मिलता था।
- शतपथ ब्राह्मण में एक स्थान पर क्षत्रियों को ब्राह्मणों से श्रेष्ठ बताया गया है।
- अथर्ववेद में सिंचाई के साधन के रूप में वर्णाकूप और नहर (कूल्या) का उल्लेख मिलता है।
- अथर्ववेद में परीक्षित को मृत्युलोक का देवता बताया गया है।
- छांदोग्य उपनिषद् में एक दुर्भिक्ष का उल्लेख मिलता है।

## सिन्धु एवं वैदिक सभ्यता में अंतर

| | वैदिक सभ्यता | | सिन्धु सभ्यता |
|---|---|---|---|
| 1. | ग्रामीण सभ्यता थी। | 1. | नगरीय सभ्यता थी। |
| 2. | लोहे से बने उपकरण प्राप्त हुए हैं। | 2. | लोहे से बने उपकरण प्राप्त नहीं हुए हैं। |
| 3. | घोड़ा एक महत्त्वपूर्ण पशु था। | 3. | घोड़े के निश्चित साक्ष्य नहीं मिले हैं। |
| 4. | गाय को विशेष स्थान प्राप्त था। | 4. | मुद्राओं पर गाय का अंकन नहीं है। |
| 5. | मूर्ति पूजा के निश्चित साक्ष्य नहीं मिले हैं | 5. | मृण्मूर्तियों एवं पाषाण मूर्ति से पता |
| 6. | आर्य अस्त्र-शस्त्र तथा कवच जैसे | 6. | रक्षा उपकरण जैसी वस्तुएं प्राप्त नहीं |
| 7. | व्याघ्र का उल्लेख नहीं मिलता। हाथी का उल्लेख भी कम ही मिलता है। | 7. | मुहरों पर व्याघ्र एवं हाथी का अंकन पर्याप्त मात्रा में है। |
| 8. | वैदिक धर्म पुरुष देवता प्रधान था। | 8. | मातृदेवी की पूजा का प्रचलन ज्यादा था। |

## सोलह संस्कार

### जन्म से मृत्यु तक व्यक्ति के 16 महत्वपूर्ण संस्कार

| | | |
|---|---|---|
| 1. | गर्भाधान | संतान की प्राप्ति के लिए |
| 2. | पुंसवन | पुत्र प्राप्ति के लिए |
| 3. | सीमान्तोन्यन | गर्भ में संतान की रक्षा के लिए |
| 4. | जातकर्म | बच्चे के उत्पन्न होने पर किया जाने वाला संस्कार |
| 5. | नामकरण | नाम रखा जाने वाला संस्कार |
| 6. | निष्क्रमण | पहली बार घर से निकलना |
| 7. | अन्नप्राशन | नवजात शिशु को भोजन के रूप में अन्न देने का प्रारंभ |
| 8. | चूड़ाकर्म | मुण्डन संस्कार |
| 9. | कर्णछेदन | कान में छेद करना |
| 10. | विद्यारंभ | शिक्षा प्रारंभ |
| 11. | उपनयन | यज्ञोपवीत धारण |
| 12. | वेदारंभ | वेद का अध्ययन प्रारंभ |
| 13. | केशान्त | केश का अंत अर्थात् मुण्डन |
| 14. | समावर्त्तन | शिक्षा की समाप्ति पर |
| 15. | विवाह | शादी के समय संस्कार |
| 16. | अन्त्येष्टि | दाह-संस्कार |

### रत्निन (पदाधिकारी)

| | |
|---|---|
| 1. राजा | 2. सेनानी - सेनापति |
| 3. पुरोहित - मंत्री | 4. युवराज - राजा का बड़ा बेटा |
| 5. महिषी - पटरानी | 6. सूत - सारथी |
| 7. ग्रामणी - गांव का मुखिया | 8. क्षतृ - प्रतिहारी |
| 9. संग्रहीता - कोषाध्यक्ष (खजाँची) | 10. भागदुध - कर संग्रहकर्ता (अर्थमंत्री) |
| 11. अक्षवाप - पासे के खेल में राजा का सहयोगी | 12. पालागल - राजा का मित्र और विदूषक का पूर्वज |

| तीन ऋण | | |
|---|---|---|
| 1. ऋषि ऋण | — | प्राचीन ज्ञान, विज्ञान व साहित्य के प्रति कर्तव्य |
| 2. पितृ ऋण | — | पूर्वजों के प्रति कर्तव्य |
| 3. देव ऋण | — | देवताओं एवं भौतिक शक्तियों के प्रति दायित्व |

## पंच महायज्ञ

| यज्ञ | उद्देश्य |
|---|---|
| 1. भूतयज्ञ | जीवधारियों का पालन |
| 2. अतिथि यज्ञ या नृयज्ञ | अतिथियों की सेवा |
| 3. ब्रह्म यज्ञ या ऋषि | स्वाध्याय के लिए |
| 4. देव यज्ञ | अग्नि में हवन के द्वारा देवता को प्रसन्न करने के लिए |
| 5. पितृ यज्ञ | पितरों का तर्पण या संतानोत्पत्ति के निमित्त |

## राजाओं हेतु यज्ञ

1. **राजसूय यज्ञ :** राज्याभिषेक के समय यह याज्ञिक अनुष्ठान किया जाता था। जिससे प्रजा में विश्वास उत्पन्न होता था कि उसके राजा को दिव्य शक्ति प्राप्त है।
2. **अश्वमेध यज्ञ :** राज्य विस्तार हेतु घोड़े को छोड़कर दिग्विजयी होने का प्रतीक।
3. **वाजपेय यज्ञ :** रथों की दौड़ का आयोजन राजा की श्रेष्ठता का प्रतीक।
4. **अग्निष्टोम यज्ञ :** इसमें सात्विक जीवन व्यतीत करते हुए जन कल्याण हेतु अग्नि को पशुबलि दी जाती थी।

## ऐतरेय ब्राह्मण में वर्णित शासन प्रणाली

| | | |
|---|---|---|
| पूर्व | — | साम्राज्य-सम्राट |
| पश्चिम | — | स्वराज-स्वराट |
| उत्तर | — | वैराज्य-विराट |
| दक्षिण | — | भोज्य-भोज |
| मध्यदेश | — | राज्य-राजा |

### विवाह के प्रकार

1. **ब्रह्म विवाह** — लड़की का पिता अपनी इच्छा से अपनी पुत्री को किसी उपयुक्त पति को बिना कुछ प्रतिफल लिए देने का प्रस्ताव करता था।
2. **दैव विवाह** — पिता अपनी पुत्री पुरोहित को ब्याहते थे।
3. **आर्ष विवाह** — विवाह करने वाला पुरुष कन्या के पिता के प्रति सम्मान प्रदर्शित करने के लिए, न कि प्रतिफल के रूप में, उसे बैलों की एक जोड़ी देता था।
4. **प्रजापत्य विवाह** — विवाह का प्रस्ताव विवाहार्थी की ओर से आता था।
5. **असुर विवाह** — विवाहार्थी पुरुष की ओर से लड़की के पिता को नकद या वस्तुओं के रूप में प्रतिफल दिया जाता था। यह प्रतिफल विवाह के बाद पति को लौटा दिया जाता था।
6. **गंधर्व विवाह** — प्रेम विवाह, माता-पिता की अनुमति नहीं।
7. **राक्षस विवाह** — कन्या का अपहरण कर विवाह करना।
8. **पैशाच विवाह** — कन्या से बलात्कार कर उससे विवाह।

**नोट :** ● असुर विवाह केवल वैश्य एवं शूद्र में। ● गंधर्व विवाह केवल क्षत्रियों में। ● राक्षस विवाह क्षत्रियों के लिए विहित। ● राक्षस और पैशाच विवाह निंदनीय। ● ब्राह्मणों के लिए सिर्फ प्रथम चार विवाह ही विहित।

### वेदों के ब्राह्मण, आरण्यक, उपनिषद्, पुरोहित और उपवेद

| वेद | ब्राह्मण | आरण्यक | उपनिषद् | पुरोहित | उपवेद |
|---|---|---|---|---|---|
| ऋग्वेद | ऐतरेय, कौषीतकी | ऐतरेय, कौषीतकी | ऐतरेय, कौषीतकी | होतृ | आयुर्वेद |
| सामवेद | ताण्ड्य, षडविंश | छान्दोग्य, जैमिनीय | छान्दोग्योपनिषद्, जैमिनीय उपनिषद् | उद्गाता | गन्धर्वेद |
| यजुर्वेद | तैतिरीय, शतपथ | तैतिरीय, शतपथ | तैतिरीय उपनिषद्, बृहदारण्यक उपनिषद् ईशोपनिषद् | अध्वर्यु | धनुर्वेद |
| अथर्ववेद | गोपथ | कोई नहीं | मुण्डकोपनिषद् | ब्रह्मा | शिल्पवेद |

## महाजनपदों का उदय

- बुद्ध के जन्म के पूर्व लगभग छठी शताब्दी ई. पू. में भारतवर्ष 16 महाजनपदों में बंटा हुआ था।
- इन महाजनपदों का उल्लेख बौद्ध ग्रंथ 'अंगुत्तर निकाय' तथा जैन ग्रंथ 'भगवती सूत्र' में मिलता है।
- कम्बोज राज्य श्रेष्ठ घोड़ों के लिये प्रसिद्ध था।
- चम्पा का प्राचीन नाम मालिनी था।
- वज्जि संघ आठ कुलों का एक संघ था।
- पांचाल को वैदिक सभ्यता का सर्वश्रेष्ठ प्रतिनिधि कहा गया है।
- रामायण से पता चलता है कि तक्षशिला की स्थापना भरत के पुत्र तक्ष ने की थी।

### अंगुत्तर निकाय में उल्लेखित

| | जनपद | राजधानी | क्षेत्र |
|---|---|---|---|
| 1. | अंग | चंपा | भागलपुर, मुंगेर (बिहार) |
| 2. | मगध | गिरिव्रज/राजगृह | पटना एवं गया (बिहार) |
| 3. | काशी | वाराणसी | वाराणसी के आसपास |
| 4. | कोशल | साकेत एवं श्रावस्ती | पूर्वी उत्तर प्रदेश |
| 5. | वज्जि (गणतंत्रात्मक) | वैशाली | मुजफ्फरपुर के आसपास (बिहार) |
| 6. | मल्ल | कुशीनारा/पावा | देवरिया एवं गोरखपुर (उ. प्र.) |
| 7. | चेदि | सुक्तिमती | बुंदेलखण्ड (उ. प्र.) |
| 8. | वत्स | कौशाम्बी | इलाहाबाद (उ. प्र.) |
| 9. | कुरु | इन्द्रप्रस्थ | मेरठ तथा हरियाणा के क्षेत्र |
| 10. | पांचाल | अहिच्छत्र, काम्पिल्य | आधुनिक पश्चिम उत्तर प्रदेश |
| 11. | सूरसेन | मथुरा | मथुरा (उ. प्र.) |
| 12. | गांधार | तक्षशिला | पेशावर तथा कश्मीर |
| 13. | कम्बोज | राजपुरा (हाटक) | उत्तर प्रदेश सीमा प्रान्त |
| 14. | अस्मक (दक्षिण भारत का एकमात्र जनपद) | पोतन या पोटिल | गोदावरी क्षेत्र |
| 15. | अवन्ति | उज्जयिनी/ महिष्मती | मालवा और मध्य प्रदेश |
| 16. | मत्स्य | विराटनगर | जयपुर के आसपास |

- गौतम बुद्ध के समय अवन्ति का राजा प्रद्योत था।
- बुद्ध के समय कोशल का राजा प्रसेनजित था।
- मगध का राज्य बिम्बिसार गौतम बुद्ध का मित्र तथा संरक्षक था।
- बुद्धकालीन सर्वाधिक बड़ा एवं शक्तिशाली गणतन्त्र वैशाली का लिच्छवी (गणतंत्र) था।
- बुद्धकालीन चार शक्तिशाली राजतन्त्र कोशल, मगध, वत्स एवं अवन्ति थे।
- गांधार एवं कम्बोज के क्षत्रियों को वार्ताशास्त्रेप- जीविन: कहा गया है।
- उत्तरापथ मार्ग–उत्तर-पश्चिम से (पुष्कलावती तक्षशिला) से पाटलिपुत्र और ताम्रलिप्ति तक जाता है।
- दूसरा प्रसिद्ध व्यापारिक मार्ग पश्चिम में पाटल से पूर्व में कौशाम्बी तक जाता था, तदुपरान्त उत्तरापथ मार्ग से सम्बद्ध हो जाता था।
- तीसरा मार्ग दक्षिण में प्रतिष्ठान से उत्तर में श्रावस्ती तक जाता था।
- चतुर्थ मार्ग भृगुकच्छ से मथुरा तक (उज्जयिनी होकर) जाता था।
- दक्षिण मार्ग (प्रतिष्ठान से श्रावस्ती) बहुत महत्त्वपूर्ण था। इस व्यापारिक मार्ग पर व्यापार की बहुमूल्य वस्तुओं (मुक्ता, मणि, हीरा, सोना, शंख आदि) के कारवां चलते थे।
- पूर्वी तट पर ताम्रलिप्ति एवं पश्चिमी तट पर मृगुकच्छ महत्वपूर्ण पत्तन थे।

## प्राचीन कालीन धर्म : जैन, बौद्ध, वैष्णव, शैव, ईसाई एवं इस्लाम धर्म

### जैन धर्म

- जैन परम्परा के अनुसार इस धर्म में 24 तीर्थंकर हुए।
- जैन धर्म के पहले तीर्थंकर एवं संस्थापक ऋषभदेव थे।
- अंतिम तीर्थंकर महावीर स्वामी के अनुयायी निर्ग्रन्थ कहलाते थे।
- महावीर जैन धर्म के वास्तविक संस्थापक थे।
- महावीर स्वामी का जन्म 540 ई.पू. में वैशाली के कुण्डग्राम में हुआ था, यह बिहार राज्य में है।
- उनकी माता त्रिशला वैशाली के लिच्छवी गणराज्य के प्रमुख चेटक की बहन थी।
- महावीर स्वामी को जम्भृक ग्राम के निकट, ऋजुपालिका नदी के तट पर ज्ञान प्राप्त हुआ था।
- महावीर की पत्नी का नाम यशोदा था।
- यशोदा से जन्म लेने वाली महावीर की पुत्री प्रियदर्शना का विवाह जमालि नामक क्षत्रिय से हुआ, वह महावीर का प्रथम शिष्य था।
- जैन धर्म में पूर्ण ज्ञान को कैवल्य ज्ञान कहा गया है।
- पिता सिद्धार्थ ज्ञातृक क्षत्रियों के संघ के प्रधान थे। उनके बड़े भाई नंदिवध ंन थे।
- महावीर स्वामी की मृत्यु पावापुरी में 468 ई. पू. में हुई थी।
- बौद्ध साहित्य में महावीर को निगण्ठ-नाथपुत्त कहा गया है।

**महावीर स्वामी से संबंधित तथ्य**

| | |
|---|---|
| सिद्धार्थ | – महावीर स्वामी के पिता का नाम |
| त्रिशला | – महावीर स्वामी की माता का नाम |
| यशोदा | – महावीर स्वामी की पत्नी |
| प्रियदर्शना | – महावीर स्वामी की पुत्री |
| जामालि | – महावीर स्वामी के दामाद (प्रथम शिष्य) |

- जैन भिक्षुओं को नग्न रहने की शिक्षा महावीर स्वामी ने दी थी।
- पार्श्वनाथ के चार व्रतों अहिंसा (हिंसा नहीं करना), अमृषा या झूठ न बोलना, अचौर्य या चोरी न करना, अपरिग्रह या संपत्ति अर्जित नहीं करना में महावीर ने पाँचवाँ व्रत ब्रह्मचर्य या इंद्रिय निग्रह करना जोड़ा।
- जैन धर्म का सबसे महत्त्वपूर्ण सिद्धान्त अहिंसा था।
- जैन साहित्य को अंग कहते हैं।
- जैन धर्म के मौलिक ग्रन्थ चौदह पूर्व कहलाते हैं।
- जैन धर्म के अनुसार निर्वाण प्राप्ति के लिये त्रिरत्न का अनुशीलन आवश्यक है।
- जैन धर्म का सबसे बड़ा केन्द्र चम्पानगरी था।

**जैन धर्म के 24 तीर्थंकर**

| | |
|---|---|
| 1. ऋषभदेव | 2. अजितनाथ |
| 3. सम्भवनाथ | 4. अभिनंदन स्वामी |
| 5. सुमति नाथ | 6. पद्मप्रभु |
| 7. सुपार्श्वनाथ | 8. चन्द्रप्रभु |
| 9. सुविधिनाथ | 10. शीतलनाथ |
| 11. श्रेयांसनाथ | 12. वासुपूज्यनाथ |
| 13. विमलनाथ | 14. अनन्तनाथ |
| 15. धर्मनाथ | 16. शान्तिनाथ |
| 17. कुन्थुनाथ | 18. अरनाथ |
| 19. मल्लिनाथ | 20. मुनिसुब्रत |
| 21. नेमिनाथ | 22. अरिष्टनेमि |
| 23. पार्श्वनाथ | 24. महावीर स्वामी |

- शुरू में जैनियों द्वारा प्राकृत भाषा को अपनाया गया।
- महावीर स्वामी ने अपना प्रथम उपदेश राजगीर में (पालि भाषा में) दिया था।
- कर्नाटक में जैन धर्म को चन्द्रगुप्त मौर्य ले गया।

**जैन सिद्धों की पांच श्रेणियाँ**

1. तीर्थंकर–जिसने मोक्ष प्राप्त किया हो।
2. अर्हत–जो निर्वाण प्राप्ति की ओर अग्रसर हो।
3. आचार्य–जो जैन भिक्षु समूह का प्रमुख हो।
4. उपाध्याय–जैन शिक्षक।
5. साधु–सभी जैन भिक्षु।

- श्रवणबेलगोला में गोमतेश्वर की मूर्ति चामुण्डराय ने बनवाई।
- कलिंग राजा खारवेल तथा अजातशत्रु का पुत्र उदायिन जैन धर्म के अनुयायी थे।
- महावीर स्वामी ने प्राकृत भाषा को प्रचार का माध्यम बनाया।
- मथुरा मूर्तिकला के विकास में जैन मत का सर्वाधिक योगदान रहा।
- जैन धर्म दो सम्प्रदायों, श्वेताम्बर एवं दिगम्बर में बँट गया।
- जैन धर्म का प्रसिद्ध सिद्धान्त स्याद्वाद (सप्तभंगी ज्ञान) या अनेकान्तवाद है।
- जैनियों द्वारा शरीर को भूखा रखकर प्राण त्यागने को 'सल्लेखना विधि' कहा जाता है।
- जैन मठों को बसदि कहा जाता था।

- महावीर की मृत्यु के बाद सुधर्मन, जो गंधर्व था, जैन धर्मगुरु बना।
- जैन धर्म में ईश्वर एवं आत्मा की मान्यता नहीं है।
- जैन तीर्थंकर ऋषभदेव तथा अरिष्टनेमि का उल्लेख ऋग्वेद में मिलता है।
- विष्णु पुराण तथा भागवत पुराण में ऋषभदेव का उल्लेख नारायण के अवतार के रूप में मिलता है।
- भद्रबाहु एवं उनके अनुयायियों को दिगम्बर कहा गया।
- ये दक्षिणी जैनी कहे जाते थे।
- स्थूलभद्र एवं उनके अनुयायियों को श्वेताम्बर कहा गया।
- जैन अनुश्रुतियों के अनुसार पार्श्वनाथ को 100 वर्ष की आयु में 'सम्मेद पर्वत' पर निर्वाण प्राप्त हुआ।
- जैन धर्मानुसार ज्ञान के तीन स्रोत हैं–(1) प्रत्यक्ष (2) अनुमान (3) तीर्थंकरों के वचन।
- महावीर के जीवन काल में ही 10 गणधर की मृत्यु हो गयी, महावीर के बाद केवल सुधर्मण जीवित था।
- खारवेल के हाथी गुम्फा की गुफाओं में प्रारंभिक जैन के अवशेष मिलते हैं।
- जैन धर्म पुनर्जन्म एवं कर्मवाद में विश्वास करता है। उनके अनुसार कर्मफल ही जन्म तथा मृत्यु का कारण है।
- राजस्थान में माउण्ट आबु पर दिलवाड़ा मंदिर का निर्माण जैन धर्म के अनुयायियों द्वारा किया गया।
- जैन परम्परा के अनुसार अरिष्टनेमि कृष्ण के समकालीन थे।
- चम्पा के शासक दधिवाहन की पुत्री चन्दना महावीर की पहली महिला भिक्षुणी थी।

### प्रथम जैन संगीति

**समय** — 300 ई० पू०
**स्थल** — पाटलिपुत्र
**अध्यक्ष** — स्थूलभद्र
**शासक** — चन्द्रगुप्त मौर्य
**कार्य** — 12 अंगों का प्रणयन, जैन धर्म का दो भागों में विभाजन—श्वेताम्बर और दिगम्बर।

### द्वितीय जैन संगीति

**समय** — 512 ई०
**स्थल** — वल्लभी
**अध्यक्ष** — देवर्धिक्षमाश्रमण
**कार्य** — धर्म ग्रंथों को अन्तिम रूप से संकलित कर लिपिबद्ध किया गया।

## बौद्ध धर्म

- बौद्ध धर्म की स्थापना गौतम बुद्ध ने की थी।
- गौतम बुद्ध का जन्म नेपाल की तराई में स्थित कपिलवस्तु के लुम्बिनी ग्राम में शाक्य कुल में 563 ई. पू. में हुआ था।
- बुद्ध की माता का नाम महामाया था जो कोसल राजतंत्र (कोलिय वंश) की कन्या थीं।
- बुद्ध का अर्थ ज्ञान होता है।
- गौतम बुद्ध को बोधगया में, फल्गु नदी के किनारे पीपल वृक्ष के नीचे ज्ञान प्राप्त हुआ था।
- बुद्ध का पालन-पोषण मौसी प्रजापति गौतमी ने किया था।

### भगवान बुद्ध से संबंधित तथ्य

| | |
|---|---|
| महामाया | गौतम बुद्ध की माँ। |
| राहुल | गौतम बुद्ध का पुत्र। |
| चन्ना | बुद्ध का सारथि। |
| चुन्द सुनार | जिसका दिया सूअर का मांस खाने से बुद्ध की मृत्यु हुई। |
| कंथक | बुद्ध का प्रिय घोड़ा। |
| सुजाता | कृषक बाला, जिसकी दी खीर बुद्ध ने खाई। |
| प्रजापति गौतमी | बुद्ध की मौसी, प्रथम बौद्ध भिक्षुणी। |
| आलार कलाम | जिससे बुद्ध ने योग एवं उपनिषद् की शिक्षा ली। |
| सुभच्छ | जिसे बुद्ध ने अपना अंतिम उपदेश दिया था। |
| देवदत्त | बुद्ध का चचेरा भाई। |
| अश्वत्थ | वह पीपल वृक्ष जिसके नीचे बुद्ध को ज्ञान प्राप्त हुआ। |
| स्तूप | महापरिनिर्वाण के प्रतीक। |
| वैशाली | यहाँ बुद्ध का अंतिम वर्षा काल बीता था। |
| शालवृक्ष | जिसके नीचे बुद्ध की मृत्यु हुई। |
| शुद्धोधन | बुद्ध के पिता एवं शाक्य कुल के मुखिया। |
| यशोधरा | बुद्ध की पत्नी। |
| राहुल | बुद्ध के पुत्र |

### बुद्ध के जीवन से जुड़े प्रतीक

1. हाथी — बुद्ध के गर्भ में आने का प्रतीक
2. कमल — जन्म का प्रतीक
3. सांड़ — यौवन का प्रतीक
4. घोड़ा — गृह-त्याग का प्रतीक
5. पीपल — ज्ञान का प्रतीक
6. शेर — समृद्धि का प्रतीक
7. पदचिह्न — निर्वाण का प्रतीक
8. स्तूप — मृत्यु का प्रतीक

- बुद्ध के प्रारम्भिक गुरु आलारकलाम थे तथा उसके बाद राजगीर के रुद्रकरामपुत्त से शिक्षा प्राप्त की।
- बौद्ध धर्म ने वर्ण व्यवस्था एवं जाति व्यवस्था का विरोध किया।
- भारतीय दर्शन में तर्कशास्त्र का विकास बौद्ध धर्म के प्रभाव का परिणाम था।
- गौतम बुद्ध ने 29 वर्ष की अवस्था में गृह त्याग दिया।
- बुद्ध के गृहत्याग की घटना को महाभिनिष्क्रमण कहा गया है।
- बुद्ध सात वर्ष तक वे ज्ञान की खोज में इधर-उधर भटकने के बाद सर्वप्रथम वैशाली के समीप अलार कलाम तथा उदक रामपुत्र नामक दो गुरुओं से शिक्षा ली थी।
- अलार-कलाम सांख्य सम्प्रदाय के अनुयायी थे।

### महात्मा बुद्ध के जीवन से जुड़े चार दृश्य, जिन्हें देखकर उन्हें वैराग्य की भावना प्रबल हो उठी

1. प्रथम दृश्य – वृद्ध
2. द्वितीय दृश्य – रोगग्रस्त व्यक्ति
3. तृतीय दृश्य – मृतक व्यक्ति
4. चतुर्थ दृश्य – प्रसन्न संन्यासी

- छः वर्ष तक अथक परिश्रम एवं घोर तपस्या के बाद वैशाख पूर्णिमा की रात फल्गु, निरंजना या पुनपुन नदी के किनारे पीपल वृक्ष के नीचे सिद्धार्थ को ज्ञान प्राप्त हुआ। इसी दिन से वे तथागत हो गये।
- उरुवेला से बुद्ध सारनाथ (ऋषिपत्तनम एवं मृगदाव) आये।
- यहाँ पर उन्होंने पांच ब्राह्मण संन्यासियों (भद्दि, वप्पा, अश्जीत (अस्सागी), महानाम तथा कौण्डिय) को अपना प्रथम उपदेश दिया जिसे बौद्ध ग्रन्थों में 'धर्मचक्र प्रवर्तन' नाम से जाना जाता है।
- महात्मा बुद्ध ने तपस्स एवं काल्पिक नामक दो शूद्रों को बौद्ध धर्म का सर्वप्रथम अनुयायी बनाया।
- बुद्ध ने सर्वाधिक उपदेश श्रावस्ती में दिये।
- बौद्ध धर्म का सर्वाधिक प्रचार कोशल राज्य में हुआ।
- बुद्ध के पाँच प्रिय शिष्य अनिरुद्ध, आनन्द, उपालि, सारिपुत्र तथा मोद्गल्यायन थे।
- बुद्ध के प्रसिद्ध अनुयायी शासक बिम्बिसार, प्रसेनजित तथा उदयन थे।
- बुद्ध अपना प्रचार करते हुए वे मल्लों की राजधानी पावा पहुँचे, जहाँ वे चुंद नामक लुहार की आम्रवाटिका में ठहरे।
- उसने बुद्ध को सूकर मछव खाने को दिया, इससे उन्हें रक्तातिसार हो गया और भयानक पीड़ा उत्पन्न हुई।
- इस वेदना के बाद भी वे कुशीनारा (मल्ल गणराज्य की राजधानी) पहुँचे।
- यहीं 483 ई. पू. में 80 वर्ष की अवस्था में उन्होंने शरीर त्याग दिया इसे बौद्ध ग्रंथों में महापरिनिर्वाण कहा जाता है।
- बौद्ध धर्म के त्रिरत्न हैं–

**त्रिरत्न**

बुद्ध | धम्म | संघ

- बौद्ध भिक्षुओं के निवास स्थान को विहार कहा जाता है। इनके पूजास्थल को चैत्य कहा गया है।
- बौद्ध दर्शन में केन्द्रीय सिद्धान्त चार आर्यसत्य एवं प्रतित्यसमुत्पाद है।
- चतुर्थ बौद्ध संगीति के बाद बौद्धधर्म दो भागों हीनयान एवं महायान में विभाजित हो गया।

### बुद्ध के चार आर्य सत्य

| | |
|---|---|
| 1. दु:ख | : संसार में सर्वत्र दु:ख है तथा जीवन दु:खों एवं कष्टों से पूर्ण है। |
| 2. दु:ख समुदाय | : प्रत्येक वस्तु का कोई न कोई कारण अवश्य होता है जो दु:ख का भी कारण है। |
| 3. दु:ख निरोध | : दु:ख का अंत संभव है। |
| 4. दु:ख निरोधगामिनी प्रतिपदा | : दु:ख के मूल अविद्या के विनाश का उपाय अष्टांगिक मार्ग है। |

### बुद्ध के अष्टांगिक मार्ग

(1) सम्यक् दृष्टि (2) सम्यक् संकल्प (3) सम्यक् वाणी (4) सम्यक् कर्मान्त (5) सम्यक् अजीव (6) सम्यक् व्यायाम (7) सम्यक् स्मृति (8) सम्यक् समाधि।

### गौतम बुद्ध के जीवन की घटनाएं

| | |
|---|---|
| 1. **महाभिनिष्क्रमण** | गृह त्याग की घटना |
| 2. **सम्बोधि** | ज्ञान प्राप्त होने की घटना |
| 3. **धर्मचक्रप्रवर्तन** | उपदेश देने की घटना |
| 4. **महापरिनिर्वाण** | निर्वाण |

बौद्ध साहित्य के तीन पिटक निम्नलिखित हैं :

1. सूत पिटक – बुद्ध के धार्मिक विचार और वचनों का संग्रह
2. विनय पिटक – बौद्ध दर्शन की विवेचना और नियम
3. अभिधम्म पिटक– बुद्ध के दार्शनिक विचार

### बुद्ध के जीवन के चार स्थल

| | | |
|---|---|---|
| 1. लुम्बिनी | – | जन्म |
| 2. बोधगया | – | ज्ञान प्राप्ति |
| 3. सारनाथ | – | प्रथम धर्मोपदेश |
| 4. कुशीनारा | – | मृत्यु |

- बुद्ध का जन्म, ज्ञान प्राप्ति तथा महापरिनिर्वाण वैशाख पूर्णिमा को हुई।
- अपने प्रिय शिष्य आनन्द के आग्रह पर बुद्ध ने वैशाली संघ में स्त्रियों के प्रवेश को अनुमति दी।
- अल्पवयस्क, चोर, हत्यारे, ऋणी, राजा के सेवक, दासी तथा रोगी बौद्ध संघ में प्रवेश से वंचित थे।
- आजीवक सम्प्रदाय की स्थापना मक्खलि गोशाल ने की थी।
- यह सम्प्रदाय बुद्ध के समकालीन था।

### पाँच बुद्ध

1. कुकुच्छानंद 2. कनक भंजन 3. कश्यप
4. शाक्य मुनि (गौतम बुद्ध) 5. मैत्रेय (भावी बुद्ध)
* अंतिम बुद्ध सामंतभद्र होंगे।

**संघ सभा का प्रस्ताव पाठ**—अनुसावन
**संघ में प्रवेश**—उपसंपदा

- बौद्ध धर्म की पवित्र दिशा दक्षिण थी।
- बौद्ध धर्म का प्रचार पालि भाषा में किया गया।
- बौद्ध ग्रंथों में संस्कृत का प्रयोग अभिधम्म पिटक से प्रारम्भ होता है।
- हीनयान के दो भाग हैं–वैभाषिक एवं सौत्रान्तिक।
- बौद्ध धर्म के अनुसार इच्छा सब कष्टों का कारण है।
- निर्वाण बौद्ध धर्म का परम लक्ष्य है, जिसका अर्थ है, 'दीपक का बुझ जाना' अर्थात् जीवन-मरण चक्र से मुक्त हो जाना।
- मिलिंदपन्हो पुस्तक (मिलिंद के प्रश्न) 100 ई.पू. के एक बौद्ध काव्य है जिसमें भारतीय यूनानी राजा मिनेंडर प्रथम के प्रश्नों का उत्तर बौद्ध विद्वान नागसेन द्वारा किया गया है। इसमें राजा मिलिंद और नागसेन का संवाद है।
- बौद्धधर्म ने समाज के दो वर्गों को अपने साथ जोड़कर एक महत्वपूर्ण प्रभाव छोड़ा। ये वर्ग स्त्रियां एवं शूद्र थे।
- बुद्ध को तथागत एवं शाक्यमुनि नामों से भी जाना जाता है।
- बुद्ध अनात्मवादी थे, पर पुनर्जन्म में विश्वास करते थे।
- कालान्तर में महायान सम्प्रदाय दो भागों में बंट गया–शून्यवाद (माध्यमिक) और विज्ञानवाद (योगाचार)।
- शून्यवाद के प्रवर्तक नागार्जुन थे।
- विज्ञानवाद के प्रवर्तक मैत्रेय नाथ थे।
- बुद्ध वर्षाकाल में वेलुवन तथा जेतवन में निवास करते थे।
- महात्मा बुद्ध ने सर्वप्रथम उरुवेला में तपस्या की।
- बुद्ध के अष्टांगिक मार्ग का स्रोत तैत्तिरीय उपनिषद् है।
- निर्वाण को सरल बनाने के लिए बुद्ध के दशशील (1) अहिंसा (2) सत्य (3) अस्तेय (चोरी न करना), (4) अपरिग्रह (किसी प्रकार की सम्पत्ति न रखना) (5) मद्य-पान (नशा) न करना (6) असमय भोजन न करना (7) सुखदायी बिस्तर पर नहीं सोना, (8) धन-संग्रह नहीं करना (9) स्त्रियों से दूर रहना और (10) नृत्य-संगीत से दूर रहना।

- सूत्तपिटक को प्रारंभिक बौद्ध धर्म का इनसाइक्लोपीडिया कहा जाता है।
- बुद्ध के पूर्व जन्म की कथाएं (जातक कथाएं) सूत्तपिटक में वर्णित है।
- बुद्ध के 'पंचशील सिद्धांत का वर्णन छान्दोग्य उपनिषद् में मिलता है।
- ❖ तिब्बत में बौद्ध धर्म का प्रचार करने वाले बौद्ध भिक्षु पद्मसंभव थे।
- दिव्यवंदना, दोहाकोसा, वज्रवेदिका तथा वामसाथपाकसिनी में से एक भारत में उत्पन्न सबसे बाद वाला बौद्ध धर्म का ग्रंथ वामसाथपाकसिनी है।

## हीनयान और महायान में अंतर

| हीनयान सम्प्रदाय | महायान सम्प्रदाय |
|---|---|
| 1. हीनयान महात्मा बुद्ध द्वारा स्थापित मूल धर्म था। | 1. महायान इसका संशोधित रूप था। |
| 2. ये महात्मा बुद्ध को एक महापुरुष मानते हैं। | 2. ये महात्मा बुद्ध की देवतुल्य उपासना करते थे। |
| 3. ये बोधिसत्व में विश्वास नहीं करते हैं। | 3. ये बोधिसत्व में विश्वास करते हैं। |
| 4. इनकी धार्मिक ग्रन्थ पालि भाषा में है। | 4. इनकी धार्मिक ग्रन्थ संस्कृत भाषा में है। |
| 5. ये संन्यासी जीवन पर बल देते हैं। | 5. ये गृहस्थ जीवन पर बल देते हैं। |
| 6. ये लोग मूर्ति पूजा में विश्वास नहीं करते। | 6. महायान शाखा के अंतर्गत बुद्ध की पहली मूर्ति बनी तथा ईश्वर के रूप में पूजने की परंपरा यहीं से शुरू हुई |
| 7. हीनयान सम्प्रदाय प्रधानत: दार्शनिक है। | 7. महायान सम्प्रदाय शुद्धत: धार्मिक सम्प्रदाय है। |

- वज्रयान सम्प्रदाय का उदय सातवीं शताब्दी में हुआ था।
- यह बौद्ध धर्म में बढ़ते तन्त्र-मन्त्र के प्रभाव का परिणाम था।
- ये शक्ति की उपासना करते थे।
- इसमें तारा आदि देवियों को महत्त्व प्राप्त है।
- इसके सिद्धांत 'मंजुश्री मूलकल्प' तथा 'गुह्य समाज' नामक ग्रन्थों में निहित है।
- अशोक, मिनाण्डर, कनिष्क, हर्षवर्द्धन ने बौद्ध धर्म के प्रसार में विशिष्ट योगदान दिया था।
- बिहार एवं बंगाल के पाल शासकों ने बौद्ध धर्म के प्रचार-प्रसार में अद्वितीय योगदान दिया था।
- ❖ नालन्दा तथा विक्रमशिला विश्वविद्यालय बौद्ध शिक्षा के प्रधान केन्द्र थे।
- ❖ करमापा लामा तिब्बत के बौद्ध संप्रदाय 'कंग्यूपा' वर्ग से संबंधित है।

| चार बौद्ध संगीतियाँ के उद्देश्य | |
|---|---|
| **प्रथम** | बुद्ध के उपदेशों को दो पिटकों विनय एवं सूट में संकलित किया |
| **द्वितीय** | अनुशासन को लेकर मतभेद के कारण बौद्ध धर्म स्थविर एवं महासंधिक में बंट गया। |
| **तृतीय** | तीसरा पिटक अभिधम्म जोड़ा गया। |
| **चतुर्थ** | बौद्ध धर्म का दो सम्प्रदायों हीनयान एवं महायान में विभाजन |

- बुद्ध ने मध्यम मार्ग (मध्यम प्रतिपदा) का उपदेश दिया था।
- बुद्ध पावा से कुशीनारा चले गये और यहीं पर सुभच्छ को अपना अंतिम उपदेश दिया।
- बुद्ध अपनी मृत्यु के उपरान्त बौद्ध संघ के नेतृत्व के लिए किसी को नामित नहीं किया था। बल्कि अपने उपदेशों (धर्म एवं विनय) को ही मार्ग दर्शन बताया।

**बौद्ध संगीति**

| सभा | समय | स्थान | अध्यक्ष | शासनकाल |
|---|---|---|---|---|
| प्रथम बौद्ध संगीति | 483 ई. पूर्व | राजगृह | महाकस्सप | अजातशत्रु |
| द्वितीय बौद्ध संगीति | 383 ई. पूर्व | वैशाली | सबाकामी | कालाशोक |
| तृतीय बौद्ध संगीति | 255 ई. पूर्व | पाटलिपुत्र | मोगलिपुत्त तिस्स | अशोक |
| चतुर्थ बौद्ध संगीति | ई. की प्रथम शताब्दी | कुण्डलवन (कश्मीर) | वसुमित्र उपाध्यक्ष- अश्वघोष | कनिष्क |

### बुद्ध के अवशेष

| बुद्ध के अवशेष को निम्न व्यक्तियों ने आपस में बांटकर 8 स्तूप बनाये थे- | |
|---|---|
| 1. मगध नरेश अजातशत्रु | 2. वैशाली के लिच्छवि |
| 3. कपिलवस्तु के शाक्य | 4. अल्लकप्प के बुली |
| 5. रामग्राम के कोलिय | 6. बेठद्वीप के ब्राह्मण |
| 7. पावा और कुशीनगर के मल्ल | 8. पिप्पलिवन के मोरिय |

## वैष्णव ( भागवत ) धर्म

- वैष्णव मत का उद्भव गुप्तकाल में भागवत धर्म को अधिगृहित तथा अपने अन्दर विलीन करने का कार्य प्रारम्भ किया।
- विष्णु बहुत से स्थानीय देवताओं का सम्मिश्रण हैं।
- अवतारवाद के सिद्धांत को वैष्णव मत के अन्दर लोकप्रिय देवताओं को संयोजित कर और लोकप्रिय बनाया गया।

**आस्तिक षड्दर्शन का संक्षिप्त परिचय**

| | दर्शन | प्रवर्तक | अन्य विद्वान/व्याख्याकार |
|---|---|---|---|
| 1. | पूर्व मीमांसा | जैमिनि (मीमांसा-सूत्र) | शबरस्वामी, प्रभाकर कुमारिल इत्यादि। |
| 2. | उत्तर मीमांसा (वेदान्त) | बादरायण (ब्रह्म-सूत्र) | शंकराचार्य, वाचस्पति, रामानुज, माध्वाचार्य इत्यादि। |
| 3. | न्याय | गौतम (न्याय-सूत्र) | वात्स्यायन, उदयनाचार्य, जयन्तभट्ट इत्यादि। |
| 4. | वैशेषिक | कणाद या उलूक (वैशेषिक-सूत्र) | प्रशस्तपाद, केशवमिश्र तथा विश्वनाथ। |
| 5. | सांख्य | कपिल (सांख्य-सूत्र) | ईश्वरकृष्ण (सांख्यकारिका), वाचस्पति इत्यादि। |
| 6. | योग | पतञ्जलि (योग-सूत्र) | व्यास। |

**अन्य धर्म-मत तथा उनके संस्थापक**

| | सम्प्रदाय | संस्थापक |
|---|---|---|
| 1. | पाशुपत | लकुलीश |
| 2. | प्रत्यभिज्ञा | वसुगुप्त |
| 3. | स्पंदस्तार | कलत और सोमानंद |
| 4. | लिंगायत | बासव |
| 5. | अद्वैत | शंकराचार्य एवं बादरायण |
| 6. | विशिष्टाद्वैत एवं श्री सम्प्रदाय | रामानुजाचार्य |
| 7. | ब्रह्म सम्प्रदाय | मध्वाचार्य |
| 8. | सनक सम्प्रदाय | निम्बार्काचार्य |
| 9. | आजीवक | मक्खालि घोषाल |
| 10. | नित्यवादी | पकुध कच्चायन |
| 11. | अनिश्चयवादी | संजय वेट्ठलिपुत्र |
| 12. | घोर अक्रियवादी | पुरण कश्यप |
| 13. | भौतिकवादी (यादृच्छावाद) | अजीत केशकाम्बलिन |

- वैष्णव धर्म के विषय में प्रारंभिक जानकारी उपनिषदों से मिलती है।
- जिसका विकास भागवत धर्म से हुआ।
- ❖ भागवत सम्प्रदाय का सर्वोच्च देवता 'वासुदेव कृष्ण' हैं, जिसकी बाद में पहचान विष्णु के साथ की गयी है।
- दक्षिण भारत (तमिल भूमि) में भागवत आंदोलन का प्रसार 12 अलवारों द्वारा किया गया।
- भागवत सम्प्रदाय के प्रमुख तत्व भक्ति एवं अहिंसा है।
- भक्ति का अर्थ प्रेममय निष्ठा निवेदन है।
- अहिंसा का अर्थ किसी जीव का वध न करना है।
- ❖ वैष्णव धर्म के प्रवर्तक कृष्ण थे, जो बृष्णि कबीले के थे और उनका निवास स्थान मथुरा था।
- ❖ कृष्ण का उल्लेख सर्वप्रथम छांदोग्य उपनिषद् में देवकी-पुत्र और अंगिरस के शिष्य के रूप में हुआ है।
- विष्णु के दस अवतारों का उल्लेख मत्स्य पुराण में मिलता है।
- विष्णु के दस अवतार हैं–मत्स्य, कूर्म, वराह, (शूकर), नरसिंह, वामन, परशुराम (भृगुपति), राम, बलराम (कृष्ण), बुद्ध एवं कल्कि।
- ❖ अवतारवाद का सर्वप्रथम उल्लेख भगवद्गीता में मिलता है।
- वैष्णव धर्म में ईश्वर को प्राप्त करने के लिए सर्वाधिक महत्त्व भक्ति को दिया गया है।
- वैष्णव धर्म का सर्वाधिक विकास गुप्त काल में हुआ।

## शैव धर्म

- शैव धर्म की उत्पत्ति वैष्णव धर्म से भिन्न प्रकार के अति प्राचीन अतीत में निहित थी।
- पूर्व-वैदिक धर्म अर्थात् सिंधु धर्म का महत्वपूर्ण अवयव पशुपति महादेव की पूजा करना था।
- इस देवता को आदिम-शिव कहकर वर्णित किया गया है और वैदिक धर्म विशेषकर उत्तर-वैदिक धर्म में रुद्र को पशुपति महादेव का वैदिक प्रतिरूप माना गया है।
- शैव मत उत्तर-उपनिषद् काल में उस समय सुस्पष्ट तौर पर प्रकट हुआ जब शिव की पहचान आतंकित करने वाले वैदिक देवता रुद्र के साथ की गयी।
- शिव का अभिप्राय 'मंगलमय होना' है।
- लिंग के रूप में शिव की व्यापक स्तर पर पूजा होती है।
- यह अभिव्यक्ति तथा जीवन का स्रोत है और जिसके अन्दर स्वाभाविक रूप में विखण्डन एवं मृत्यु के बीज विद्यमान है।
- स्त्री का प्रजनन अवयव (योनि) शिव की शक्ति का प्रतिनिधित्व करता है और यह उसकी लौकिक ऊर्जा का मानवीय गुण है।
- जब योनि तथा लिंग का एक साथ प्रतिनिधित्व किया जाता है तब यह सृष्टि के महान प्रजनन सिद्धान्तों के महत्त्व को दर्शाता है।
- कुछ पुराणों ने सम्पूर्ण सृष्टि की पहचान शिव के साथ उसके पांच रूपों तत्पुरुष, नामदेव, अघोरेश, साधोजात एवं इशान की अवधारणा के माध्यम से की है।
- शिव के पाँचों रूपों को पाँच दिशाओं का शासक बताया गया है जिसमें पाताल और आकाश के चार बिंदु शामिल हैं और यह स्थलीय विस्तार की पूर्णता को निश्चित करता है।
- शिव के 11 रुद्र अवतार हैं–कपिल, पिंगल, भीम, विरुपाक्ष, विलोहित, शास्त्र, अजपाद, अहिरबुधन्य, शम्भू, चाँद तथा भाव।
- शिव के निम्नलिखित अवतार हैं–अर्द्धनारीश्वर, नंदी, शरभ, गृहपति, नीलकंठ, ऋषि दुर्वाशा, महेश, हनुमान, वृषभ, पिप्पलाद, वैजनाथ (वैश्यनाथ), यतिननाथ, कृष्णदर्शन, अवधुवेश्वर, भिछुवरेया (विश्वेश्वर), सुरेश्वर, ब्रह्मचारी, सुनातनार्टक, साधु, विभु अश्वथमा, किराट, वीरभद्र, भैरव, अल्लमा, खानदोबा।
- शैवमत के भावनात्मक पक्ष का प्रचार नायनारों द्वारा किया गया था जबकि उसके सैद्धान्तिक पक्ष को शैव बुद्धिजीवियों (आचार्यों) ने पूर्ण किया। ये आचार्य अगमनत, शुद्ध तथा वीरशैव जैसे शैव आंदोलन के रूपों से संबंधित थे।
- अघोर शिवाचार्य उनका सबसे योग्य सिद्धान्तकार था।
- शुद्ध शैववादियों ने रामानुज की शिक्षाओं को अपनाया और श्रीकान्त शिवाचार्य उनका महान व्याख्याकार था।
- ❖ मत्स्यपुराण में लिंग पूजा का पहला स्पष्ट वर्णन मिलता है।
- ❖ शिव धर्म के विकास की प्रक्रिया में कुछ संप्रदायों–पशुपति, कापालिक, कालामुख, लिंगायत आदि का विकास हुआ।
- ❖ इसका वर्णन वामन पुराण में मिलता है।
- कापालिक संप्रदाय के इष्टदेव भैरव थे जिसका प्रमुख केन्द्र श्रीशैल नामक स्थान था।
- कालामुख संप्रदाय के लोगों को महाव्रतधर कहा जाता है।
- ❖ लिंगायत को जंगम या वीरशैव संप्रदाय भी कहा जाता है। यह दक्षिण भारत में प्रचलित था। इस संप्रदाय के प्रवर्तक अल्लभ प्रभु और इनके शिष्य बासव थे।
- वीरशैववादियों का नेतृत्व बासव द्वारा किया गया।
- ❖ पाशुपत संप्रदाय के संस्थापक लकुलीश थे जिसको शिव का अवतार माना जाता है।
- इसके द्वारा रचित मुख्य ग्रंथ पाशुपत सूत्र है।
- पाशुपत संप्रदाय का मुख्य संबंध अनुष्ठान एवं अनुशासन से है। इसका अंतिम लक्ष्य शिव के साथ अन्तरविलीन होना है जिससे सभी प्रकार के दु:ख एवं परेशानियों से मुक्ति प्राप्त होना है।
- अथर्ववेद में शिव को शर्व, भव, पशुपति तथा भूपति कहा गया है।
- नाथ संप्रदाय की स्थापना मत्स्येन्द्र नाथ ने की थी।
- इसके प्रमुख प्रचारक बाबा गोरखनाथ थे।
- कालामुख संप्रदाय के अनुयायियों को शिव पुराण में महाव्रतधर कहा गया है।
- इस संप्रदाय के लोग नर-कपाल में ही भोजन, जल तथा सुरापान करते हैं और साथ ही अपने शरीर पर चिता की भस्म मलते हैं।
- ❖ दक्षिण भारत में शैवधर्म चालुक्य, राष्ट्रकूट, पल्लव एवं चोलों के समय लोकप्रिय रहा।

- कुषाण शासकों की मुद्राओं पर शिव एवं नन्दी का एक साथ अंकन प्राप्त होता है।
- तमिल शैवमत की शिक्षाओं को प्रथम बार व्यवस्थित करने वाला मेयकान्तर था।
- शक्ति संप्रदाय शैव मत के साथ काफी नजदीक है लेकिन फिर भी इससे विशिष्टहै।
- शक्ति संप्रदाय या देवी की पूजा का उल्लेख महाभारत से प्राप्त होता है।
- जिस समय शक्ति के चित्र को शिव के साथ उसकी पत्नी के रूप में चित्रित किया जाता है तब वह उसका लाभ वाला पक्ष है और इसको पार्वती देवी या उमा या महादेवी कहा जाता है।
- शक्ति के बहुत से नामों में से मंसा, शीतला, चण्डी तथा दुर्गा-काली हैं। बंगाल में उसका संप्रदाय गहरी श्रद्धा, पवित्रता एवं भय सहित प्राचीन जन-जातीय संप्रदाय से ग्रहण किया गया विद्रोहात्मक निर्दयी रक्त अनुष्ठानों का एक मिश्रण है।
- तान्त्रिक तत्व जैनमत, महायान बौद्धमत, शैवमत, वैष्णव मत एवं शक्ति संप्रदाय में भी विद्यमान रहते हैं।
- तान्त्रिक संप्रदाय का विकास अफगानिस्तान सीमा के साथ उत्तर-पश्चिम भारत तथा पश्चिम बंगाल और असम में या उप-महाद्वीप के मामूली हिन्दूवादी क्षेत्र में हुआ।
- इसलिए इसके अन्दर बहुत सी गैर आर्य विशेषतायें भी शामिल हो गयी हैं।
- इसके शिव तथा शक्ति की एकता के अनुसरण में यौन एकता की निर्मलता को भी शामिल किया गया।

## ईसाई धर्म

- ❖ ईसाई धर्म के संस्थापक ईसा मसीह थे।
- ईसा मसीह का जन्म जेरुसेलम के निकट बैथलेहम नामक स्थान पर हुआ था।
- ईसा मसीह के माता का नाम मेरी तथा पिता का नाम जोसेफ था।
- ईसा ने अपने जीवन के प्रथम 30 वर्ष एक बढ़ई के रूप में बैथलेहम के निकट नाजरेथ में बिताए।
- ❖ ईसा मसीह के प्रथम दो शिष्य एंड्रूस एवं पीटर थे।
- ❖ ईसा मसीह को 33 ई. में सूली पर चढ़ाया गया। इनको सूली पर रोमन गवर्नर पोंटियस ने चढ़ाया।
- ईसाई धर्म का सबसे पवित्र चिह्न क्रॉस है।
- ईसाई त्रित्व में विश्वास रखते हैं, ये हैं, ईश्वर- पिता, ईश्वर-पुत्र, ईश्वर-पवित्र आत्मा।
- ❖ ईसाई धर्म का प्रमुख ग्रंथ बाइबिल है।
- ईसा मसीह के जन्म दिवस को क्रिसमस के रूप में मनाया जाता है।

## इस्लाम धर्म

- ❖ हजरत मुहम्मद का जन्म 570 ई. में मक्का में हुआ था।
- हजरत मुहम्मद के पिता का नाम अब्दुल्ला और माता का नाम अमीना था।
- हजरत मुहम्मद को 610 ई. में मक्का के पास हीरा नामक गुफा में ज्ञान की प्राप्तिहुई।
- ❖ इस्लाम धर्म के संस्थापक हजरत मुहम्मदथे।
- ❖ हजरत मुहम्मद की शादी 25 वर्ष की अवस्था में खदीजा नामक विधवा के साथ हुई।
- ❖ इनकी पुत्री का नाम फातिमा एवं दामाद का नाम अली हजरत हुसैन था।
- ❖ 24 सितम्बर, 622 ई. को पैगम्बर मुहम्मद के मक्का से मदीना की यात्रा इस्लाम जगत में मुस्लिम संवत् (हिजरी संवत्) के नाम से जाना जाता है।
- देवदूत ग्रैब्रियल ने पैगम्बर मुहम्मद को कुरान अरबी भाषा में संप्रेषित की थी।
- ❖ इस्लाम धर्म का पवित्र ग्रंथ कुरान है।
- नमाज के अवसर पर मक्का की ओर की दिशा को किबला कहा जाता है।
- पैगम्बर मुहम्मद ने कुरान की शिक्षाओं का उपदेश दिया।
- पैगम्बर मुहम्मद के उत्तराधिकारी 'खलीफा' कहलाते हैं।
- ❖ 8 जून, 632 ई. को हजरत मुहम्मद की मृत्यु हो गई।
- उसके बाद मदीना में दफनाया गया।
- हजरत मुहम्मद की मृत्यु के बाद इस्लाम धर्म सुन्नी तथा शिया नामक दो पंथों में विभक्त हो गया।
- सुन्नी उसे कहते हैं जो सुन्ना में विश्वास करते हैं।
- सुन्ना पैगम्बर मुहम्मद के कथनों तथा कार्यों का विवरण ग्रंथ है।
- शिया अली की शिक्षाओं में विश्वास करते हैं तथा उन्हें मुहम्मद का न्यायसम्मत उत्तराधिकारी मानते हैं।
- अली की 661 ई. में हत्या कर दी गई।
- अली के पुत्र हुसैन की हत्या 680 ई. में कर्बला (इराक) नामक स्थान पर कर दी गई।
- इन दोनों हत्या ने शिया को निश्चित मत का रूप दे दिया।
- सर्वप्रथम पैगम्बर साहब का जीवन-चरित्र इब्न ईशाक ने लिखा।
- मुहम्मद पैगम्बर के जन्म-दिन पर ईद-ए- मिलाद-उन-नबी पर्व मनाया जाता है।
- इस्लाम जगत में खलीफा पद 1924 ई. तक रहा क्योंकि उसी वर्ष इसे तुर्की शासक मुस्तफा कमालपाशा ने समाप्त कर दिया।

## पारसी धर्म

- इन धर्मों के अतिरिक्त पारसी धर्म के पैगम्बर जरथुस्ट्र (ईरानी) थे, जिनके शिक्षाओं का संकलन जेन्दा अवेस्ता नामक ग्रंथ में है, जो पारसियों का धार्मिक ग्रंथ है।
- पारसी धर्म के अनुयायी एक ईश्वर 'अहुर' को मानते हैं।
- पारसी धर्म के अनुयायियों को 'अग्नि-पूजक' कहा जाता है।
- जेन्दा अवेस्ता नामक ग्रंथ की मूल शिक्षा का सूत्र सद्-विचार, सद्-वचन तथा सद्-कार्यहै।

## यहूदी धर्म

- यहूदी धर्म (Judaism) विश्व के प्राचीनतम धर्मों में से एक है, जिसे दुनिया का प्रथम एकेश्वरवादी धर्म माना जाता है।
- करीब 4000 साल पुराना यहूदी धर्म वर्तमान के इजरायल राष्ट्र का राजधर्म है।
- यहूदी एकेश्वरवादी होते हैं, लेकिन वे ईश्वर को त्रीएक के रूप में समझते हैं अर्थात् परमपिता परमेश्वर, उनके पुत्र ईसा मसीह (यीशु मसीह) और पवित्र आत्मा।
- इस धर्म में मूर्ति पूजा को पाप माना जाता है।
- यहूदी अपने भगवान को यहवेह या यहोवा कहते हैं।
- यहूदी धर्म की शुरुआत पैगंबर अब्राहम (अबराहम या इब्राहिम) से मानी जाती है, जो ईसा से 2000 वर्ष पूर्व हुए थे।
- पैगंबर अब्राहम के पहले बेटे का नाम हजरत इसहाक और दूसरे का नाम हजरत इस्माईल था। दोनों के पिता एक थे, किंतु माँ अलग-अलग थीं।
- हजरत इसहाक की माँ का नाम सराह था और हजरत इस्माईल की माँ हाजरा थीं।
- पैगंबर अब्राहम के पोते का नाम हजरत याकूब था।
- याकूब का ही दूसरा नाम इजरायल था।
- याकूब ने ही यहूदियों की 12 जातियों को मिलाकर एक सम्मिलित राष्ट्र इजरायल बनाया था।
- इजरायल की स्थापना 1948 में हुई थी।
- दुनिया के सबसे पुराने धर्मों में से एक यहूदी धर्म से ही ईसाई और इस्लाम धर्म की उत्पत्ति हुई है।

- यहूदियों की धर्मभाषा 'इब्रानी' (हिब्रू) और यहूदी धर्मग्रंथ का नाम 'तनख' है, जो इब्रानी भाषा में लिखा गया है।
- तनख को 'तालमुद' या 'तोरा' भी कहते हैं।
- तनख का रचनाकाल ई.पू. 444 से लेकर ई.पू. 100 के बीच का माना जाता है।
- ईसा से लगभग 1,500 वर्ष पूर्व अब्राहम के बाद यहूदी इतिहास में सबसे बड़ा नाम 'पैगंबर मूसा' का है।
- यह सिर्फ एक धर्म ही नहीं बल्कि पूरी जीवन-पद्धति है जो कि इजरायल और हिब्रू भाषियों का राजधर्म है।
- इस धर्म में ईश्वर और उसके नबी यानि पैगम्बर की मान्यता प्रधान है।
- यहूदी धर्म का प्रवेश भारत में 2985 वर्ष पूर्व अर्थात् 973 ईसा पूर्व केरल के मालाबार तट पर हुआ था।
- 2017 की जनसंख्या रिपोर्ट के अनुसार विश्व में सिर्फ 1.45 करोड़ यहूदी ही बचे हैं। जिनमें से लगभग 64 लाख इजरायल में और 57 लाख अमेरिका में रहते हैं।

## मगध राज्य का उदय

**मगध राज्य**

हर्यंक वंश | शिशुनाग वंश | नंद वंश

### हर्यंक वंश

- मगध की प्रारम्भिक राजधानी गिरिव्रज थी। मगध राज्य के आरम्भिक इतिहास की जानकारी महाभारत से मिलती है।
- मगध के सबसे प्राचीन वंश के संस्थापक वृहद्रथ था।
- जरासंध वृहद्रथ का पुत्र था।

### बिम्बिसार ( 544–492 B.C. )

- बिम्बिसार ने हर्यंक वंश की स्थापना की थी। वह 544 ई. पू. में मगध की गद्दी पर बैठा।
- ❖ बिम्बिसार को श्रेणिक नाम से भी जाना जाता है।
- ❖ इनकी तीन पत्नियाँ महाकोशला, चेलना और मद्र नरेश की पुत्री क्षेमा थी।
- बिम्बिसार ने अंग राजा ब्रह्मदत्त को हराया था।
- बिम्बिसार बौद्ध धर्म का (गौतम बुद्ध का समकालीन) अनुयायी था।
- बिम्बिसार ने राजगृह (राजधानी बनी) नगर का निर्माण कराया।
- इस नगर का योजनाकार (वास्तुकार) महागोविन्द था।
- ❖ बिम्बिसार ने जीवक को अवन्ति नरेश प्रद्योत के इलाज के लिये भेजा था।
- बिम्बिसार की हत्या उसके पुत्र अजातशत्रु ने 493 ई. पू. की थी।
- बुद्धघोष के अनुसार बिम्बिसार के साम्राज्य में 80 हजार गांव थे तथा उसका विस्तार 300 लीग (लगभग 900 मील) था।
- बिम्बिसार ने बेलुवन नामक उद्यान बुद्ध तथा संघ के निमित्त प्रदान कर दिया।

### अजातशत्रु ( 492–460 ई.पू. )

- अजातशत्रु 492 ई. पू. में मगध की गद्दी पर बैठा था।
- पितृहन्ता अजातशत्रु का दूसरा नाम कुणिक था।
- अजातशत्रु ने गौतम बुद्ध के चचेरे भाई देवदत्त के कहने पर अपने पिता की हत्या की थी।
- अजातशत्रु का विवाह कोशल नरेश प्रसेनजित की पुत्री वाजिरा के साथ हुआ था।
- अजातशत्रु का सुयोग्य मन्त्री वस्सकार था।
- लिच्छवि गणराज्य को अजातशत्रु ने मगध में मिला लिया।
- वज्जिसंघ में फूट अजातशत्रु के मंत्री वस्सकार ने डाली थी।
- अजातशत्रु पहले जैन धर्म से प्रभावित था, परन्तु बाद में बौद्ध धर्म को मानने लगा।
- अजातशत्रु ने राजगृह में विशाल स्तूप का निर्माण करवाया था।
- ❖ अजातशत्रु ने लिच्छवियों के विरुद्ध युद्ध में महाशिलाकन्टक तथा रथमूसल नामक दो शस्त्रों का प्रथम बार प्रयोग किया।
- अजातशत्रु की हत्या उसके पुत्र उदायिन ने 461 ई. पू. में की थी।
- इसके ही शासनकाल में राजगृह में प्रथम बौद्ध संगीति का आयोजन किया गया था।

### उदायिन ( 460–444 ई.पू. )

- उदायिन जैन धर्म का अनुयायी था।
- ❖ उदायिन ने गंगा और सोन नदियों के संगम पर पाटलिपुत्र नामक नगर की स्थापना की।
- ❖ बौद्ध ग्रंथों में उदायिन को पितृहन्ता कहा गया है।
- जैन ग्रंथों में उदायिन को पितृभक्त बताया गया है।
- हर्यंक वंश का अंतिम शासक नागदशक था।

### शिशुनाग वंश ( 412–345 ई.पू. )

- नागदशक की हत्या उसके अमात्य शिशुनाग ने की थी।
- शिशुनाग वंश की स्थापना शिशुनाग ने 412 ई. पू. में की थी।
- शिशुनाग ने अवन्ति राज्य को मगध में मिलाया।
- ❖ शिशुनाग ने अपनी राजधानी वैशाली में बनाई।
- शिशुनाग वंश का परवर्ती शासक कालाशोक 394 ई. पू. में हुआ।
- ❖ कालाशोक ने अपनी राजधानी पाटलिपुत्र में बनाई।
- ❖ पुराणों में इसे काकवर्ण कहा गया है।
- ❖ वैशाली में दूसरी बौद्ध संगीति का आयोजन
- ❖ कालाशोक के शासनकाल (वैशाली में) में द्वितीय बौद्ध संगीति आयोजित हुई।
- शिशुनाग वंश का अंतिम राजा नन्दिवर्द्धन था।

### नन्द वंश

- ❖ नन्द वंश का संस्थापक महापद्मनन्द (पुराण एवं जैन साहित्य के अनुसार यह पहला गैर क्षत्रिय राजा था) नाई जाति का था।
- ❖ महापद्मनन्द ने एकराट, सर्वक्षत्रान्तक (क्षत्रियों का नाश करने वाला) और द्वितीय परशुराम की उपाधि धारण की थी।
- इसने कलिंग को जीता तथा विद्रोही कोसल राज्य का दमन किया।
- ❖ नन्द वंश का अन्तिम शासक धनानन्द था।
- भट्टशाल, धनानंद का सेनापति तथा शकटार और राक्षस क्रमशः उसके अमात्य थे।
- नन्द वंश सर्वाधिक धनी राज्य एवं विशाल सेना के लिये प्रख्यात था।
- ❖ सिकन्दर का समकालीन शासक धनानन्द था।
- ❖ नन्द वंश का विनाश चन्द्रगुप्त मौर्य एवं चाणक्य ने किया।
- नन्द वंश पहले के कुछेक गैर क्षत्रिय राजवंशों में से एक था।
- नन्दों को भारत के पहले साम्राज्य निर्माताओं की संज्ञा मिली है।

## प्राचीनकाल में पारसीक एवं यूनानी आक्रमण

- ❖ भारत पर प्रथम विदेशी आक्रमण ईरान के हखमनी वंश के राजाओं ने किया।
- ❖ डेरियस प्रथम को भारत पर आक्रमण करने में प्रथम सफलता मिली।
- डेरियस प्रथम ने भारतीय भू-भाग को जीतने के बाद इसे अपने साम्राज्य का बीसवां प्रांत बनाया।

भारतीय इतिहास

- सायरस (588–529 ई.पू.) प्रथम विदेशी था, जिसने भारत पर चढ़ाई करने का प्रयास किया था।
- डेरियस प्रथम के पुत्र जेरेक्सस ने अपने भारतीय प्रान्तों का पूर्ण उपयोग सैनिक जत्था बनाने के लिये किया।
- जेरेक्सस ने भारतीय सैनिकों को लड़ने के लिये ग्रीस में भेजा था।
- ईरानी आक्रमण के चलते पश्चिमोत्तर भारत में खरोष्ठी लिपि का प्रचार हुआ।
- ईरानी आक्रमण से आरमेइक लिपि का प्रचार हुआ।
- अभिलेख उत्कीर्ण करने की प्रथा ईरानियों द्वारा प्रारम्भ की गयी।
- क्षत्रप प्रणाली का विकास ईरानी आक्रमण के कारण हुआ।
- दारा प्रथम के तीन अभिलेखों बेहिस्तून, पर्सिपोलिस और नक्शेरूस्तम से सिद्ध होता है कि उसी ने सर्वप्रथम सिन्धु नदी के तटवर्ती भारतीय भू-भागों को अधिकृत किया।
- दारा तृतीय को यूनानी शासक सिकन्दर द्वारा परास्त कर दिए जाने पर भारत पर पारसीक (ईरानी) आधिपत्य समाप्त हो गया।
- अशोक ने चट्टानों पर अभिलेख खुदवाने की प्रथा एकमेनिड शासकों से ली थी।
- पारसीक क्षत्रप प्रणाली का प्रयोग भारत में शक तथा कुषाण शासकों ने किया।
- पारसीक राजाओं ने महाराजाधिराज, परमदैवत् तथा परमभागवत जैसी भारतीय उपाधियाँ धारण की।
- डेरियस तृतीय ने भारतीय सैनिकों को सूचीबद्ध करके उन्हें सिकन्दर से लड़ने के लिये भेजा था।
- ईरानी शासकों ने सिन्ध तथा गांधार प्रदेशों पर अधिकार किया।
- हखमनी शासक दारा तृतीय को सिकन्दर ने हराया।
- सिकन्दर के पिता का नाम फिलिप द्वितीय था तथा उसका जन्म 356 ई.पू. में हुआ।
- सिकन्दर का गुरु यूनानी दार्शनिक अरस्तू था।
- सिकन्दर के प्रिय घोड़ा का नाम बुकेफेलस था।
- सिकन्दर की अंतिम विजय पाटल थी।
- सिकन्दर का प्रधान सेनापति सेल्यूकस निकेटर था।
- सिकन्दर की सेना ने व्यास नदी के आगे जाने से मना कर दिया।
- भारत विजय अभियान के अंतर्गत सिकन्दर ने 326 ई. पू. में बल्ख (बैक्ट्रिया) को जीतने के बाद काबुल होता हुआ हिन्दुकुश पर्वत को पार किया।
- 326 ई. पू. में सिकन्दर ने सिंधु नदी पार कर भारत की धरती पर कदम रखा।
- उसके सबसे प्रसिद्ध युद्ध झेलम नदी के तट पर पौरव राज पुरू (पोरस) के साथ हुआ जो 'वितस्ता का युद्ध' या 'हाइडेस्पीन के युद्ध' के नाम से जाना जाता है।
- सिकन्दर ने दो नगरों की स्थापना की–पहला नगर 'निकैया' अर्थात् विजयनगर विजय प्राप्त करने के उपलक्ष्य में तथा दूसरा नगर 'बुकेफेलस' अपने प्रिय घोड़े के नाम पर स्थापित किया।
- सिकन्दर स्थल मार्ग से (325 ई.पू.) भारत से लौटा।
- सिकन्दर की मृत्यु 323 ई.पू. में बेबीलोन में ज्वर से हुई थी।
- तक्षशिला के राजा आम्भी ने सिकन्दर के सामने घुटने टेक दिये।
- सिकन्दर की सेना जल सेनापति नियार्कस के नेतृत्व में समुद्र के रास्ते वापस गई।
- सिकन्दर ने जीते हुए भारतीय क्षेत्र को तीन प्रदेशों में गठित किया।
- सिकन्दर भारत में 19 महीने रहा तथा भारतीय प्रदेशों को सेनापति फिलिप को सौंपकर वापस लौट गया।
- सिकन्दर के अभियान से भारतीयों को चार स्थल एवं चार जलीय मार्गों का पता चला।

## सिकन्दर के आक्रमण का प्रभाव

- सिकन्दर के आक्रमण से यहाँ के राजाओं की आपसी वैमनस्यता प्रदर्शित हो गई क्योंकि कोई भी राज्य एकजुट होकर सिकन्दर के आक्रमण का सामना नहीं कर सका बल्कि कुछ एक राज्य ने तो सिकन्दर की मदद की।
- इस आक्रमण के बाद इतिहास की तिथिवार जानकारी प्राप्त होने लगती है।
- आक्रमण के पश्चात् अनेक छोटे-छोटे राज्यों का विलय प्रारंभ हो जाता है।
- पश्चिमी भारत के कई राज्यों में यूनानी शासन की स्थापना हो गई।
- आक्रमण के कारण नये व्यापार मार्गों का पता चला, जिससे वाणिज्य व्यापार को बढ़ावा मिला।
- यूनानी मुद्रा का प्रचलन भारत में प्रारंभ हुआ, जिससे भारतीय मुद्रा पर भी यूनानी प्रभाव नजर आने लगा।
- यूनानी कला का भारतीय कला के साथ समन्वय स्थापित हुआ जिसके परिणाम स्वरूप 'गांधार कला' अस्तित्व में आई।
- यूनानी मुद्रा की तरह भारत में भी 'उलूक शैली' के सिक्के प्रचलित हुए।
- सिकन्दर भारतीय दार्शनिक 'कालानास' को अपने साथ ले गया।

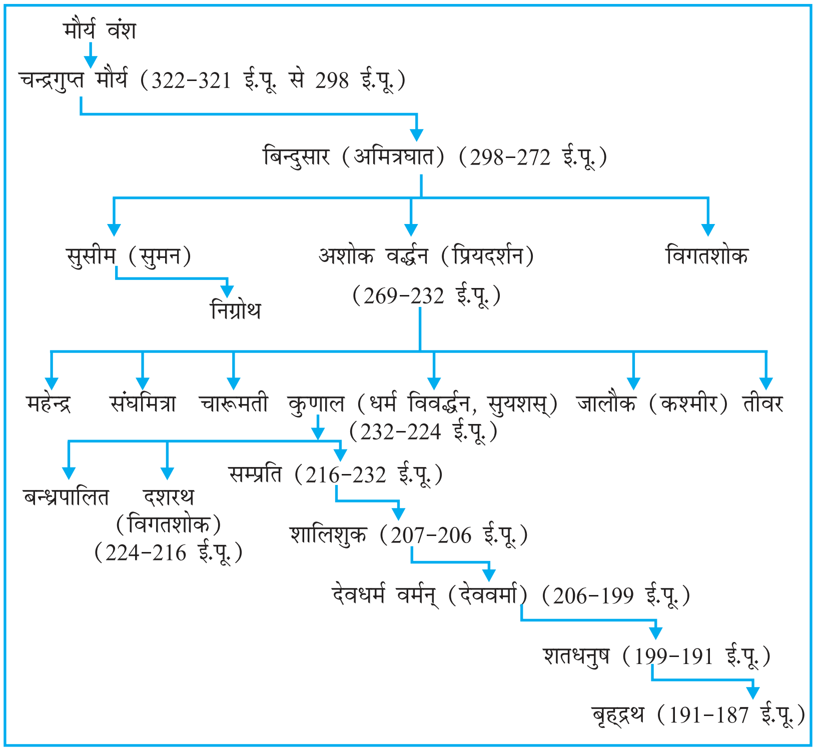

## चन्द्रगुप्त मौर्य (322 ई.पू. से 298 ई.पू.)

- चंद्रगुप्त मौर्य ने नंदवंश के अंतिम शासक धननंद (धनानंद) को हराकर मौर्य वंश की स्थापना 322 ई. पू. में की।
- सिकन्दर के लौट जाने और उसकी अकाल मृत्यु के कारण पंजाब में फैली अराजकता का चंद्रगुप्त ने लाभ उठाया और अपने सुयोग्य परामर्शदाता मंत्री चाणक्य की मदद से वह पंजाब का सम्राट बन बैठा।
- तक्षशिला धनुर्विद्या तथा वैधक की शिक्षा के लिए पूरे विश्व में प्रसिद्ध था। चन्द्रगुप्त मौर्य ने अपनी सैनिक शिक्षा यहीं पर ग्रहण किया था।
- कोशल के राजा प्रसेनजित, मगध का राजवैद्य जीवक, सुप्रसिद्ध राजनीतिविद् चाणक्य, बौद्ध विद्वान वसुबन्धु आदि ने यहीं शिक्षा प्राप्त की थी।

### मौर्य प्रशासन

**केन्द्रीय अधिकारी तंत्र :** सबसे ऊंचे अधिकारी तीर्थ कहलाते थे। 18 तीर्थ थे, जो निम्नलिखित हैं–

| | | |
|---|---|---|
| **अमात्य** | | **प्रधानमंत्री** |
| **पुरोहित** | — | प्रधानमंत्री तथा प्रमुख धर्माधिकारी |
| **समाहर्ता** | — | राजस्व विभाग का प्रधान अधिकारी |
| **सन्निधाता** | — | कोषाध्यक्ष |
| **प्रदेष्टा** | — | फौजदारी न्यायालय का न्यायाधीश |
| **नायक** | — | सेना का संचालक |
| **कर्मान्तिक** | — | उद्योग धंधों का प्रधान निरीक्षक |
| **व्यावहारिक** | — | दीवानी न्यायालय का न्यायाधीश |
| **दण्डपाल** | — | सेना की सामग्रियों को जुटाने वाला प्रधान अधिकारी |
| **आटविक** | — | वन विभाग का प्रधान |
| **अंतपाल** | — | सीमावर्ती दुर्गों का रक्षक |
| **दौवारिक** | — | राजमहल की देखभाल करने वाला प्रधान |
| **आन्तर्वशिक** | — | सम्राट की अंगरक्षक सेना का प्रधान |
| **नागरक (पौर)** | — | नगर का प्रमुख अधिकारी या नगर कोतवाल |
| **दुर्गपाल** | — | राजकीय दुर्ग रक्षकों का अध्यक्ष |
| **युवराज** | — | राजा का उत्तराधिकारी |
| **सेनापति** | — | युद्ध विभाग का मंत्री |
| **मंत्रिपरिषदाध्यक्ष** | — | परिषद् का अध्यक्ष |

- ❖ चाणक्य ने 'अर्थशास्त्र' नामक पुस्तक लिखी जो मौर्य काल के इतिहास को जानने के लिए सबसे महत्त्वपूर्ण स्रोत है।
- ब्राह्मण साहित्य चंद्रगुप्त मौर्य को शूद्र कुल का और जैन एवं बौद्ध साहित्य उसे क्षत्रिय कुल का मानते हैं।

### चन्द्रगुप्त मौर्य के नाम

| | | |
|---|---|---|
| सैन्ड्रोकोट्स | – | स्ट्रेबो, एरियन, जस्टिन |
| एण्ड्रोकोट्स | – | प्लूटार्क |
| चन्द्रगुप्त | – | जूनागढ़ अभिलेख |

- चन्द्रगुप्त मौर्य की संज्ञा का प्राचीनतम अभिलेखीय साक्ष्य रुद्रदामन के जूनागढ़ अभिलेख से मिलता है।
- जूनागढ़ अभिलेख ब्राह्मी लिपि में है।
- ❖ चन्द्रगुप्त मौर्य एवं सेल्यूकस के बीच युद्ध 305 ई.पू. में हुआ था। जिसमें सेल्यूकस पराजित हुआ।
- फलस्वरूप चन्द्रगुप्त मौर्य तथा सेल्यूकस के बीच सन्धि हुई तथा सेल्यूकस ने अपनी पुत्री का विवाह चन्द्रगुप्त के साथ कर दिया।
- इस प्रकार चन्द्रगुप्त ने यूनानियों को भारत से बाहर निकाल दिया।
- सेल्यूकस ने अपने राजदूत मेगस्थनीज को चन्द्रगुप्त के दरबार में भेजा था।
- ❖ मेगस्थनीज ने 'इंडिका' की रचना की थी।
- चन्द्रगुप्त ने सेल्यूकस को 500 हाथी उपहार में दिये थे। (प्लूटार्क के अनुसार)
- ❖ चन्द्रगुप्त को यूनानियों ने सैन्ड्रोकोटस कहा है।
- ❖ अपने जीवन के अंतिम समय में चन्द्रगुप्त ने जैन धर्म स्वीकार किया।
- सेल्यूकस ने चन्द्रगुप्त को एरिया (काबुल), अराकोसिया (कान्धार), ग्रेदेसिया (तरान) प्रान्त दिये थे।
- चन्द्रगुप्त मौर्य की पत्नी हेलेना (कार्नेलिया) सेल्यूकस की पुत्री थी।
- चन्द्रगुप्त मौर्य के दक्षिण विजय की जानकारी तमिल ग्रंथ-अहनानूरू एवं पुरनानूरू से मिलती है।
- चन्द्रगुप्त मौर्य की सेना के छः अंग थे - अश्व सेना, हस्तिसेना, पैदल, नौसेना, रथ सेना और सैन्य सहायता विभाग।
- विभागों के अध्यक्ष को अमात्य कहा जाता था।
- चन्द्रगुप्त का जैन गुरु भद्रबाहु था।
- ❖ चन्द्रगुप्त मौर्य की मृत्यु कर्नाटक के श्रवणबेलगोला में स्थित चन्द्रागिरि पहाड़ी पर 298 ई.पू. में हुई थी।
- ❖ चन्द्रगुप्त मौर्य ने सल्लेखना विधि से (भूखे-प्यासे रहकर) शरीर का त्याग किया था।
- विलियम जोन्स पहले विद्वान थे जिन्होंने सैन्ड्रोकोट्टस की पहचान भारतीय ग्रंथों में चंद्रगुप्त से की है।
- ❖ प्लूटार्क के अनुसार चन्द्रगुप्त ने 6 लाख सेना लेकर समूचे भारत पर आधिपत्य स्थापित किया।
- ❖ चंद्रगुप्त मौर्य के राज्यपाल पुष्यगुप्त वैश्य ने सुदर्शन नामक झील का निर्माण करवाया।
- ❖ मेगस्थनीज के अनुसार भारत में दास प्रथा नहीं थी।
- ❖ मेगस्थनीज भारतीय समाज को सात जातियों में विभक्त किया। सात जातियां–दार्शनिक, किसान, अहीर, कारीगर या शिल्पी, सैनिक, निरीक्षक, सभासद तथा अन्य शासक वर्ग।
- मेगस्थनीज ने पाटलिपुत्र को पालिब्रोथा नाम दिया था।

## बिन्दुसार (298 ई.पू. से 272 ई.पू.)

- चन्द्रगुप्त मौर्य का पुत्र बिन्दुसार, 298 ई.पू. में गद्दी पर बैठा।
- यूनानी लेखक बिन्दुसार को अमित्रोकेट्स या अमित्रघात के नाम से जानते थे।
- बिन्दुसार के समय तक्षशिला में विद्रोह हुआ था।
- तक्षशिला विद्रोह दबाने के लिये अशोक और सुसीम को भेजा गया था।
- बिन्दुसार के दरबार में यूनानी राजदूत डाइमेकस आया था।

### बिन्दुसार के नाम

| | | |
|---|---|---|
| भद्रसार | – | वायुपुराण |
| अमित्रोकेट्स या अमित्रघात | – | यूनानी लेखक |
| सिंहसेन | – | जैन ग्रंथ |
| अलिड्रोकेड्स | – | स्ट्रेबो |
| बिन्दुपाल | – | चीनी विवरण |

- ❖ बिन्दुसार ने सीरिया के राजा एण्टियोकस से मदिरा, सूखे अंजीर एवं एक दार्शनिक मांगा था।

- एण्टियोकस ने दार्शनिक (यूनानी कानून में इसकी अनुमति नहीं थी) भेजने से मना कर दिया था।
- बिन्दुसार आजीवक सम्प्रदाय का अनुयायी था।
- पिंगलवत्स नामक आजीवक विद्वान बिन्दुसार के दरबार में रहता था।
- अशोक के राजा बनने की भविष्यवाणी पिंगलवत्स ने की थी।
- बिन्दुसार की मृत्यु के समय अशोक उज्जैन में राज्यपाल था।
- बिन्दुसार ने दो समुद्रों के बीच की भूमि समेत 16 राज्यों को जीता था।
- आजीवक बनने से पूर्व बिन्दुसार ब्राह्मण धर्म को मानता था।
- चाणक्य ने तीन मौर्य राजाओं के राज्य का संचालन किया।
- तक्षशिला विद्रोह का मुख्य कारण अधिकारियों का दुर्व्यवहार था।

### चाणक्य या कौटिल्य या विष्णुगुप्त

- बचपन का नाम विष्णुगुप्त था।
- चाणक्य ने अर्थशास्त्र (राजनीतिक विज्ञान) की रचना की
- चाणक्य को भारत का मैकियावेली कहा जाता है।
- चाणक्य के पिता का नाम चणक था।

## अशोक (269 ई.पू. से 232 ई.पू.)

- मौर्य साम्राज्य का महानतम् शासक अशोक था।
- सिंहली अनुश्रुति के अनुसार अशोक ने अपने 99 भाइयों की हत्या की थी।
- अभिलेखों में अशोक को देवानामप्रिय या देवानामप्रियदर्शी नाम से सम्बोधित किया गया है।
- पुराणों में अशोक को अशोक वर्द्धन नाम से जाना जाता है।
- अशोक ने कश्मीर में श्रीनगर बसाया।

### अशोक के नाम

अशोक मौर्य – गिरनार अभिलेख
अशोक वर्द्धन – पुराण
पियदस्सी – भाब्रु शिलालेख
अशोक – मास्की, गुर्जरा, नेत्तूर, उदेगोलम अभिलेख

## कलिंग

- 261 ई. पू. में नंदराज शासक था।
- हाथियों के लिए प्रसिद्ध था
- अशोक के तेरहवें शिलालेख से ज्ञात होता है कि अशोक ने 261 ई.पू. में कलिंग विजय की थी।
- कलिंग की राजधानी तोसली थी।
- अशोक ने नेपाल में ललितपत्तन नगर बसाया।
- अशोक चक्र, धर्मचक्र का वर्णन करता है जिसमें 24 तिलियाँ हैं।
- इसे अशोक चक्र इसलिए कहते हैं क्योंकि लॉयन कैपिटल सारनाथ सहित सम्राट अशोक द्वारा जारी अशोक के फरमानों पर चक्र उत्कीर्ण किए गए हैं।
- कलिंग युद्ध के बाद अशोक ने भेरी घोष त्याग कर धम्म घोष अपनाया।
- अशोक की कर नीति की जानकारी रुम्मिनदेई अभिलेख से मिलती है।
- बौद्ध धर्म अपनाने से पहले वह भगवान शिव की पूजा करता था।

### प्रांतीय प्रशासन

| | | |
|---|---|---|
| उत्तरापथ | – | तक्षशिला |
| अवन्ति राष्ट्र | – | उज्जयिनी |
| कलिंग | – | तोसली |
| दक्षिणापथ | – | सुवर्णगिरी |
| प्राची | – | पाटलिपुत्र |

- अशोक को उपगुप्त ने बौद्ध धर्म में दीक्षित किया।
- बाराबर पहाड़ी पर आजीवकों के लिये अशोक ने कर्ण, चोपार, सुदामा, एवं विश्वझोपड़ी गुफाओं का निर्माण कराया।
- अशोक ने लुम्बिनी को धार्मिक करों से मुक्त कर दिया।
- अशोक की माता का नाम सुभद्रांगी था। सुभद्रांगी चंपा के एक ब्राह्मण की पुत्री थी।
- असंधिमित्रा एवं कारूवाकी अशोक की पत्नियाँ थी।
- कारूवाकी के पुत्र का नाम तीवर था।
- अशोक की एक अन्य पत्नी नागदेवी से उत्पन्न पुत्र-पुत्री महेन्द्र एवं संघमित्रा थे।
- जो विदिशा के श्रेष्ठी की पुत्री थी।
- अशोक ने बौद्ध धर्म के प्रचार के लिये पुत्र महेन्द्र और पुत्री संघमित्रा को श्रीलंका भेजा।
- मौर्य कालीन साम्राज्य चार प्रान्तों में बँटा था:
- प्रादेशिक, राज्जुक और युक्तक ये सभी अधिकारी प्रति पांचवें वर्ष राज्य निरीक्षाटन के लिए जाते थे।

### अशोक के धर्म के मुख्य सिद्धांत

- कलिंग युद्ध के भीषण रक्तपात को देखकर अशोक का हृदय काँप उठा और उसने भविष्य में अहिंसा की नीति अपनाने की ठानी।
- उसने बौद्ध धर्म से दीक्षा ली और एक नए मत का संस्थापक बन गया जो अशोक के धम्म के नाम से जाना जाता है।

| अशोक के धम्म के प्रमुख सिद्धांत | |
|---|---|
| 1. बड़ों का आदर | 2. छोटों के प्रति उचित व्यवहार |
| 3. सत्य भाषण | 4. अहिंसा |
| 5. दान | 6. पवित्र जीवन |
| 7. सत्य | 8. शुभ कर्म |
| 9. धार्मिक सहनशीलता आदि। | |

### अशोक के राज्यादेश

- अशोक ने अपनी प्रजा के पथ-प्रदर्शन एवं उन्हें धार्मिक सिद्धांतों से परिचित कराने के लिए चट्टानों, स्तंभों तथा गुफाओं पर राज्यादेश खुदवाये।
- ये आदेश अशोक के साम्राज्य के तीस भिन्न स्थानों पर मिले हैं।
- **शिला लेख :** इनमें अशोक की धार्मिक यात्राओं, धर्म के नियमों, अहिंसा की नीति के विषय में लिखा है।
  - चौदह शिलालेख
  - दो लघु शिलाओं वाले राज्यादेश
  - दो कलिंग राज्यादेश
  - भाब्रू राज्यादेश
- **स्तम्भ लेख :** तीन प्रकार के हैं (1) सात स्तंभ राज्यादेश, (2) लघु स्तंभ राज्यादेश, (3) तराई के स्तंभ लेख।
- **गुफा लेख :** जो गया के पास बाराबर की पहाड़ियों के तीन गुफाओं के दरवाजों पर मिले हैं।

**तृतीय बौद्ध संगीति के बाद अशोक द्वारा भेजे गए धर्म प्रचारक**

| प्रचारक | स्थान |
|---|---|
| महेन्द्र एवं संघमित्रा | लंका (श्रीलंका) |
| रक्षित | उत्तरी कनारा |
| महादेव | मैसूर |
| मज्झान्तिक | कश्मीर-गांधार |
| धर्मरक्षित | पश्चिमी भारत |
| मज्झिम | हिमालय |
| महाधर्मरक्षित | महाराष्ट्र |
| महारक्षित | यवन राज्य |

## अर्थशास्त्र में निर्दिष्ट प्रमुख अध्यक्ष

**लक्षणाध्यक्ष** – मुद्रा तथा टकसाल का अध्यक्ष
**पौतवाध्यक्ष** – मापतौल का अध्यक्ष
**सीताध्यक्ष** – राजकीय कृषि विभाग का अध्यक्ष
**आकराध्यक्ष** – खानों का अध्यक्ष
**गणिकाध्यक्ष** – वेश्याओं का अध्यक्ष
**नवाध्यक्ष** – जहाजरानी विभाग का अध्यक्ष
**पत्तनाध्यक्ष** – बन्दरगाहों का अध्यक्ष
**देवताध्यक्ष** – धार्मिक संस्थाओं का अध्यक्ष
**मुद्राध्यक्ष** – सिक्का, रोयाल चिह्न
**लोहाध्यक्ष** – धातु विभाग का अध्यक्ष
**सुवर्णाध्यक्ष** – पशुधन विभाग का अध्यक्ष
**शुल्काध्यक्ष** – राजकीय धन जुर्माना आदि कार्यों का अध्यक्ष
**विविताध्यक्ष** – चारागाहों का अध्यक्ष
**सूनाध्यक्ष** – बूचड़खाने का अध्यक्ष
**पण्याध्यक्ष** – वाणिज्य व्यापार का अध्यक्ष
**सूत्राध्यक्ष** – रूई कातने, कपड़ा बुनने के उद्योग का संचालन करने वाला

## मौर्यकालीन शिलालेख

| | शिलालेख | खोज का वर्ष | लिपि |
|---|---|---|---|
| (1) | शाहबाजगढ़ी | 1836 | खरोष्ठी |
| (2) | मानसेहरा | 1889 | खरोष्ठी |
| (3) | गिरनार | 1822 | ब्राह्मी |
| (4) | धौली | 1837 | ब्राह्मी |
| (5) | कालसी | 1837 | ब्राह्मी |
| (6) | जौगढ़ | 1850 | ब्राह्मी |
| (7) | सोपारा | 1882 | ब्राह्मी |
| (8) | एरागुड़ी | 1916 | ब्राह्मी |

## अशोक के स्तम्भ लेख

| स्तम्भ लेख | स्थान |
|---|---|
| 1. प्रयाग स्तम्भ लेख | इलाहाबाद |
| 2. दिल्ली–टोपरा | दिल्ली |
| 3. दिल्ली–मेरठ | दिल्ली |
| 4. रामपुरवा | चम्पारण (बिहार) |
| 5. लौरिया नन्दन गढ़ | चम्पारण (बिहार) |
| 6. लौरिया अरेराज | चम्पारण (बिहार) |

## अशोक के लेखों से संबंधित तथ्य

- अशोक का उल्लेख मास्की, नेत्तूर, गुर्जरा एवं उदेगोलम अभिलेख में है।
- अशोक के अभिलेखों को 1837 ई. में जेम्स प्रिसेंप ने सर्वप्रथम पढ़ा।
- टोपरा और मेरठ के स्तम्भों को फिरोजशाह तुगलक ने दिल्ली मंगवाया।
- कौशाम्बी स्तम्भ को अकबर इलाहाबाद लाया था जिसे अशोक ने स्तंभलेख उत्कीर्ण करवाये थे।
- बैराट का अभिलेख कनिंघम कलकत्ता लाया।

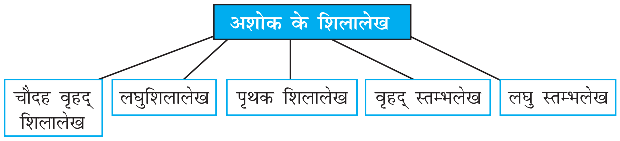


## अशोक के शिलालेख और उनके विषय

| | | |
|---|---|---|
| पहला शिलालेख | – | पशुबलि निषेध किया गया है। |
| दूसरा शिलालेख | – | मनुष्य एवं पशु चिकित्सा–व्यवस्था तथा विदेशों में धम्म प्रचार का उल्लेख |
| तीसरा शिलालेख | – | राज्जुक एवं युक्त की नियुक्ति तथा राजकीय अधिकारियों को हर पांच वर्ष पर राज्य भ्रमण करने का आग्रह |
| चौथा शिलालेख | – | भेरीघोष की जगह धम्मघोष की घोषणा |
| पाँचवां शिलालेख | – | धम्म–महामात्रों की नियुक्ति |
| छठा शिलालेख | – | प्रशासनिक सुधारों एवं आत्म–नियंत्रण की शिक्षा का उल्लेख |
| सातवाँ शिलालेख | – | अशोक की सभी धार्मिक मतों के प्रति निष्पक्षता |
| आठवाँ शिलालेख | – | बोधगया की यात्रा का उल्लेख एवं विहार यात्रा के स्थान पर धम्म यात्रा का प्रतिपादन |
| नवाँ शिलालेख | – | सच्ची भेंट तथा सच्चे शिष्टाचार का उल्लेख |
| दसवाँ शिलालेख | – | राजा तथा उच्च अधिकारी हमेशा प्रजा के हित सोचें |
| ग्यारहवाँ शिलालेख | – | धम्म की व्याख्या |
| बारहवाँ शिलालेख | – | धार्मिक सहिष्णुता पर जोर एवं स्त्री महामात्रों की नियुक्ति |
| तेरहवाँ शिलालेख | – | कलिंग युद्ध का वर्णन एवं अशोक के हृदय–परिवर्तन की बात तथा धम्म विजय की घोषणा, विदेशों में धम्म प्रचार (पांच विदेशी राज्यों की चर्चा) का उल्लेख किया गया है। |
| चौदहवाँ शिलालेख | – | पहले तेरह शिलालेखों का पुनरावलोकन तथा जनता को धार्मिक जीवन बिताने के लिए प्रेरित किया गया है। |

- अशोक के अधिकांश अभिलेख 'ब्राह्मी लिपि' में लिखे गये हैं।
- दो वृहद् शिलालेख मानसेहरा और शाहबाजगढ़ी 'खरोष्ठी लिपि' में लिखे गए हैं।
- 'कंधार अभिलेख' दो भाषाओं ग्रीक एवं आर्मेइक भाषा में लिखे गये हैं।
- अशोक के अभिलेखों में कंधार को छोड़कर शेष सभी प्राकृत भाषा में लिखे गये हैं।
- लैम्पाक में खंडित अवस्था में एक अभिलेख पाया गया है, जो आर्मेइक भाषा में है।
- इलाहाबाद स्तम्भ जो कौशाम्बी से लाया गया था, इस पर समुद्रगुप्त और जहाँगीर के भी अभिलेख हैं।
- वृहद् शिलालेखों की संख्या 14 है।
- स्तम्भ लेखों की कुल संख्या 13 है, जो दस स्तम्भों पर अंकित है।
- चार लघु स्तम्भ लेखों में से एक को 'रानी का लेख' कहा जाता है, जो इलाहाबाद में है।
- विभाजित लेख इलाहाबाद, साँची और सारनाथ स्तम्भों पर पाए गए हैं।

## अशोक के स्तम्भ लेखों पर उत्कीर्ण पशु

| अभिलेख | पशु |
|---|---|
| लौरिया नन्दनगढ़ | एक सिंह |
| रामपुरवा | एक सिंह |
| सारनाथ | चार सिंह |
| सांची | चार सिंह |

- अशोक के स्तम्भ एकाश्म अर्थात् एक ही पत्थर से तराश कर बनाए गए हैं। इनके निर्माण में चुनार के बलुआ पत्थर का उपयोग हुआ है।
- ❖ सांची का स्तूप (विदिशा, मध्यप्रदेश), भरहुत का स्तंभ (सतना, मध्यप्रदेश) तथा सारनाथ स्थित धर्मराजिका स्तूप का निर्माण अशोक ने करवाया था।
- मौर्य वंश का राजकीय चिह्न मयूर (मोर) था।
- रुम्मिनदेई और निगालीसागर (दोनों नेपाल में) स्मारक स्तम्भ लेख हैं।
- प्रधान शिलालेखों में सबसे बड़ा 13वां शिलालेख है।
- सातवां स्तम्भ लेख सभी लेखों में सबसे बड़ा है।
- अशोक के शिलालेख की खोज 1750 ई. में पाद्रेटी फेन्थैलर ने की थी।
- राज्याभिषेक से सम्बन्धित मास्की के लघु शिलालेख में अशोक ने स्वयं को बुद्ध शाक्य कहा है।
- ❖ सोहगौरा तथा महास्थान अभिलेख में दुर्भिक्ष के अवसर पर राज्य द्वारा कोष्ठागार से अनाज वितरण का विवरण मिलता है।
- भाब्रू अभिलेख अशोक का सबसे लम्बा स्तंभ लेख है।
- बौद्ध परंपरा अशोक को 84 हजार स्तूपों के निर्माण का श्रेय प्रदान करती है।
- अशोक का प्रधानमंत्री राधागुप्त था।
- फ्लीट अशोक के धम्म को राजधर्म मानते हैं।
- रोमिला थापर के अनुसार धम्म अशोक का अपना आविष्कार था।

## मौर्य प्रशासन

- सत्ता का केन्द्रीयकरण राजा में होते हुए भी वह निरंकुश नहीं होता था।
- कौटिल्य ने राज्य के सात अंग निर्दिष्ट किए हैं : राजा, अमात्य, जनपद, दुर्ग, कोष, सेना और मित्र।
- राजा द्वारा मुख्यमंत्री एवं पुरोहित की नियुक्ति उनके चरित्र की भली-भाँति जाँच के बाद की जाती थी, इस क्रिया को 'उपधा परीक्षण' कहा जाता था।
- ❖ अर्थशास्त्र में 18 विभागों का उल्लेख है, जिसे 'तीर्थ' कहा गया है।
- ❖ तीर्थों के अध्यक्ष को महामात्र कहा गया है।
- ❖ प्रांतों का शासन राजवंशीय 'कुमार' या 'आर्यपुत्र' नामक पदाधिकारियों द्वारा होता था।
- ❖ विषय (जिला) विषयपति के अधीन होता था।
- ❖ जिले का प्रशासनिक अधिकारी स्थानिक था जो समाहर्ता के अधीन था।
- प्रशासन की सबसे छोटी इकाई 'गोप' था, जो दस गाँवों का शासन संभालता था।
- समाहर्ता के अधीन प्रदेष्ट्रि नामक अधिकारी भी होता था, जो स्थानिक, गोप एवं ग्राम अधिकारियों के कार्यों की जाँच करता था।
- ❖ मेगस्थनीज के अनुसार नगर का प्रशासन 30 सदस्यों का एक मंडल करता था, जो 6 समितियों में विभक्त था।
- प्रत्येक समिति में 5 सदस्य होते थे।

| | |
|---|---|
| प्रथम समिति | – उद्योग शिल्पों का निरीक्षण |
| द्वितीय समिति | – विदेशियों की देख-रेख |
| तृतीय समिति | – जन्म-मरण का लेखा-जोखा |
| चतुर्थ समिति | – व्यापार/वाणिज्य |
| पांचवीं समिति | – निर्मित वस्तुओं के विक्रय का निरीक्षण |
| छठी समिति | – विक्रय मूल्य का दसवाँ भाग विक्रय कर के रूप में वसूलना। |

- सैनिक प्रबंध की देख-रेख करने वाला तथा सीमांत क्षेत्रों का व्यवस्थापक अंतपाल होता था।
- ❖ मौर्यकाल में दो प्रकार के न्यायालय थे :

(1) कण्टकशोधन - यह फौजदारी न्यायालय था।

(2) धर्मस्थीय - यह दीवानी न्यायालय था।

- नगर न्यायाधीश को व्यावहारिक महामात्र तथा जनपद न्यायाधीश को 'राज्जुक' कहते थे।
- चाणक्य के अनुसार कानून के चार मुख्य अंग थे–धर्म, व्यवहार, चरित्र और शासन।
- मौर्यकाल में दो प्रकार के गुप्तचर (गूढ़ पुरुष) थे।
- (1) संस्था- एक जगह स्थिर होकर गुप्तचरी करते थे।
- (2) संचार–घूम-घूमकर गुप्तचरी करते थे।
- स्त्री गुप्तचर भी थी जिन्हें वृषली, भिक्षुकी तथा परिव्राजक कहा जाता था।
- राज्य की अर्थ-व्यवस्था 'कृषि, पशुपालन और वाणिज्य' पर आधारित थी, जिन्हें सम्मिलित रूप से 'वार्ता' कहा गया है।
- ❖ अदेवमातृक (मुख्य कृषि भूमि)–ऐसी भूमि जिसमें बिना वर्षा के भी अच्छी खेती हो सके।
- मौर्यकाल में चाँदी की आहत मुद्रायें चलती थीं, जिन पर मयूर, पर्वत और अर्द्धचंद्र की मुहर अंकित होती थी।
- निजी खेती करने पर राजा को उपज का 1/6 भाग दिया जाता था।
- ❖ बलि एक प्रकार का भू-राजस्व कर था।
- ❖ हिरण्य कर अनाज के रूप में न होकर नकद लिया जाता था।
- ❖ राजकीय भूमि से होने वाली आय को सीता कही जाती थी।
- एग्रोनोमई मार्ग निर्माण के विशेष अधिकारी को कहा जाता था।
- दूरी मापने की इकाई को 10 स्टेडिया कहा जाता है।
- कौटिल्य के अनुसार दक्षिण से बहुमूल्य वस्तुयें–मुक्ता, मणि, हीरा, सोना, शंख इत्यादि आने के कारण, दक्षिण से व्यापार अधिक लाभदायक था।
- भारत का व्यापार रोम, फारस, सीरिया, मिस्र आदि देशों से होता था।
- ❖ पूर्वी तट पर ताम्रलिप्ति तथा पश्चिमी तट पर सोपारा एवं भड़ौच (भृगुकच्छ) प्रमुख बन्दरगाह थे।
- ब्याज को रूपिका एवं परीक्षण कहा जाता था।
- ❖ व्यापारियों के श्रेणी के प्रधान को सार्थवाह कहा जाता था।

## मौर्य साम्राज्य के पतन के कारण

- अशोक के दुर्बल अधिकारी
- उत्तराधिकारी के निश्चित नियम का अभाव
- ब्राह्मणों द्वारा विद्रोह
- राज्यपालों के अत्याचार
- आन्तरिक विद्रोह
- विदेशी आक्रमण
- विशाल साम्राज्य
- धन का अभाव
- गुप्तचर विभाग का अभाव
- सैनिक शक्ति का क्षीण होना

## शुंग, कण्व एवं सातवाहन राजवंश

- ❖ मौर्य वंश के बाद शुंग वंश ने राज्य स्थापित किया।
- पुष्यमित्र शुंग मौर्यों का सेनापति था।
- मौर्य वंश के अंतिम शासक बृहद्रथ की हत्या करके पुष्यमित्र शुंग राजा बना।
- शुंग वंश का संस्थापक पुष्यमित्र शुंग (184 ई.पू. में) था।
- पुष्यमित्र शुंग ब्राह्मण धर्म का उपासक एवं संरक्षक था।
- ❖ पुष्यमित्र शुंग के दो बार अश्वमेध यज्ञ करने की पुष्टि पतंजलि के महाभाष्य से होती है।
- इण्डो यूनानी शासक मिनाण्डर ने पुष्यमित्र शुंग को हराया था।

- शुंग वंश का चौथा प्रतापी राजा वसुमित्र (यवनों को हराया था) था।
- शुंग शासकों की राजधानी विदिशा थी।
- शुंगकाल में संस्कृत भाषा एवं ब्राह्मण व्यवस्था का पुनरुत्थान हुआ।
- इसी काल में पहला स्मृति ग्रंथ मनुस्मृति की रचना की गई।
- कालिदास के मालविकाग्निमित्र नाटक का नायक अग्निमित्र था।
- पुष्यमित्र शुंग को कलिंग नरेश खारवेल ने पराजित किया था।
- पाणिनि की अष्टाध्यायी पर पतंजलि ने महाभाष्य लिखा।
- भरहुत एवं साँची के स्तूपों का पुनर्निर्माण शुंगकाल में हुआ था।
- शुंग वंश के अंतिम शासक देवभूति को उसके अमात्य वासुदेव ने 73 ई. पू. में हत्या करके कण्व वंश की स्थापना की।
- सुशर्मा कण्व वंश का अंतिम शासक था जिनकी हत्या सातवाहन नरेश सिमुक ने कर दी।
- सातवाहन वंश की स्थापना सिमुक ने (30 ई.पू. में) की थी।
- शातकर्णि प्रथम के बारे में नागनिका के नानाघाट अभिलेख से जानकारी मिलती है।
- शातकर्णि प्रथम ने अपनी राजधानी प्रतिष्ठान को बनाया।
- गाथा सप्तशती की रचना सातवाहन नरेश हाल ने (हाल कवि एवं साहित्यकार भी था) की। यह प्राकृत भाषा का ग्रन्थ है।
- सातवाहन वंश का महानतम शासक गौतमी पुत्र शातकर्णि था।
- गौतमी पुत्र ने वेणकटक स्वामी की उपाधि धारण की थी।
- शून्यवाद के संस्थापक नागार्जुन गौतमी पुत्र शातकर्णि के समकालीन थे।
- शक महाक्षत्रप रुद्रदामन की पुत्री का विवाह - वाशिष्ठी पुत्र पुलुमावी से हुआ था।
- पुलुमावी ने दक्षिणापथेश्वर की उपाधि धारण की थी।
- सातवाहनों ने अधिकांशत: सीसे के सिक्के चलाये।
- सातवाहन काल में चाँदी एवं ताँबे के सिक्कों का प्रयोग होता था जिसे कार्षापण कहा जाता था।
- ब्राह्मणों को सर्वप्रथम भूमिदान एवं जागीर देने की प्रथा का आरम्भ सातवाहनों ने किया।
- सातवाहन सीसे का आयात रोम से करते थे।
- सातवाहनों की राजकीय भाषा प्राकृत थी जो कि ब्राह्मी लिपि में थी।
- अजंता एवं एलोरा की गुफाओं का निर्माण, अमरावती एवं नागार्जुनकोंडा के स्तूपों का निर्माण तथा कार्ले के चैत्य का निर्माण सातवाहनों ने कराया।
- यज्ञ श्री शातकर्णि के सिक्कों पर जलपोत के चिह्न मिलते हैं।
- गौतमी पुत्र शातकर्णि ने वेणकटक नामक नगर की स्थापना की।
- शातकर्णि प्रथम को पुराणों में कृष्ण का पुत्र कहा गया है।
- सर्वमान्य तौर पर सातवाहनों का मूल स्थान महाराष्ट्र के प्रतिष्ठान को माना जाता है।
- सातवाहन वंश के शासकों को दक्षिणाधिपति तथा इनके द्वारा शासित प्रदेश को दक्षिणापथ कहा जाता है।
- सातवाहनों में मातृसत्तात्मक सामाजिक व्यवस्था थी।
- वृहतकथा की रचना गुणाढ्य ने की थी।

**सातवाहनों के उत्तराधिकारी**

| | |
|---|---|
| नासिक | आभीर |
| बरार | वाकाटक |
| उत्तरी कनारा | कुन्तल |
| दक्षिण-पूर्व | पल्लव |

## विदेशी आक्रमणकारियों का भारत में आगमन

- बैक्ट्रियाई शासकों का इतिहास उनके सिक्कों के आधार पर लिखा गया है।
- बैक्ट्रियाई या यूनानी वंश की दो शाखायें थीं– (1) यूथेडेमस वंश (2) यूक्रेटाइड्स वंश।
- यूथेडेमस वंश की राजधानी स्यालकोट या साकल थी।
- यूक्रेटाइड्स वंश की राजधानी तक्षशिला थी।
- भारत के भीतरी भाग में प्रवेश करने वाला पहला यूनानी शासक डेमेट्रियस था।
- डेमेट्रियस ने अपने पिता की स्मृति में यूथीडेमिया नामक नगर बसाया।
- मिलिन्द अथवा मिनाण्डर की बौद्धमत के प्रति बहुत श्रद्धा थी।
- 'मिलिन्दपन्हो' नामक ग्रन्थ में मिनाण्डर एवं बौद्ध भिक्षु नागसेन के बीच संवाद का संकलन है।
- युक्रेटाइडिस को यूनानी स्रोतों में एशिया का संरक्षक कहा गया है।
- भारत में सबसे पहले सोने के सिक्के यूनानियों ने जारी किये।
- सिक्कों पर राजाओं के चित्र एवं तिथि लेखन की परिपाटी यूनानियों ने ही शुरू किया।
- यूनानियों ने ही भारतीयों को हेलनेस्टिक कला से परिचित कराया, जिसने बाद में गांधार शैली का रूप लिया।
- भारत में पहला पार्थियन या पहलव शासक माउस (90 ई. पू.-70 ई. पू.) था।
- पहलवों का मूल स्थान ईरान में था।
- गोन्डोफर्निस पहलव वंश का सबसे शक्तिशाली शासक था।
- इसके शासनकाल का एक अभिलेख 'तख्तेबही' पेशावर से प्राप्त हुआ है।
- गोन्डोफर्निस के समय ही इसाई धर्म प्रचारक सेन्ट थॉमस भारत आया था।
- पहलवों के सिक्कों का भण्डार तक्षशिला में सिरकप के पास खुदाई में मिला है।
- कुषाणों ने पहलवों का साम्राज्य विजित कर लिया।
- भारत में शकों की दो शाखायें थी, जो पश्चिमी भारत में केन्द्रित थी– (1) क्षहरात (2) कार्द्धमक
- क्षहरात शक महाराष्ट्र के नासिक में केन्द्रित थे।
- कार्द्धमक सौराष्ट्र-क्षेत्र के उज्जैन में केन्द्रित थे।
- क्षहरात वंश का पहला शासक माउस या मोग था।
- नहपान ने क्षत्रप और महाक्षत्रप दोनों ही उपाधियाँ धारण की थी।
- नहपान ने महाराष्ट्र का एक बड़ा भाग सातवाहनों से छीना था।
- प्रसिद्ध व्यापारिक केन्द्र भड़ौच पर क्षहरातों का कब्जा था।
- कार्द्धमक शक शाखा का संस्थापक यशोमितिक था।
- कार्द्धमक शाखा का सबसे प्रसिद्ध शासक रुद्रदामन (130–150 ई॰) था।
- रुद्रदामन के सम्बन्ध में जानकारी उसके गिरनार (जूनागढ़) अभिलेख से मिलती है।
- जूनागढ़ अभिलेख संस्कृत भाषा में लिखा पहला बड़ा शिलालेख है।
- रुद्रदामन ने सुदर्शन झील के बाँध का पुनर्निर्माण कराया था।
- कार्द्धमक वंश का अंतिम् शासक रुद्र सिंह द्वितीय था।

### शक

- भारत में यूनानियों के बाद शक आये थे।
- शक मूलत: मध्य एशिया के निवासी थे।
- शक चारागाह की खोज में भारत आए थे।

- उज्जैन के एक स्थानीय राजा ने शकों को 58 ई.पू. पराजित कर विक्रमादित्य की उपाधि धारण की।
- शकों पर विजय के उपलक्ष्य में शुरू किया गया शंवत-विक्रम संवत (58 ई.पू.)।
- गुप्त सम्राट चन्द्रगुप्त II सबसे अधिक विख्यात विक्रमादित्य था।
- शकों का सबसे प्रतापी राजा – रुद्रदामन I
- काठियावाड़ के सुदर्शन झील का जीर्णोद्धार कराया – रुद्रदामन I
- शुदर्शन झील का निर्माण किया गया था – मौर्यो द्वारा।
- रुद्रदामन संस्कृत प्रेमी था।
- संस्कृत भाषा में लिखा गया सबसे लंबा अभिलेख – गिरनार अभिलेख (रुद्रदामन I)।
- भारत के शक राजा अपने आप को क्षत्रप कहते थे।

## कुषाण वंश

- भारत में कुषाण वंश की स्थापना कुजुल कडफिसेस ने 15 ई० में की।
- चीनी स्रोतों के अनुसार कुषाण चीन के पश्चिमोत्तर क्षेत्र के यू-ची कबीले के थे।
- कुजुल कडफिसेस ने काबुल और कश्मीर में हरमोयस को हराकर अपना राज्य स्थापित किया।
- कुजुल कडफिसेस ने केवल ताँबे के सिक्के चलवाये।
- कुजुल कडफिसेस के बाद विम कडफिसेस (65 ई. में) राजा बना।
- विम कडफिसेस ने सोने एवं ताँबे के सिक्के जारी किये।
- यद्यपि उसके ताम्र तथा रजत (चाँदी) के सिक्के भी मिले हैं तथापि स्वर्ण सिक्के की संख्या अधिक है।
- भारत में सर्वप्रथम यूनानियों ने ही सोने के सिक्के जारी किए, जिनकी मात्रा कुषाणों के शासन काल में बढ़ी।
- कुषाण शासकों ने स्वर्ण एवं ताँबा दोनों ही प्रकार के सिक्कों को प्रचलित किया था।
- विम कडफिसेस ने महाराज, राजाधिराज, महेश्वर एवं सर्वलोकेश्वर की उपाधि धारण की।
- विम कडफिसेस के सिक्कों पर शिव, नन्दी एवं त्रिशूल की आकृति खुदी थी।
- विम कडफिसेस शैव धर्म को मानता था।
- कुषाण वंश का सबसे प्रतापी शासक कनिष्क था।
- कनिष्क 78 ई. में राजा बना तथा कनिष्क ने 78 ई. में शक संवत् शुरू किया था।
- यही आजकल भारत का राष्ट्रीय पंचांग है।
- कनिष्क की राजधानी पुरुषपुर (पेशावर) थी।
- कनिष्क की द्वितीय राजधानी मथुरा में थी।
- कनिष्क ने पाटलिपुत्र के शासक को हराकर, वहाँ से विद्वान अश्वघोष, बुद्ध का भिक्षापात्र एवं एक अनोखा मुर्गा साथ लाया।
- कनिष्क ने कश्मीर विजय के बाद वहाँ कनिष्कपुर नगर बसाया।
- कनिष्क की सबसे महत्वपूर्ण विजय चीन के यारकंद, खोतान तथा काशगर की विजय थी।
- कुषाण राजा देवपुत्र की उपाधि धारण की थी जिसे चीनियों से ली थी।
- कनिष्क बौद्ध धर्म की महायान शाखा का अनुयायी था।
- चौथी बौद्ध संगीति में बौद्ध धर्म हीनयान तथा महायान नामक शाखाओं में बँट गया।
- चौथी बौद्ध संगीति में 'विभाषाशास्त्र' पुस्तक लिखी गई।
- कनिष्क के सिक्के यूनानी एवं ईरानी भाषा में थी।
- मथुरा से प्राप्त कनिष्क की मूर्ति सैनिक वेशभूषा में है।
- बुद्ध के अवशेषों पर कनिष्क ने पेशावर में एक स्तूप एवं मठ का निर्माण करवाया।
- कनिष्क के दरबार में महान दार्शनिक अश्वघोष रहता था।
- अश्वघोष कनिष्क के राजकवि थे।
- अश्वघोष ने बुद्धचरित् एवं सूत्रालंकार की रचना की।
- कुषाण शासक कनिष्क के समकालीन नागार्जुन, अश्वघोष एवं वसुमित्र थे।
- इस समय कला की दो शैलियाँ (1) मथुरा शैली तथा (2) गांधार शैली प्रसिद्ध थीं।
- गांधार शैली में निर्मित बुद्ध तथा बोधिसत्व मूर्तियाँ ही विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं।
- मथुरा शैली में अनेक स्तूपों, विहारों तथा मूर्तियों का निर्माण किया गया है।
- गांधार शैली को यूनानी-बौद्ध, इण्डो ग्रीक-रोमन कला भी कहा जाता है।
- प्रसिद्ध दार्शनिक एवं वैज्ञानिक तथा शून्यवाद का प्रतिपादक नागार्जुन कनिष्क के दरबार में रहता था।
- नागार्जुन ने 'माध्यमिक सूत्र' ग्रंथ लिखा।
- 'विभाषाशास्त्र' की रचना वसुमित्र ने की।
- कनिष्क का दरबारी चिकित्सक चरक था।
- चरक ने 'चरक संहिता' लिखी थी।
- बौद्ध धर्म का विश्वकोष 'विभाषाशास्त्र' को कहा जाता है।
- कनिष्क का पुरोहित संघरक्ष था।
- कनिष्क को बौद्ध धर्म में अवश्घोष ने दीक्षित किया।
- भारत का आइन्सटीन नागार्जुन को कहा गया है।
- कुषाण वंश का अंतिम शासक वासुदेव था।
- वासुदेव शैव मतानुयायी था।
- उसकी मुद्राओं पर शिव तथा नन्दी की आकृतियाँ उत्कीर्ण मिलती हैं।
- तक्षशिला में सिरकप नगर की स्थापना कनिष्क ने की।
- सर्वाधिक शुद्ध सोने के सिक्के कुषाणों ने चलाये।
- कुषाण शासकों को देवपुत्र कहा जाता था।
- कुषाणों में मृत शासकों की मूर्तियों को मन्दिरों में रखा जाता था।
- सेना में घुड़सवारी की दक्षता, सैनिक वेशभूषा एवं व्यूह रचना के क्षेत्र में कुषाणों ने भारत को नई जानकारियां दी।
- मथुरा से कनिष्क की एक सिर रहित मूर्ति मिली है जिस पर 'महाराज राजाधिराजा देवपुत्रों कनिष्को' अंकित है।
- अश्वघोष की रचनाओं की पाण्डुलिपियाँ मध्य एशिया के तुरफान से मिली हैं।
- चीन से व्यापार करने के लिये रोम को कुषाणों से मधुर संबंध बनाने पड़े।
- यह व्यापार महान रेशम मार्ग या सिल्क मार्ग से सम्पन्न होता था।
- इससे कुषाणों को बहुत अधिक आय होती थी।
- सर्वाधिक बुद्ध की मूर्तियों का निर्माण गांधार कला के अन्तर्गत हुआ है।
- पतंजलि ने मथुरा से सटका नामक वस्त्र पाये जाने का उल्लेख किया है।
- भारत में इथोपिया से हाथी दाँत एवं सोना आता था।
- तक्षशिला विभिन्न दिशाओं से आने वाले माल के संग्रह स्थल के रूप में प्रसिद्ध था।

## कश्मीर के राजवंश

- कश्मीर पर शासन करने वाले राजवंशों का क्रम- कार्कोट वंश, उत्पल वंश, लोहार वंश
- कार्कोट वंश की स्थापना - दुर्लभवर्द्धन (627 ई.) (हिन्दू)
- ह्वेनसांग ने कश्मीर यात्रा की - दुर्लभवद्धन के काल में।
- कार्कोट वंश का सबसे शक्तिशाली राजा - ललितादित्य मुक्तापीड।
- कश्मीर में मार्तण्ड-मंन्दिर का निर्माण - ललितादित्य मुक्तापीड।
- उत्पल वंश का संस्थापक - अवन्तिवर्मन।
- अवन्तिवर्मन नगर की स्थाना की - अवन्तिवर्मन ने।
- अवन्तिवर्मन ने सिंचाई के लिए नहरों का निर्माण कराया - अभियंता सूय्य।
- रानी दीधा संबंधित थी - उत्पल वंश से।
- लोहार वंश का संस्थापक - संग्रामराज।
- लोहार वंश का शासक हर्ष, कवि, विद्वान तथा कई भाषाओं का ज्ञाता था।
- कल्हण हर्ष पर आश्रित कवि था।
- लोहार वंश का अंतिम शासक - जयसिंह।
- राजतरंगिणी के रचनाकार - कल्हण।

## संगम युग

- 'संगम' का शाब्दिक अर्थ होता है—साहित्यकारों की सभा या मंडली।
- भारत में तीन संगम-प्रथम मदुरई, दूसरा कपाटपुरम और तीसरा पुन: मदुरई में हुए।

### प्रमुख राजवंश

- संगम साहित्य से हमें सुदूर दक्षिण के तीन प्रमुख राज्यों-पांड्य, चोल तथा चेर के उद्‌भव और विकास का विवरण प्राप्त होता है।

**संगम साहित्य**–तीन संगम हुए

**प्रथम संगम– स्थान :** मदुरई

- 89 पाण्ड्य राजाओं का संरक्षण
- भाग लेने वाले कुल 549 संस्थान, 7 कवि, 4499 लेखक
- 4400 वर्ष तक चला
- **अध्यक्षता :** ऋषि अगस्त (अगत्तियवार)
- **प्रमुख उपस्थित देवता :** अगस्त्य, तिरिपुरामेरीथा (शिव), कुमरामेरिंडा (मुरुगन या सुब्रह्मण्यम), मुरांजीयुर (आदि शेष)।
- **मानक ग्रंथ :** अक्कतियम् (अगस्त्यकृत), परिपदल, मुदुनरै, मुदकुग, कलरियाविरुई आदि।
- **उपलब्ध ग्रंथ :** कोई नहीं
- इस संगम के आचार्य थे अगत्तियार या अगस्त्य जो कि उत्तर भारत से आर्य-संस्कृति को लेकर दक्षिण भारत आये।

### द्वितीय संगम

- **स्थान :** कपाटपुरम (वर्तमान अलवै-समुद्र में विलीन)
- 59 पाण्ड्य राजाओं का संरक्षण
- भाग लेने वाले 49 अकादमी सदस्य, 3700 कवि
- 3700 वर्ष तक चला
- इस संगम के आचार्य थे अगत्तियार एवं तोलकाप्पियर (कार्यकारी अध्यक्ष)
- **मानक ग्रंथ :** अक्कतियम् (अगस्त्यकृत), तोलकाप्पियम, मापुरानम, इसै-नुनुक्कम्, भूतपुरानम्, केलि, कुरुकु, वेन्दालि एवं व्यालमलय आदि।
- **तोलकाप्पियम :** लेखक - तोलकाप्पियर
- **उपलब्ध ग्रंथ :** तोलकाप्पियम यह तमिल भाषा का प्राचीनतम व्याकरण ग्रंथ है।
- इसके तीन भाग हैं-
  (i) इलुथु – वर्ग विचार
  (ii) सोल – वाक्य विचार
  (iii) पोरूल – वस्तु

**तृतीय संगम स्थान :** उत्तरी मदुरई

- इसमें 49 पाण्ड्य राजा, 49 संस्थान और 449 कवि सम्मिलित थे।
- 1850 वर्ष तक चला।
- **प्रमुख उपस्थित व्यक्ति**–नक्कीरर (अध्यक्ष), पाण्ड्यराजा उद्र, सित्तलै सित्तनार कपिलर, परनर आदि।
- इस संगम के आचार्य थे **नक्कीरर**।
- **मानक ग्रंथ**–पदित्तुप्पत्रु, परिपादल, वरि, वेरिसै आदि।
- **द्वितीय शताब्दी तमिल साहित्य का स्वर्णयुग**–अगस्त्य युग
- तृतीय संगम में जैन, बौद्ध, हिन्दू तीनों संप्रदाय के लोगों ने भाग लिया।

**पाँच महाकाव्य**

1. **शिलप्पदिकारम् (नूपुर की कहानी)**– लेखक इलांगो आदिगल (बौद्ध)
2. **मणिमेखलै**–लेखक सित्तलै सित्तनार (बौद्ध)
3. **जीवक चिन्तामणि**–लेखक तिरूत्तक्कदेवर (जैन)
4. **वलयपलि**
5. **कुंडलकेशि**

**पाँच काव्य**

1. यशोधरा काव्यम् (संस्कृत ग्रंथ पर आधारित)
2. चुलामणि (सबसे बड़ा और सबसे अच्छा)
3. उद्यनकाव्यम
4. नागकुमारम्
5. नीलकेशी (बौद्ध दर्शन पर आधारित)

- दक्षिण भारत में आर्य संस्कृति अगस्त्य ऋषि ने फैलाई।
- संगम युग का समय लगभग 300 ई.पू. से 300 ई. तक था।
- दक्षिण भारत की प्राचीन भाषा तमिल है।
- संगम शब्द का प्रयोग विद्वत् परिषद् के लिये होता था।
- विद्वत् परिषद् मदुरई एवं कपाटपुरम में आयोजित होती थी।
- पाण्डय शासकों की राजधानी मदुरई में थी।
- 'तोलकाप्पियम्' की रचना तोलकाप्पियर ने की थी, जिसे तमिल भाषा का व्याकरण कहा जाता है।
- 'शिल्पादिकारम्' की रचना इलांगोआदिगल ने की।
- यह एक प्रेम कथा है।
- यह तमिल काव्य का इलियड कहलाता है।
- 'मणिमेखलै' सित्तलैसित्तनार ने लिखा था।
- इसे तमिल काव्य का ओडिसी कहा जाता है।
- इसमें संगमयुगीन ललितकला के विकास का उल्लेख है।
- चेर राज्य की राजधानी वांजि या करूयुर थी।
- चोलों की राजधानी उरैयुर में थी।
- चोलों का राजकीय चिह्न बाघ था।
- संगम युग में सती प्रथा का उल्लेख मणिमेखलै अभिलेख में मिलता है।
- मेगास्थनीज ने सर्वप्रथम पाण्ड्यों का उल्लेख किया है।

- चेर देश गोलमिर्च एवं हल्दी के लिये प्रसिद्ध था।
- चेरों का राजकीय चिह्न धनुष था।
- उरैयुर सूती वस्त्र के लिये प्रसिद्ध था।
- बड़े कृषक तथा शासक वर्ग को वेल्लाल कहा जाता था।
- शिकारियों को एनियार कहा जाता था।
- पाण्ड्य देश मोतियों के लिये प्रसिद्ध था।
- पाण्ड्यों का राजकीय चिह्न मछली था।
- वेंगी नदी पाण्ड्य राज्य की जीवन रेखा थी।
- यवन व्यापारियों की बस्तियाँ मुजरिस, पुहार तथा तोण्डी में थी।
- रथों को बैलों से खींचा जाता था।
- संगमकाल के प्रमुख निर्यात मोती, मसाले, कीमती पत्थर, हाथी दांत से बनी वस्तुएं थी।
- संगमकाल की प्रमुख फसलें-धान, गन्ना एवं रागी (मरूआ) थीं।

| संगमकालीन समाज | |
|---|---|
| (i) अरसर (शासक) | (ii) अडनर (ब्राह्मण) |
| (iii) वेनिगर (वणिक) | (iv) वेल्लाल (कृषक) |

- संगमकालीन लोगों का प्रिय भोजन चावल था।
- संगम युग के प्रतिनिधियों की सभा मनरम् कहलाती थी।
- अरिकमेडु व्यापारिक केन्द्र के रूप में प्रसिद्ध था।
- विष्णु पुराण का उल्लेख मणिमेखलै अभिलेख में मिलता है।
- सिन्धु से कन्याकुमारी तक चौबीस बन्दरगाहों का उल्लेख 'पेरिप्लस ऑफ द इरिथ्रियन सी' नामक अज्ञात लेखक की पुस्तक में मिलता है।
- सबसे शक्तिशाली चोल शासक करिकाल था।
- भारत एवं रोम के बीच व्यापार का पता 'पेरिप्लस ऑफ द इरिथ्रियन सी' से चलता है।
- मॉनसून की खोज हिप्पोलस ने की थी।
- रोमनों ने मुजरिस स्थल पर आगस्टस का मन्दिर बनवाया।
- शासक वर्ग को संगम काल में असरार जाता था।
- पत्नि पूजा चेर शासक शेनगुट्टूवन के शासनकाल से प्रारम्भ हुआ।
- चोल शासक करिकाल ने कावेरी नदी पर लम्बा बाँध बनवाया।
- भूमि कर को 'करै', सीमाशुल्क को 'उल्गु' तथा अतिरिक्त कर को 'इखै' कहा जाता था।
- तमिल क्षेत्र में छोटे गांव को 'सिकर' तटीय शहर को 'पट्टिनम' प्रमुख सड़कों को 'साले' एवं नगर की मुख्य गली को तेरु कहा जाता था।
- संगम युग का सर्वाधिक लोकप्रिय देवता मुरुगन था।
- इन्द्र, मुरुगन, शिव, विष्णु, कृष्ण, बलराम को संयुक्त रूप से 'देववृन्द' कहा जाता था।
- संगम युग में मन्दिर को नागर कहा जाता था।
- संगम युग की संस्कृति तमिल और आर्य संस्कृतियों का समन्वय है।

## सभा के लिये संगम साहित्य में प्रयुक्त शब्द

मनरम्-शाब्दिक अर्थ-यवन। पोडियाल- शाब्दिक अर्थ-सार्वजनिक स्थल। मनरम् के अर्थ में 'अवै' शब्द भी मिला है। राजा अपनी सभा 'नालवै' में प्रजा की कठिनाइयों पर विचार करता था। सर्वोच्च न्यायालय-मनरम्। राजा-मन्नम, वेदन, कौशवन, इरैवन। राजा का जन्मदिन-पेरुनल।

- **कुरलमारम/कादीमारम**-राजमहल में प्रचलित एक विशेष प्रथा जिसके अंतर्गत प्रत्येक शासक अपनी शक्ति के प्रतीक के रूप में अपने राजमहल में एक महान वृक्ष रखते थे।
- पुरुनानुरु से चक्रवर्ती राजा की अवधारणा का उल्लेख मिलता है।
- गायकों के गायन के साथ नर्तकियाँ नाचती थी, जिन्हें 'पाणर' या 'विडैलियर' कहा जाता था।
- राजा की सहायता हेतु नियुक्त अधिकारियों का समूह पाँच परिषदों में विभाजित था।
- अमईचार (मंत्री), सेनापत्तियार, पुरोहित्तार (पुरोहित), दुत्तार, ओर्रार (गुप्तचर)।
- राज्य मंडलों में, मंडल नाडु या जिला में तथा नाडु ऊर या गाँव में विभाजित थे।
- पत्तिनम-समुद्रतटीय कस्बा था।
- पेरूर-बड़े गाँव, सिरूर-छोटे गाँव, मुदुर-पुराने गाँव को कहा जाता था।

## भू राजस्व प्रशासन

- कृषि-राजकीय आय का मुख्य स्रोत।
- आवूर किलार के अनुसार-हाथी के लेटने में जितनी जमीन घिरती थी, उतनी जमीन में सात लोगों के खाने के लिए अनाज पैदा होता था।
- एक अन्य कवि के अनुसार-एक वेलि भूमि में एक सहस 'कलम' चावल पैदा होता था।
- महत्वपूर्ण बंदरगाह-पुहार (चोल), शालीपुर (पाण्ड्य), बंदर (चेर) था।
- चेरों की प्राचीन राजधानी कुरूर, से रोमन सामग्री प्राप्त होती है।
- विरुक्काम्पलिया-चोल, चेर, पांड्य-तीनों राज्यों का संगम स्थल था।
- रोम के अतिरिक्त मिस्र, अरब, चीन और मालद्वीप के साथ व्यापार होता था।
- मासात्तवा-स्थलीय सार्थवाह।
- तिरुक्करल ग्रंथ को तमिल बाइबिल के नाम से जाना जाता है।
- मणिमेखलै में कापालिक शैव संन्यासियों की चर्चा है।
- **तोलकाप्पियम**- में आठ प्रकार के विवाहों का उल्लेख है जो धर्म शास्त्रों में व्यवस्थित है।
- नडुमान अंजी (चेर) ने दक्षिण में गन्ने की खेती की परंपरा का शुभारंभ किया।

## संगम जातियाँ

**एनाडि**-सेनानायक को दी जाने वाली उपाधि।

**वल्लाल**-धनी किसान-चोल एवं पांड्य राज्य में इनकी नियुक्ति सैनिक एवं असैनिक पद पर की जाती थी।

**अरसर**-शासकवर्ग।

**कडैसियर**-निचले वर्ण के खेत मजदूर होते थे।

**अटियोर/विनैवल्लार**- खेत मजदूर होते थे।

| भौगोलिक क्षेत्र | आर्थिक गतिविधि | जाति और समुदाय |
|---|---|---|
| कुरिंजी (पर्वत) | आखेट एवं संग्रहण | कुरवर/बेंतर |
| मुलै (जंगल) | पशुपालन, झुम की खेती | चरवाहा (आमर), एठैयर |
| पलै (निर्जन स्थल) | आखेट/डकैती | एनियर/मलवर |
| मरुदम (कृषियोग्य भूमि) | कृषि | उषवर/वेल्लालर |
| नेयतल (समुद्रतट) | मछली पकड़ना मोती निकालना, नमक बनाना | मछुआरे (परतवर) |

## गुप्त साम्राज्य

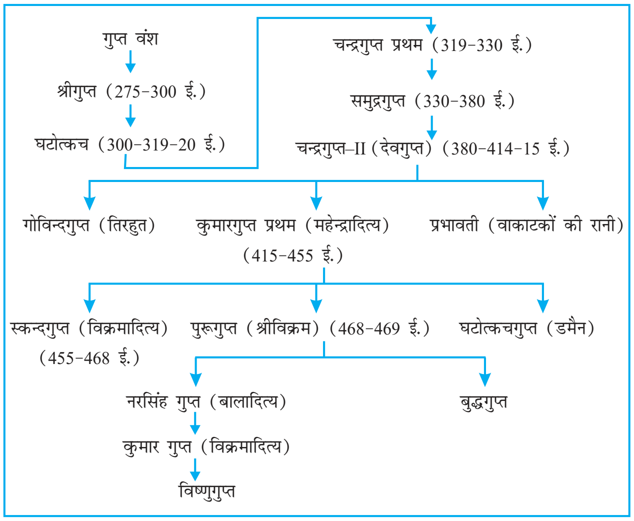


- गुप्त साम्राज्य का उदय तीसरी सदी के अन्त में, प्रयाग के निकट कौशाम्बी में हुआ।
- इस वंश का संस्थापक श्रीगुप्त था।
- गुप्त वंश का वास्तविक संस्थापक चन्द्रगुप्त प्रथम को (319-330 ई. तक) माना जाता है।
- चन्द्रगुप्त प्रथम ने उस समय के प्रसिद्ध लिच्छवि कुल की कुमारदेवी से विवाह किया था।

### गुप्त शासकों की उपाधियाँ

| | |
|---|---|
| श्रीगुप्त | – आदिराज, महाराज |
| घटोत्कच | – महाराज |
| चन्द्रगुप्त-I | – महाराजाधिराज |
| समुद्रगुप्त | – पराक्रमांक |
| चन्द्रगुप्त-II | – विक्रमादित्य, विक्रमांक |
| कुमारगुप्त | – महेन्द्रादित्य, शक्रादित्य |
| स्कन्दगुप्त | – क्रमादित्य |

- 319-320 ई. में चन्द्रगुप्त प्रथम ने गुप्त संवत् चलाया।
- सर्वप्रथम चन्द्रगुप्त प्रथम ने महाराजाधिराज की उपाधि धारण की।
- समुद्रगुप्त को अपना उत्तराधिकारी बनाने के बाद चन्द्रगुप्त ने संन्यास ग्रहण कर लिया।
- अनेक विद्वान समुद्रगुप्त की तिथि 335-380 ई. मानते हैं।
- समुद्रगुप्त 330 ई. में राजगद्दी पर बैठा।
- अनेक विद्वान समुद्रगुप्त की तिथि 335-380 ई. मानते हैं।
- समुद्रगुप्त आक्रमणकारी एवं साम्राज्यवादी शासक था।
- समुद्रगुप्त का दरबारी कवि हरिषेण था।
- इलाहाबाद में स्थित प्रयाग प्रशस्ति की रचना हरिषेण ने की थी।
- प्रयाग प्रशस्ति से समुद्रगुप्त के विषय में जानकारी मिलती है कि उसने अश्वमेध यज्ञ किया, धरणिबन्ध (पृथ्वी को बाँधना) अपना लक्ष्य बनाया।

### समुद्रगुप्त के पदाधिकारी

| | |
|---|---|
| सन्धिविग्रहक | – संधि एवं युद्ध का मंत्री |
| कुमारामात्य | – गुप्त साम्राज्य के सबसे बड़ा अधिकारी |
| खाद्यत्याकिका | – राजकीय भोजनालय का अध्यक्ष |
| महादण्डनायक | – न्यायाधीश |

- समुद्रगुप्त ने गरुड़, व्याघ्रहन्ता, धनुर्धर, परशु, अश्वमेध, एवं वीणाधारी 6 प्रकार की स्वर्ण मुद्रायें जारी करवाई।
- समुद्रगुप्त ने उत्तर भारत (आर्यावर्त) के नौ शासकों को पराजित किया।
- विन्सेंट स्मिथ ने समुद्रगुप्त को भारत का नेपोलियन कहा था।

### गुप्तशासक एवं अभिलेख

| | |
|---|---|
| समुद्रगुप्त | – प्रयाग प्रशस्ति अभिलेख |
| कुमारगुप्त | – बिलसड स्तम्भ लेख |
| स्कन्दगुप्त | – भितरी स्तम्भलेख |

- समुद्रगुप्त विजेता के साथ-साथ कवि, संगीतज्ञ तथा विद्या का संरक्षक था।
- उसके सिक्कों पर उसे वीणा बजाते हुए चित्रित किया गया है तथा कविराज की उपाधि प्रदान की गईहै।
- श्रीलंका के शासक मेघवर्मन ने समुद्रगुप्त से गया में एक बौद्ध मन्दिर बनाने की अनुमति मांगी थी।
- समुद्रगुप्त के बाद राजगद्दी पर चन्द्रगुप्त द्वितीय (380-415 ई.) बैठा।
- शकों को पराजित करने की स्मृति में चन्द्रगुप्त द्वितीय ने विशेष चाँदी के सिक्के जारी किये तथा शाकारि उपाधि धारण किये।
- चन्द्रगुप्त द्वितीय ने अपनी पुत्री प्रभावती गुप्त का विवाह वाकाटक नरेश रुद्रसेन से किया।
- रुद्रसेन की मृत्यु के बाद चन्द्रगुप्त द्वितीय ने अपनी दूसरी राजधानी उज्जैन में बनाई।
- चन्द्रगुप्त द्वितीय का अन्य नाम देवगुप्त, देवराज, देवश्री तथा उपाधियाँ विक्रमांक, विक्रमादित्य, परमभागवत थी।
- चन्द्रगुप्त द्वितीय के शासन काल में चीनी यात्री फाह्यान भारत आया था।

### चन्द्रगुप्त-II के नौ रत्न

| | |
|---|---|
| 1. कालिदास | 2. अमर सिंह |
| 3. शंकु | 4. धन्वन्तरि |
| 5. क्षपणक | 6. वेताल भट्ट |
| 7. वररुचि | 8. घटकर्पर |
| 9. वराहमिहिर | |

- चन्द्रगुप्त द्वितीय का सन्धिविग्रहिक वीरसेन शैव था।
- चन्द्रगुप्त द्वितीय के बाद कुमारगुप्त महेन्द्रादित्य (415-455 ई.) राजगद्दी पर बैठा।
- कुमारगुप्त की 623 मुद्रायें बयाना-मृद्भाण्ड से मिली हैं।
- कुमारगुप्त की मयूर मुद्रा विशेष शैली कीथी।
- कुमार गुप्त के सिक्कों से पता चलता है कि उसने अश्वमेध यज्ञ किया था।
- कुमार गुप्त ने श्री महेन्द्र, महेन्द्रादित्य तथा अश्वमेध महेन्द्र की उपाधियाँ धारण की।

### चन्द्रगुप्त द्वितीय के पदाधिकारी

| | |
|---|---|
| उपरिक | – प्रांत का राज्यपाल |
| कुमारामात्य | – प्रशासनिक अधिकारी |
| दण्डपाशिक | – पुलिस विभाग का प्रधान |
| महादण्डनायक | – मुख्य न्यायाधीश |
| बलाधिकृत | – सैन्य कोष का अधिकारी |
| महाप्रतिहार | – मुख्य दौवारिक |